CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

* ॐ श्रीपरमात्मने नमः *

कल्याण

मूल्य १० रुपये

प्राग्ज्योतिषपुरमें भगवान् श्रीकृष्ण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

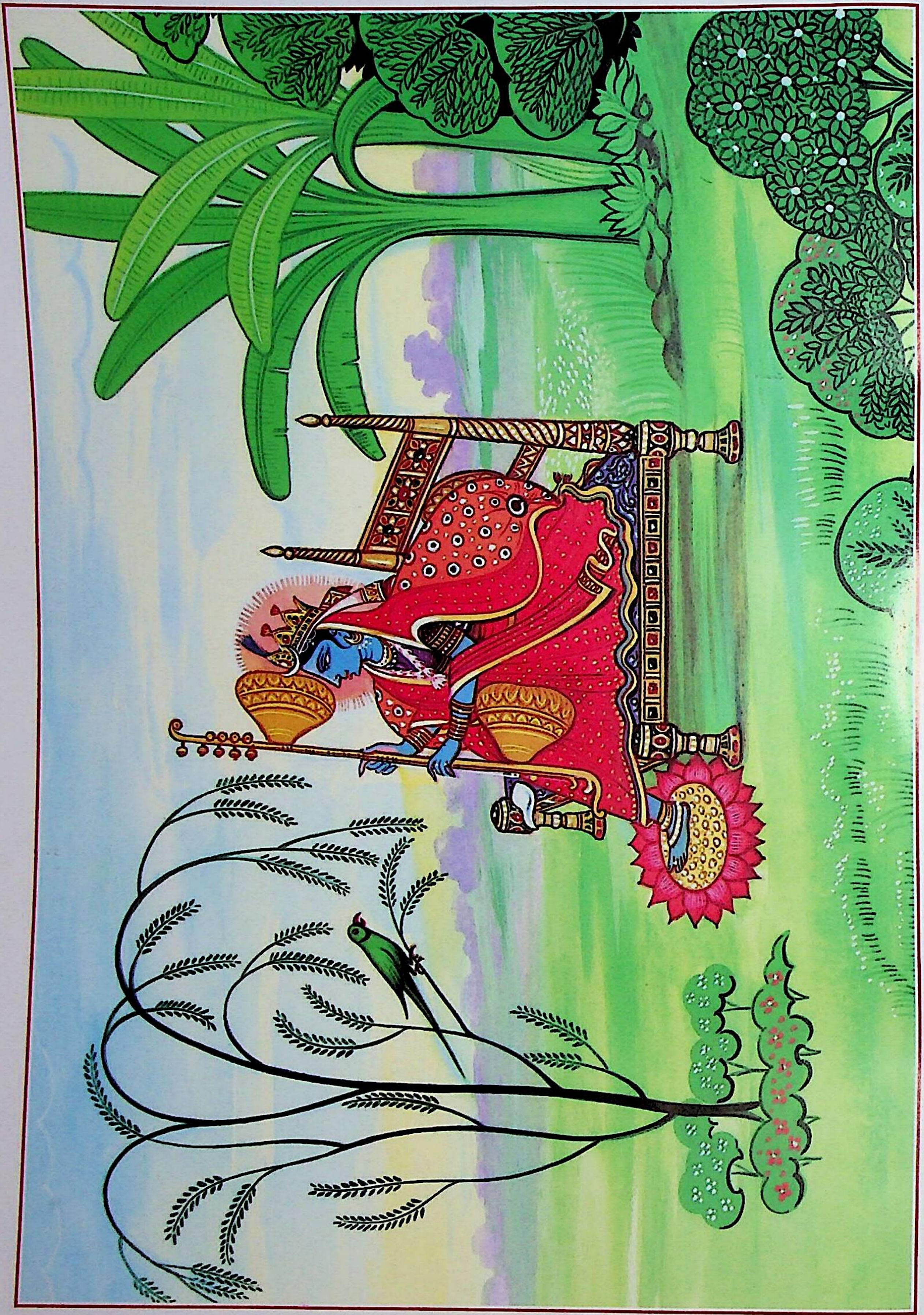

देवी मातंगी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

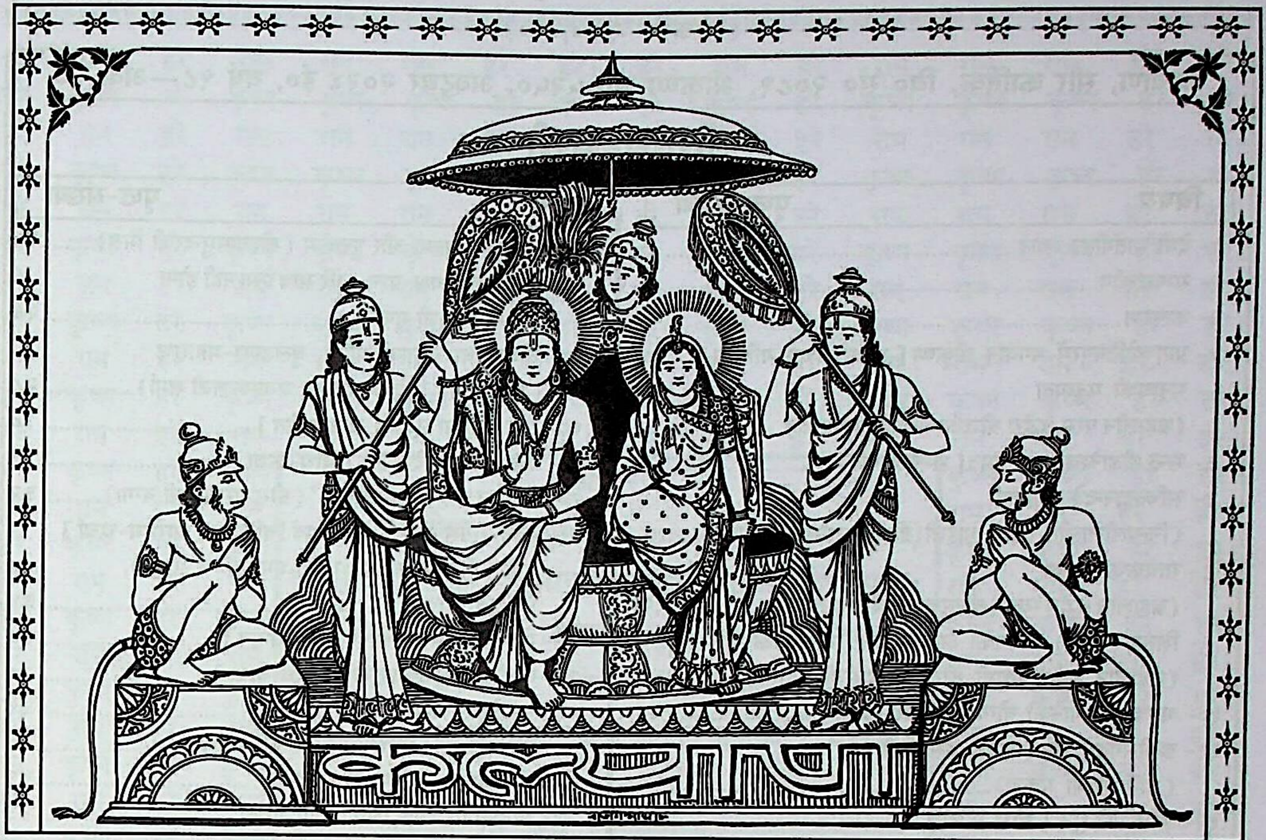

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥

वर्ष ९८ | गोरखपुर, सौर कार्तिक, वि० सं० २०८१, श्रीकृष्ण-सं० ५२५०, अक्टूबर २०२४ ई० | संख्या १०

पूर्ण संख्या ११७५

देवी मातंगीका ध्यान

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

मैं मातंगी देवीका ध्यान करता हूँ। वे रत्नमय सिंहासनपर बैठकर पढ़ते हुए तोतेका मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीरका वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमलपर रखे हुए हैं और मस्तकपर अर्धचन्द्र धारण करती हैं तथा कह्लार पुष्पोंकी माला धारण किये वीणा बजाती हैं। उनके अंगमें कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंगकी साड़ी पहने हाथमें शंखमय पात्र लिये हुए हैं। उनके वदनपर मधुका हलका-हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाटमें बेंदी शोभा दे रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

(संस्करण १,८०,०००)

कल्याण, सौर कार्तिक, वि० सं० २०८१, श्रीकृष्ण-सं० ५२५०, अक्टूबर २०२४ ई०, वर्ष ९८—अंक १०

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- देवी मातंगीका ध्यान	३
२- सम्पादकीय	५
३- कल्याण	६
४- प्रागुज्योतिषपुरमें भगवान् श्रीकृष्ण [आवरणचित्र-परिचय]	७
५- मनुष्यकी मनुष्यता (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)	९
६- सन्त श्रीज्ञानेश्वर-वचनामृत [सन्त-वाणी]	११
७- सच्चिदानन्दके ज्योतिषी (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)	१४
८- साधकका कर्तव्य (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)	१५
९- शिखा (चोटी)-धारणकी आवश्यकता [साधकोंके प्रति—] (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)	१६
१०- भगवान्‌को पानेकी योग्यता [बोध-कथा]	१७
११- छत्तीसगढ़में राम [लोक-संस्कृतिमें राम] (श्रीगिरीशजी पंकज)	१८
१२- सीखनेकी धुन [बोध-कथा]	२०
१३- कार्तिकमासकी महिमा (डॉ० श्रीउपेन्द्रविनायकजी सहस्रबुद्धे)	२१
१४- सबसे अच्छेकी तलाश [बोध-कथा]	२३
१५- आत्मा-परमात्मा और पुनर्जन्म (श्रीश्यामसुन्दरजी मिश्र)	२४
१६- एक शाश्वत यक्ष-प्रश्न—मेरे साथ ऐसा नहीं होगा (श्रीसीतारामजी गुप्ता)	२६
१७- श्रीशारंगधर बालाजी मन्दिर, बुलडाणा-महाराष्ट्र [तीर्थ-दर्शन] (डॉ० श्रीसूरज जयप्रकाशजी शर्मा)	२८
१८- सन्त विसोबा सराफ [सन्त-चरित]	३०
१९- एक युवककी देशभक्ति [बोध-कथा]	३१
२०- 'कस न होइ मगु मंगलदाता' (श्रीसुभासचन्द्रजी बग्गा)	३२
२१- हृदय-रोगसे बचनेके उपाय एवं चिकित्सा [आरोग्य-चर्चा] (डॉ० श्रीओमप्रकाशजी गुप्ता, एम०डी० (आयु०), पी-एच०डी०)	३४
२२- गोरक्षा ही प्रपंच-रक्षा है- [गो-चिन्तन]	३७
२३- वाणीसे व्यक्तित्वका बोध [बोध-कथा]	३८
२४- सुभाषित-त्रिवेणी	३९
२५- व्रतोत्सव-पर्व [मार्गशीर्षमासके व्रत-पर्व]	४०
२६- श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना	४१
२७- भगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना	४३
२८- कृपानुभूति	४५
२९- पढ़ो, समझो और करो	४७
३०- मनन करने योग्य	५०

चित्र-सूची

१- प्रागुज्योतिषपुरमें भगवान् श्रीकृष्ण	(रंगीन)	आवरण-पृष्ठ
२- देवी मातंगीका ध्यान	(")	मुख-पृष्ठ
३- प्रागुज्योतिषपुरमें श्रीकृष्ण	(इकरंगा)	७
४- श्रीशारंगधर बालाजी, बुलडाणा-महाराष्ट्र	(")	२८
५- हैहय-नरेश और मुनिवर अरिष्टनेमिका संवाद	(")	५०

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥
जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥
जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

एकवर्षीय शुल्क ₹500 सभी अंक रजिस्ट्रीसे / एकवर्षीय शुल्क ₹300 मासिक अंक साधारण डाकसे
पञ्चवर्षीय शुल्क ₹2500 सभी अंक रजिस्ट्रीसे / पञ्चवर्षीय शुल्क ₹1500 मासिक अंक साधारण डाकसे
विदेशमें Air Mail शुल्क वार्षिक US$ 50 (₹4,000) / Cheque Collection Charges 6 $ Extra

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार
सम्पादक—प्रेमप्रकाश लक्कड़, सहसम्पादक—कृष्णकुमार खेमका
केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website : gitapress.org	e-mail : kalyan@gitapress.org	✆ 09235400242 / 244	WhatsApp : 09235400242
पुस्तक-बिक्रीविभाग :	e-mail : booksales@gitapress.org	✆ 09235400242 / 244	WhatsApp : 09235400244

सदस्यता-शुल्क —व्यवस्थापक—'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस—273005, गोरखपुर को भेजें।
Online सदस्यता हेतु gitapress.org के Kalyan पर click करके Subscribe option पर click करें।
'कल्याण' के मासिक अङ्क www.gitapress.org के E-Books Option पर निःशुल्क पढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

॥ श्रीहरिः ॥

आत्मबोध (Knowing oneself, who am I) इत्यादिकी चर्चा वर्तमानमें साधकजनोंके बीच प्रायः सुनी जाती है। इस विषयमें बृहदारण्यकोपनिषद्की यह श्रुति बड़ा स्पष्ट संकेत देती है—

····येनेदꣳ सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात्? विज्ञातारम् अरे केन विजानीयात्? इति (बृह० २।४।१४)

····एतावत अरे खलु अमृततत्वम्।

सरल भाषामें ऋषि कहते हैं कि जिससे सब कुछ जाना जाता है, उस जाननेवाले तत्त्वको भला किसके द्वारा जाना जा सकता है?

वह तो स्वयंसिद्ध है। बस, इस अमृतको 'स्वयं'-में स्वयंके द्वारा पहचाननेभरकी बात है।

—सम्पादक

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कल्याण

याद रखो—भगवान्, सत्यतत्त्व एक ही हैं। वे ही ब्रह्म हैं, वे ही परमात्मा हैं। वे ही निराकार-निर्विशेष-निर्गुण, वे ही साकार-सविशेष-सगुण हैं। उनके अनेक नाम हैं, अनेक रूप हैं, 'नाम-रूपरहित' भी एक नाम-रूप ही है। वे सभीमें एक हैं, नित्य परिपूर्ण हैं। विश्वाकार, विश्वाधार, विश्वातीत वे ही हैं।

याद रखो—वे एक ही परम तत्त्व परमात्मा विभिन्न साधकोंके द्वारा विभिन्न नाम-रूपोंसे उपस्थित होकर उन्हें अपने स्वरूपका दर्शन करानेके लिये विभिन्न रूपोंमें अभिव्यक्त हो रहे हैं। वे ही भगवान् श्रीनारायण, श्रीशंकर, श्रीदुर्गा, श्रीसूर्य, श्रीगणेश और इन पाँचोंके विभिन्न अनन्त स्वरूप हैं; इनके अतिरिक्त अन्यान्य धर्मावलम्बियोंके जो विभिन्न इष्ट हैं, वे भी वे ही हैं। यहाँतक कि नास्तिकोंका 'नहीं है' भी वे ही हैं।

याद रखो—साध्य तत्त्वमें किसी प्रकारका कभी भेद न होनेपर भी साधनके भेदसे उनमें भेद है। साध्यका स्वरूप तथा साधन-प्रणाली रुचि, भाव, अधिकारके अनुसार विभिन्न प्रकारकी हुआ करती है और होनी चाहिये। सारी साधन-प्रणालियोंको एक करनेकी चेष्टा तो व्यर्थ प्रयास या पागलपन है। कोई कहे कि दक्षिणके कन्याकुमारी, उत्तरके बदरिकाश्रम, पूर्वके आसाम-प्रान्तीय शिवसागर और पश्चिमके काश्मीर—सभी जगहके लोगोंको काशी आनेके लिये शुरूसे एक ही मार्ग ग्रहण करना चाहिये, तो जैसे वह पागल है, वैसे ही सब साधन-प्रणालियोंको—साधन-मार्गोंको एक करनेकी कहनेवाला भी समझदार नहीं है।

याद रखो—सौम्य प्रकृतिवाला पुरुष कभी कराली काली, छिन्नमस्ता, भगवान् नृसिंह, प्रलयंकर शंकर आदिकी उपासना नहीं कर सकता और क्रूर प्रकृतिवाला व्यक्ति मुरलीमनोहर श्यामसुन्दर, हंसवाहना सरस्वती, शान्त सदाशिवकी उपासना नहीं कर सकता। उपासकोंके प्रकृति और रुचिभेदके अनुसार ही उपासनाका स्वरूप होता है। परमात्मा एक ही हैं, इसीसे किसी भी नाम-रूपसे सर्वशक्तिमान्, सर्वोपरि, सर्वरूप, सर्वातीत सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्माकी उपासना करनेवाला एक ही सत्यतत्त्वकी उपासना करता है।

याद रखो—जो मनुष्य अपनी प्रकृति तथा रुचिके विरुद्ध दूसरे इष्ट या साधन-प्रणालीको स्वीकार करता है, वह सफल नहीं होता और जो लोग किसी एक साधनपथपर चलनेवाले व्यक्तिको उस पथसे हटाकर उसकी पद्धतिके विपरीत दूसरे पथपर घसीटनेका प्रयास करते हैं, वे उसका अहित ही करते हैं। इससे वह पथभ्रष्ट हो जाता है, नये पथपर चल नहीं सकता और अकर्मण्य होकर जीवन नष्ट कर देता है। अतएव अपने-अपने पथपर चलते रहो और दूसरे-दूसरे पथोंपर चलनेवालोंके लिये भी यही समझो कि ये सभी पृथक्-पृथक् मार्गोंसे हमारे ही प्रभुके धामकी ओर जा रहे हैं। न किसीसे घृणा-द्वेष करो, न किसीको नीचा समझो, न किसीको उसके सन्मार्गसे हटानेका यत्न करो और न स्वयं ही किसी दूसरे मार्गकी ओर लुभाकर अपने मार्गको छोड़ो।

याद रखो—विभिन्नतामें ही प्रभुके संसारकी शोभा है। विभिन्नता कभी मिट नहीं सकती। अपने-अपने साधनपथपर चलकर इस विभिन्नतामें नित्य एकताको देखने और सारी विभिन्नताओंके आत्मा—मूल एक परमात्माको प्राप्त करनेमें ही मानव-जीवनकी चरम और परम सफलता है। **'शिव'**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आवरणचित्र-परिचय—

प्राग्ज्योतिषपुरमें भगवान् श्रीकृष्ण

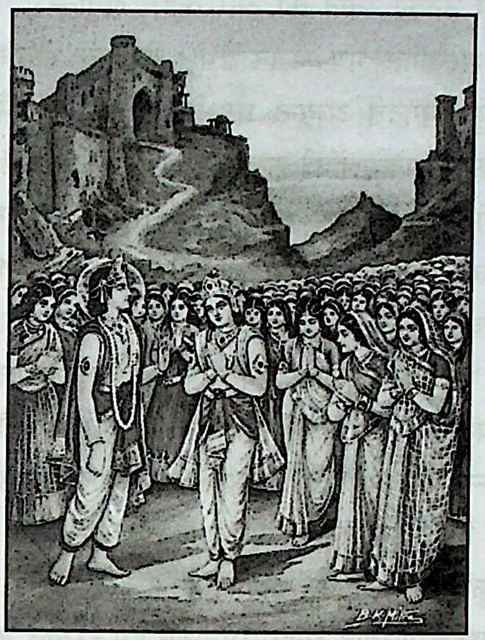

भौमासुर प्राग्ज्योतिषपुर (वर्तमान असम)-का राजा था। उसने वरुणका छत्र, माता अदितिके कुण्डल और मेरु पर्वतपर स्थित देवताओंका मणिपर्वत नामक स्थान छीन लिया था। तब देवराज इन्द्र द्वारकामें आये और उसकी एक-एक करतूत उन्होंने भगवान् श्रीकृष्णको सुनायी। अब भगवान् श्रीकृष्ण अपनी प्रिय पत्नी सत्यभामाके साथ गरुड़पर सवार हुए और भौमासुरकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुरमें गये। प्राग्ज्योतिषपुरमें प्रवेश करना बहुत कठिन था। पहले तो उसके चारों ओर पहाड़ोंकी किलेबन्दी थी, उसके बाद शस्त्रोंका घेरा लगाया हुआ था। फिर जलसे भरी खाईं थी, उसके बाद आग या बिजलीकी चहारदीवारी थी और उसके भीतर वायु (गैस) बन्द करके रखा गया था। इसके भी भीतर मुर दैत्यने नगरके चारों ओर अपने दस हजार घोर एवं सुदृढ़ फन्दे (जाल) बिछा रखे थे। भगवान् श्रीकृष्णने अपनी गदाकी चोटसे पहाड़ोंको तोड़-फोड़ डाला और शस्त्रोंकी मोरचेबन्दीको बाणोंसे छिन्न-भिन्न कर दिया। चक्रके द्वारा अग्नि, जल और वायुकी चहारदीवारियोंको तहस-नहस कर दिया और मुर दैत्यके फन्दोंको तलवारसे काट-कूटकर अलग रख दिया। नगरके परकोटेको उन्होंने अपनी भारी गदासे ध्वंस कर डाला।

भगवान्‌के पांचजन्य शंखकी ध्वनि प्रलयकालीन बिजलीकी कड़कके समान महाभयंकर थी। उसे सुनकर मुर दैत्यकी नींद टूटी और वह बाहर निकल आया। उसके पाँच सिर थे और अबतक वह जलके भीतर सो रहा था। वह दैत्य प्रलयकालीन सूर्य और अग्निके समान प्रचण्ड तेजस्वी था। उसने त्रिशूल उठाया और बड़े वेगसे घुमाकर गरुड़जीपर चलाया। भगवान् श्रीकृष्णने देखा कि मुर दैत्यका त्रिशूल गरुड़की ओर बड़े वेगसे आ रहा है। तब अपना हस्तकौशल दिखाकर फुर्तीसे उन्होंने दो बाण मारे, जिनसे वह त्रिशूल कटकर तीन टुकड़े हो गया। इसके साथ ही मुर दैत्यके मुखोंमें भी भगवान्‌ने बहुत-से बाण मारे। इससे वह दैत्य अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा और उसने भगवान्‌पर अपनी गदा चलायी। परंतु भगवान् श्रीकृष्णने अपनी गदाके प्रहारसे मुर दैत्यकी गदाको अपने पास पहुँचनेके पहले ही चूर-चूर कर दिया। अब वह अस्त्रहीन हो जानेके कारण अपनी भुजाएँ फैलाकर श्रीकृष्णकी ओर दौड़ा, तब उन्होंने खेल-खेलमें ही चक्रसे उसके पाँचों सिर उतार लिये। सिर कटते ही मुर दैत्यके प्राण-पखेरू उड़ गये और वह ठीक वैसे ही जलमें गिर पड़ा, जैसे इन्द्रके वज्रसे शिखर कट जानेपर कोई पर्वत समुद्रमें गिर पड़ा हो। मुर दैत्यके सात पुत्र थे—ताम्र, अन्तरिक्ष, श्रवण, विभावसु, वसु, नभस्वान् और अरुण। ये अपने पिताकी मृत्युसे अत्यन्त शोकाकुल हो उठे और फिर बदला लेनेके लिये क्रोधसे भरकर शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हो गये तथा पीठ नामक दैत्यको अपना सेनापति बनाकर भौमासुरके आदेशसे श्रीकृष्णपर चढ़ आये। वे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहाँ आकर बड़े क्रोधसे भगवान् श्रीकृष्णपर बाण, खड्ग, गदा, शक्ति, ऋष्टि और त्रिशूल आदि प्रचण्ड शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे। भगवान्ने अपने बाणोंसे उनके कोटि-कोटि शस्त्रास्त्र तिल-तिल करके काट गिराये। भगवान्के शस्त्रप्रहारसे सेनापति पीठ और उसके साथी दैत्योंके सिर, जाँघें, भुजा, पैर और कवच कट गये और उन सभीको भगवान्ने यमराजके घर पहुँचा दिया। जब भौमासुरने देखा कि भगवान् श्रीकृष्णके चक्र और बाणोंसे हमारी सेना और सेनापतियोंका संहार हो गया, तब उसने भगवान्के ऊपर शतघ्नी नामकी शक्ति चलायी और उसके सब सैनिकोंने भी एक ही साथ उनपर अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र छोड़े। अब भगवान् श्रीकृष्ण भी चित्र-विचित्र पंखवाले तीखे-तीखे बाण चलाने लगे। इससे उसी समय भौमासुरके सैनिकोंकी भुजाएँ, जाँघें, गर्दन और धड़ कट-कटकर गिरने लगे; हाथी और घोड़े भी मरने लगे।

अन्तमें अकेला भौमासुर ही लड़ता रहा। जब भौमासुरने देखा कि मेरी एक भी चाल नहीं चलती, सारे उद्योग विफल होते जा रहे हैं, तब उसने श्रीकृष्णको मार डालनेके लिये एक त्रिशूल उठाया, परंतु उसे अभी वह छोड़ भी न पाया था कि भगवान् श्रीकृष्णने छुरेके समान तीखी धारवाले चक्रसे हाथीपर बैठे हुए भौमासुरका सिर काट डाला। उसका जगमगाता हुआ सिर कुण्डल और सुन्दर किरीटके सहित पृथ्वीपर गिर पड़ा। उसे देखकर भौमासुरके सगे-सम्बन्धी 'हाय-हाय' पुकार उठे, ऋषिलोग 'साधु-साधु' कहने लगे और देवतालोग भगवान्पर पुष्पोंकी वर्षा करते हुए उनकी स्तुति करने लगे।

भौमासुर पृथ्वीका पुत्र था। अब पृथ्वी भगवान्के पास आयी। उसने भगवान् श्रीकृष्णके गलेमें वैजयन्तीके साथ वनमाला पहना दी और अदिति माताके जगमगाते हुए कुण्डल, जो तपाये हुए सोनेके एवं रत्नजटित थे, भगवान्को दे दिये तथा वरुणका छत्र और साथ ही एक महामणि भी उनको दी। तथा हाथ जोड़कर भक्तिभावभरे हृदयसे उनकी स्तुति की और कहने लगी—

शरणागत-भय-भंजन प्रभो! मेरे पुत्र भौमासुरका यह पुत्र भगदत्त अत्यन्त भयभीत हो रहा है। मैं इसे आपके चरणकमलोंकी शरणमें ले आयी हूँ। प्रभो! आप इसकी रक्षा कीजिये और इसके सिरपर अपना वह करकमल रखिये, जो सारे जगत्के समस्त पाप-तापोंको नष्ट करनेवाला है।

पृथ्वीके इस प्रकार कहनेपर भगवान्ने भगदत्तको अभयदान दिया और भौमासुरके समस्त सम्पत्तियोंसे सम्पन्न महलमें प्रवेश किया। वहाँ जाकर भगवान्ने देखा कि भौमासुरने बलपूर्वक राजाओंसे सोलह हजार राजकुमारियाँ छीनकर अपने यहाँ रख छोड़ी थीं। जब उन राजकुमारियोंने अन्तःपुरमें पधारे हुए नरश्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णको देखा, तब वे मोहित हो गयीं और उन्होंने उनकी अहैतुकी कृपा तथा अपना सौभाग्य समझकर मन-ही-मन भगवान्को अपने परम प्रियतम पतिके रूपमें वरण कर लिया। उन राजकुमारियोंमेंसे प्रत्येकने अलग-अलग अपने मनमें यही निश्चय किया कि 'ये श्रीकृष्ण ही मेरे पति हों और विधाता मेरी इस अभिलाषाको पूर्ण करें।' इस प्रकार उन्होंने प्रेम-भावसे अपना हृदय भगवान्के प्रति निछावर कर दिया। तब भगवान् श्रीकृष्णने उन राजकुमारियोंको सुन्दर-सुन्दर निर्मल वस्त्राभूषण पहनाकर पालकियोंसे द्वारका भेज दिया और उनके साथ ही बहुत-से खजाने, रथ, घोड़े तथा अतुल सम्पत्ति भी भेजी। ऐरावत वंशमें उत्पन्न हुए अत्यन्त वेगवान् चार-चार दाँतोंवाले सफेद रंगके चौंसठ हाथी भी भगवान्ने वहाँसे द्वारका भेजे।

तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्णने द्वारका आकर एक ही मुहूर्तमें अलग-अलग भवनोंमें अलग-अलग रूप धारण करके एक ही साथ सब राजकुमारियोंका शास्त्रोक्त विधिसे पाणिग्रहण किया। [श्रीमद्भागवत]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनुष्यकी मनुष्यता

(ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

मानवताका अभिप्राय है मनुष्यकी मनुष्यता। सर्वप्रथम इसपर विचार करना चाहिये कि मनुष्यकी उत्पत्ति किससे हुई। शास्त्रोंको देखनेसे मालूम होता है कि मनुसे ही मनुष्यकी उत्पत्ति हुई और इस उत्पत्तिका मूल स्थान यह भारतवर्ष ही है। यहींसे सारी पृथ्वीपर मानव-सृष्टिका विस्तार हुआ। मानव-सृष्टिकी उत्पत्तिका मूल स्थान भारतवर्ष होनेके कारण वही मानवताका मूल उद्गमस्थान है। अतः श्रीमनुजीका आदेश है कि सारी पृथ्वीके लोग यहींसे शिक्षा लिया करें—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

(मनु० २। २०)

'इस देश (भारतवर्ष)-में उत्पन्न हुए ब्राह्मणके समीप पृथ्वीके समस्त मानव अपने-अपने चरित्रकी शिक्षा ग्रहण करें।'

इसलिये हमलोगोंको मनुष्यताके पूर्ण आदर्श बननेके लिये मनुप्रोक्त धर्मोंके अनुसार ही अपना जीवन बनाना चाहिये; क्योंकि जितने भी स्मृतियोंके रचयिता महर्षि हुए हैं, उनमें मनु प्रधान हैं। अतः मनुने जो कुछ कहा है, वही मनुष्यका धर्म है।

सृष्टिके संचालन, संरक्षण और समुत्थानके लिये श्रीमनुजीने वेदोंके आधारपर चार वर्णों और चार आश्रमोंकी व्यवस्था की थी। उस व्यवस्थाके बिगड़ जानेके कारण ही आज हमारा पतन हो रहा है। अतः उसकी रक्षाके लिये हमें मानवधर्मरूप भारतीय संस्कृतिको अपनाना चाहिये। भाषा, वेष, खान-पान और चरित्रसे ही मनुष्यके हृदयपर भले-बुरे संस्कार जमते हैं। संस्कार ही संस्कृति है। अतः इन चारोंके समूहको ही संस्कृति कहा जाता है।

सृष्टिके आदिमें ब्रह्माजीकी उत्पत्ति हुई और ब्रह्माजीसे वेद प्रकट हुए। वेदोंकी भाषा संस्कृत है। सृष्टिके आदिमें ब्रह्मादि देवताओंसे उत्पन्न होनेके कारण संस्कृत-भाषाका नाम 'देवभाषा' और संस्कृत-लिपिका नाम 'देवनागरी' हुआ। संस्कृत भाषामें अनेक विशेषताएँ हैं। संस्कृतमें साधारणतया धातुओंके १८० रूप बनते हैं। इतने रूप अंग्रेजी, फारसी आदि अन्य किसी भाषामें नहीं बनते। संस्कृतमें एकवचन, द्विवचन, बहुवचन—ये तीन वचन होते हैं, जहाँ कि अन्य भाषाओंमें एकवचन और बहुवचन ही होते हैं, द्विवचन नहीं। संस्कृतमें पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग—ये तीन लिंग होते हैं, जब कि अन्य भाषाओंमें लिंगोंके कहीं एक और कहीं दो ही भेद माने गये हैं। सारांश, अन्य भाषाओंमें द्विवचन और नपुंसकलिंगका अलग भेद नहीं माना गया है। इसके सिवा भाषाका सौन्दर्य, लालित्य, व्याकरणकी पूर्णता और अलौकिकता आदि अनेक गुण इस संस्कृत-भाषामें हैं, जो अन्यत्र नहीं पाये जाते। इसी देवभाषाका रूपान्तर हिन्दी-भाषा है, जो आज भारतकी प्रधान भाषा है। हमारे धर्मके जितने भी मौलिक ग्रन्थ हैं, वे संस्कृतमें ही हैं। उनमेंसे कितने ही ग्रन्थोंका हिन्दीमें भी अनुवाद हो चुका है। आयुर्वेद और ज्यौतिष आदिके ग्रन्थ भी संस्कृतमें ही हैं। इसलिये संस्कृत और हिन्दी-भाषा हमारे देशकी प्रधान सम्पत्ति हैं। अतः इनकी रक्षा करनेकी विशेष चेष्टा करनी चाहिये।

हमारे देशका वेष शास्त्रोंमें यही पाया जाता है कि एक अधोवस्त्र और एक उत्तरीयवस्त्र धारण करना। ये दोनों वस्त्र बिना सिलाये ही काममें लाये जाते रहे हैं। स्त्रीके लिये अधोवस्त्रसे साड़ी और उत्तरीयवस्त्रसे ओढ़नी समझनी चाहिये। एवं पुरुषके लिये अधोवस्त्रसे धोती और उत्तरीयवस्त्रसे चादर समझनी चाहिये। अभीतक विवाहके समय भी कन्याका पिता वर और कन्याके लिये उपर्युक्त चार वस्त्र ही प्रदान करता है। इन्हीं वस्त्रोंको पहनकर विवाह करनेकी शास्त्रोक्त पद्धति है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत: यही आदर्श वेष है।

इसी प्रकार हमारे देशका खान-पान पहले कन्द-मूल, फल, शाक, अन्न और दूध, दही, घी ही रहा। ये ही सात्त्विक पदार्थ हैं। इन्हींकी गीतामें प्रशंसा की गयी है। भगवान्‌ने कहा है—

आयु:सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धना:।
रस्या: स्निग्धा: स्थिरा हृद्या आहारा: सात्त्विकप्रिया:॥

'आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीतिको बढ़ानेवाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहनेवाले तथा स्वभावसे ही मनको प्रिय—ऐसे आहार अर्थात् भोजन करनेके पदार्थ सात्त्विक पुरुषको प्रिय होते हैं।'

इस प्रकारके सात्त्विक पदार्थोंके भोजनसे बुद्धि सात्त्विक होती है, अन्त:करण शुद्ध होता है और अध्यात्मविषयकी स्मृति प्राप्त होती है, जिससे सम्पूर्ण बन्धनोंसे छुटकारा हो जाता है। छान्दोग्य-उपनिषद्‌के सातवें अध्यायके २६वें खण्डके दूसरे मन्त्रमें कहा गया है—

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि:, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति:, स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्ष:।

'आहार-शुद्धि होनेपर अन्त:करणकी शुद्धि होती है, अन्त:करणकी शुद्धि होनेपर निश्चल स्मृति होती है एवं स्मृतिकी प्राप्ति होनेपर सम्पूर्ण ग्रन्थियोंकी निवृत्ति हो जाती है।'

अत: हमारा खान-पान सात्त्विक होना चाहिये, राजस और तामस नहीं। तामस भोजन तो राक्षसों और असुरोंका होता है, इसलिये वह त्याज्य है। तामस पदार्थोंमें भी मांस, मछली, अण्डा आदिका भोजन तो बिलकुल ही अमानुषिक कार्य है। मनुष्यका तो कर्तव्य है, सब जीवोंका हित करना, न कि जीवोंको राक्षसोंकी भाँति मारकर खा डालना। विचार करना चाहिये कि वे जीव निर्बल और बुद्धिहीन हैं, हमलोग बलवान् और बुद्धिमान् हैं। क्या हमारा यह कर्तव्य है कि हम निर्बल और बुद्धिहीन प्राणियोंको खा जायँ? बल्कि उचित तो यह है कि इसीमें मनुष्यता है कि हम निर्बल प्राणियोंकी सब प्रकारसे सहायता करें। इस प्रकार सब प्राणियोंका हित करनेवाले मनुष्य ही उन्नत होकर परमात्माको प्राप्त होते हैं। भगवान्‌ने कहा है—

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता:॥

(गीता १२। ४ का उत्तरार्ध)

'वे सम्पूर्ण भूतोंके हितमें लगे हुए मनुष्य मुझको ही प्राप्त होते हैं।'

श्रीरामचरितमानसमें भी आया है—

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥
परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

इस प्रकार गीता-रामायण आदि शास्त्रोंसे भी यही बात सिद्ध होती है कि मनुष्यको प्राणिमात्रका हित करना चाहिये। दूसरी बात यह है कि मांस, मछली आदिको खानेवाले मांसाहारी पशुओंकी दाढ़ें और नख छुरेके समान तीक्ष्ण होते हैं; किंतु मनुष्य और बन्दरके दाँत और नख इतने सरल हैं कि वे कन्द, मूल, फल, शाक और अन्न खानेके ही योग्य हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है कि हमारा भोजन कन्द, मूल, फल, शाक और अन्न आदि ही हैं, मांस आदि नहीं। तीसरी बात यह है कि पशुओंके रक्त, मांस, चर्बी, मज्जा आदि सभी दुर्गन्धयुक्त और अपवित्र होते हैं, जो मनुष्यके छूनेके योग्य भी नहीं होते; फिर वे क्या मनुष्यके खानेके योग्य हो सकते हैं? कदापि नहीं। चौथी बात यह है कि इनको खानेसे बुद्धि और विवेक नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं तथा इन्हें प्राप्त करनेमें प्राणियोंकी हिंसा होती है; अत: ये अत्यन्त तामस हैं। इसी प्रकार मदिरा भी अत्यन्त तामस पदार्थ है। इसके पानसे नशा होकर बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जिससे मनुष्यका पतन होता है। अत: मांस, मछली, अण्डा, मदिरा—ये सभी मनुष्यके लिये अभक्ष्य तथा अपेय हैं। इसलिये अपना कल्याण चाहनेवाले मनुष्यको इनका सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये, यहाँतक कि इन्हें छूना भी नहीं चाहिये, इसीमें उसकी मनुष्यता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्त-वाणी—

सन्त श्रीज्ञानेश्वर-वचनामृत

❀ जो एक क्षण भी परमात्माके द्वारपर निवास करता है, वह चारों प्रकारकी मुक्तिको प्राप्त होता है। मुक्तिके चार प्रकार हैं—सालोक्य (ईश्वरके राज्यमें वास करना), सामीप्य (ईश्वरके सान्निध्यमें वास करना), सारूप्य (ईश्वरकी समानताके रूपमें वास करना) और अन्तमें सायुज्य (ईश्वरके साथ एक होनेके रूपमें वास करना)। वास्तवमें ये प्रकार नहीं हैं, बल्कि आरोही क्रममें मुक्तिके चार चरण हैं, जो व्यक्तिको मुक्तिकी ओर ले जाते हैं। इसलिये हरिके नामका जप करते रहो। ऐसे पवित्र मन्त्रके गुणोंको कौन माप सकता है? संसारमें रहो, लेकिन शीघ्रतासे भगवन्नाम जपनेकी आदत विकसित करो। यह वास्तवमें वेदों और शास्त्रोंकी पुकार है और वे इस सत्यका प्रचार करनेके लिये तत्पर हैं। इस सत्यको उजागर करनेके संकेत वेदव्यासके महाकाव्य महाभारतमें स्पष्ट हैं। पाण्डवोंने श्रीकृष्णको अपने निरन्तर नामस्मरणद्वारा पूरी तरहसे मोहित कर लिया और इस तरह वे उनके घरके एक सदस्य बन गये।

❀ हरि या भगवन्नामकी महिमा चार वेदों, दर्शनकी छः प्रणालियोंमें और अठारह पुराणोंद्वारा गायी गयी है। इन सबका मनन करो और उनका सार जो परमात्माका नाम है, आत्मसात् करो, बाकी सब केवल पौराणिक कथाएँ और कहानियाँ हैं। हरि जीव और शिव दोनोंमें समान रूपसे प्रकट होते हैं, इसलिये केवल उनके नामका जप करो और अनावश्यक रूपसे मुक्तिके अन्य कठिन साधनोंमें मत पड़ो।

हरिका मन्त्र उनका निवास-स्थान है, जिसे वैकुण्ठ कहा जाता है। हरि मेरी दृष्टिमें सर्वत्र व्याप्त हैं।

❀ ब्रह्माण्ड जो तीन गुणों (सत्त्व, रज और तम)-का एक जाल है, वह सारहीन और अशाश्वत है, इसका आधार और सार सनातन आत्मा या परब्रह्म है, जो गुणोंसे अछूता है। विवेकसे ब्रह्माण्डकी प्रकृतिके बारेमें तलाश करें, जिससे आप जीवनके सर्वोच्च स्थानके रूपमें हरिके स्मरण (नामस्मरण)-तक पहुँचेंगे। वास्तवमें आकार और निराकार दोनों ही हरिके हैं। उस प्रभुकी खोज करो, ऐसा न हो कि तुम्हारा मन व्यर्थके कामोंमें भटक जाये। हरि अदृश्य और निराकार हैं, लेकिन हर चीज, चर और अचर उनसे प्रकट होती है, इसलिये उनका नाम जपते रहो। मैं हमेशा ध्यानमें भगवान् राम-कृष्णको रखता हूँ। मेरा जन्म धन्य है, क्योंकि इससे मैं अनन्त पुण्य अर्जित कर रहा हूँ।

❀ भक्तिको एक तीव्र उत्साह या भावनासे किया जाना चाहिये, तभी वह मुक्तिका मार्ग प्रशस्त करती है। अन्यथा भक्ति और मुक्तिकी सारी बातें केवल आडम्बरपूर्ण बकबक हैं। आपको प्रभुके लिये तड़पना चाहिये, तभी वे आपके सामने प्रकट होंगे। व्यर्थके परिश्रमसे स्वयंको थकने न दें। दिन-रात आप इस क्षुद्र संसारके लिये झल्लाहट कर रहे हैं, लेकिन ऐसा कभी नहीं होता कि आप हरिके प्रति समर्पित होकर उनके नामका जप आरम्भ करें। अपने सांसारिक कर्तव्योंका पालन करते रहो, लेकिन हमेशा हरिका नाम जपते रहो; यह निश्चित रूपसे सारे सांसारिक बन्धन तोड़ देगा।

❀ न तो अष्टांग योगका मार्ग और न ही विधिपूर्ण यज्ञोंका प्रदर्शन आपको पूर्णताके करीब लायेगा। वे थकाऊ परिश्रम हैं और आमतौरपर दम्भको जन्म देते हैं। भावके बिना तथा उनके लिये एक तड़पकी गरमाहटके बिना आपको उनका ज्ञान प्राप्त नहीं होगा, यह निःसन्देह जान लें। ईश्वर-प्राप्तिके अलौकिक अनुभवका स्वाद सद्गुरुकी कृपासे ही संभव हो सकता है। साधनाके अनुशासनके बिना आप उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते। कुछ प्राप्त करनेके लिये कुछ देना पड़ता है। सद्गुरुको अपने प्रेमका उपहार दें तो आपपर उनकी कृपा बरसेगी। क्या कोई आपको विश्वासमें लेगा और आपको कल्याणका रहस्य सिखायेगा, जबतक कि आप उससे प्यार नहीं करते? यह मेरे अनुभवका निर्णय है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अच्छे और धर्मी लोगोंकी संगति संसारके बन्धनोंसे मुक्त होनेका निश्चित साधन है।

❀ जो भी साधु या सन्तद्वारा प्रबुद्ध होता है, उसका अहंकार या शरीर भाव खोनेके लिये बाध्य होता है। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे वह और विकसित होता जायगा, उसका दिव्य भाव भी समाप्त होता जायगा। जिस प्रकार कपूरका एक टुकड़ा जलानेपर आपको एक तेज लौ मिलती है, लेकिन जल्द ही कपूर और लौ दोनों गायब हो जाते हैं। इसी प्रकार दैवीय भाव (मैं ब्रह्म हूँ) केवल अहंकार या देह भाव (मैं शरीर हूँ)-का मुकाबला करनेके लिये उभरता है और जल्द ही शान्त हो जाता है। जो भी सन्तके प्रभावमें आता है, वह निश्चित रूपसे मुक्तिके द्वारपर पहुँच जाता है और परमात्माकी सभी कृपाओंके साथ चमक उठता है। इसलिये मैं सन्तोंकी संगतिमें प्रसन्न होता हूँ। उनकी कृपासे, मैं हरिको जंगलमें, हलचलभरी भीड़में और अपने स्वयंकी गहराईमें भी देखता हूँ।

❀ जो लोग हरिसे विमुख हैं, उनके द्वारा किये गये पापोंके पहाड़ हीरेके लेपकी तरह हमेशाके लिये उनपर बोझ बन जायँगे। वह एक अभक्त है, जिसकी ईश्वरके प्रति कोई भक्ति नहीं है। वह सबसे अभागा और गिरा हुआ है, जो कभी भी हरिकी ओर नहीं मुड़ता। जो लोग हरिके नामका जप करनेके बजाय अन्तहीन बकबकमें लगे हैं, उन्हें गोपालकृष्ण कैसे प्राप्त हो सकते हैं? मैं केवल आत्माको सत्यके रूपमें स्वीकार करता हूँ, जो हर किसी और हर चीजमें समान रूपसे मौजूद है। वही हरि है, मैं इसे प्रामाणिक निश्चितताके साथ जानता हूँ।

❀ मनको सन्तोंकी संगतिमें लगाना चाहिये। तब श्रीपतिका ज्ञान प्राप्त होगा। 'राम-कृष्ण' नाम हमेशा अपनी जीभपर रखें। इस जपको अपनी आत्माकी एकमात्र भूख बनने दो। रामनामका जप भगवान् शिवको स्वयंके रूपमें प्रिय है। जो लोग अद्वैत हरिको साकार करनेके साधनके रूपमें इस नाम-जपके प्रति एकनिष्ठ रूपसे प्रतिबद्ध हैं, वे द्वैतवादके बन्धनसे हमेशाके लिये मुक्त हो जायँगे। विष्णुके भक्तोंको दिव्य नामसे प्रेमपूर्वक उसी अवर्णनीय माधुर्यका अनुभव होता है, जो योगी अपनी कुण्डलिनीके जागरणपर चखते हैं। प्रह्लादको बचपनसे ही दिव्य नामके प्रति प्रेम था और दिव्य नामके प्रभावसे उद्धव भगवान् कृष्णको अपना गुरु बना सके।

हरिके नामका जप (नामस्मरण) उनकी प्राप्तिके लिये आसान साधना है। फिर भी यह मनुष्यके लिये दुर्लभ हो गया है। इसके उपासक विरले ही होते हैं, जिन्हें इसकी असीम शक्तिका ज्ञान होता है।

❀ उसका ज्ञान व्यर्थ है, जो विष्णुके नामके बिना सब कुछ जपता है और जिसका मन रामकृष्णमें नहीं है। वह वास्तवमें एक दुखी मनहूस है, जो मनुष्य होते हुए भी अद्वैतके मार्गको नहीं अपनाता है। ऐसी अभागी आत्माको राम-कृष्णमें विश्राम कैसे मिल सकता है? द्वैतको झाड़ूकी तरह दूर करनेवाला ज्ञान सतगुरुके सिवा और कौन दे सकता है? जो इस तरहके ज्ञानसे वंचित है, वह कैसे दिव्य नामके पाठ (नामस्मरण)-के लिये एक स्वाद पैदा कर सकता है? भगवान्के नामोंका पाठ (नामस्मरण) वास्तवमें भगवान्के स्वरूपपर ध्यान करनेका एक अभ्यास है। ऐसा करके, मैं मौनकी स्थितिमें प्रवेश करता हूँ और अपने सांसारिक कर्तव्योंको जारी रखता हूँ।

❀ आपने पवित्र त्रिवेणी संगममें डुबकी लगायी होगी या इस भूमिके सभी पवित्र तीर्थोंका भ्रमण किया होगा। लेकिन, ये सब व्यर्थके व्यायाम हैं, यदि मन भगवान्के नाम (नामस्मरण)-में विश्राम नहीं पाता है। वह एक पापी है, जो भगवान्के नामसे विमुख हो जाता है। केवल भगवान्का नाम उसे पापमें डूबे होनेसे बचा सकता है। वाल्मीकिने भगवन्नामकी महिमाका बखान किया है और वाल्मीकि नाम सभी पुराणोंके साथ जुड़ा हुआ है। उन्होंने तीनों लोकोंके माध्यमसे भगवन्नामको एक अमोघ रक्षकके रूपमें घोषित किया है। कृपया हरिके नामका जप करें। ऐसा मन्त्र आपकी सभी पीढ़ियोंको पवित्र कर देगा।

❀ जोरसे 'हरि-हरि'-का जप करना पर्याप्त होगा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और कुछ ही क्षणोंमें पापोंके असीम ढेर शून्य हो जायँगे। जब घासको आगमें झोंक दिया जाता है तो घास आगमें मिल जाती है। इसी तरह, जो कोई भी हरिके नामका जप करता है, वह उनमें आत्मसात् हो जाता है। नामके जपकी शक्ति अथाह है। इस भौतिक संसारकी सभी बाधाएँ और भय उसे सताना बन्द कर देंगे, जो भगवान्के नामका पाठ करता है। मेरे सर्वशक्तिमान् हरि ऐसे हैं कि उपनिषद् भी उनके नाम-महिमाकी गहराई नापनेमें असमर्थ थे।

❀ यदि आपके हृदयमें हरिके प्रति भाव, आस्था और भक्ति नहीं है, तो सभी पवित्र तीर्थोंकी तीर्थयात्रा, व्रत (प्रतिज्ञा) और अन्य अनुष्ठानोंकी पूर्ति नहीं होगी। इस तरहके थकानेवाले परिश्रमोंमें शामिल होनेकी जरूरत नहीं है। आपके विशुद्ध प्रेम और भक्तिके कारण ही परमात्मा आपके लिये सुलभ हो जाते हैं, और कुछ भी काम नहीं आयेगा। हरिके लिये अपने प्रेम और भक्तिको उँडेल दो और वे स्वयंको तुम्हारी हथेलीपर आँवलेके समान प्रकट करेंगे। अन्य साधनोंसे प्रभुकी प्राप्ति उतनी ही कठिन है, जितनी जमीनपर बिखरे पारेके कणोंको इकट्ठा करनेका प्रयास।

❀ द्वैत पूरी तरहसे गायब हो जाना चाहिये और आपको हर जगह समान रूपसे प्रकट होनेवाले भगवान्के दर्शन होने चाहिये। तभी आप हरिके एकात्मक अनुभवमें लीन होते हैं। यह अनुभव द्वैतसे संक्रमित मनकी पहुँचसे बाहर है। यह केवल तभी होता है, जब आपकी बुद्धि समाधिके दिव्य अनुभवमें खुदको डुबोकर अपने मूल वैभवमें चमकती है। यह सर्वोच्च स्थिति है, जिसके लिये बुद्धि अभीप्सा कर सकती है। यदि हम केशवको जान लें तो सारी सिद्धियाँ हमारी हो जायँगी। यदि हमारा मन समाधिके आनन्दमें नहीं डोलता है तो ये शक्तियाँ किस कामकी हैं? बल्कि वे हमारे मार्गमें दर्दनाक रोड़ा बनेंगी। परम सन्तोषने मुझे लबालब भर दिया है और ऐसे सन्तोषके अनुकूल हरिका स्मरण (नामस्मरण) निरन्तर चलता रहता है।

❀ घातक कलिकाल उसकी ओर देखनेका साहस भी नहीं करेगा, जो लगातार और ईमानदारीसे हरिके नामका जप करता है। राम, कृष्ण नामोंका जप तपस्याके अनन्त फलोंके बराबर है और सारे-के-सारे पाप नष्ट कर देगा। हरि, हरि, हरि शिवका जप मन्त्र है। जो कोई भी इसका जप करेगा उसे मुक्ति प्राप्त होगी। मैं हमेशा नारायणके नामका जप कर रहा हूँ। इस प्रकार आत्मासे एक होकर, मैंने प्राकृतिक शरण और आरामकी जगहको अलौकिक आनन्दके रूपमें महसूस किया है।

❀ जैसे ही आप हरिके नामका जप करते हैं, सारा द्वैत समाप्त हो जाता है। लेकिन वास्तवमें ऐसी आत्माएँ दुर्लभ हैं, जिन्होंने अद्वैतकी कलामें महारत हासिल की है। नामस्मरणद्वारा समता प्राप्त करनेपर आप हरिको हर जगह देखेंगे। तब आपके पास मन और इन्द्रियोंको संयमित करनेके लिये कोई बन्धन नहीं होगा, बल्कि आप स्वयं हरि बन जायँगे। जैसे एक सूर्य स्वयंको असंख्य किरणोंमें प्रकट करता है, उसी प्रकार एक श्रीराम स्वयंको असंख्य देहधारी प्राणियोंमें प्रकट करते हैं। मेरा मन एक अचूक साधनके लिये प्रतिबद्ध है, जिससे वह हरिके नामका जप कर रहा है। इस प्रकार मैं सभी जन्मोंसे मुक्त हो गया हूँ।

❀ राम, कृष्णका जप करनेके लिये वाणीका उपयोग करना आसान है। फिर भी किसीको कुशलतापूर्वक और सहजतासे ऐसा करते हुए देखना बहुत दुर्लभ है। जो किसी मनसे परे जाता है और राम, कृष्णका जप करके समाधिका उत्कृष्ट अनुभव प्राप्त करता है, उसे सभी सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। भगवन्नामके जपको एक अचूक प्रतिबद्धता बनाना आपके लिये पर्याप्त होगा, जिससे सभी चमत्कारी शक्तियाँ, एक उज्ज्वल बुद्धि और एक धार्मिक स्वभाव आपके अन्दर जुड़ जायँगे। भगवन्नाम और सन्तोंकी संगतिका सहारा लेकर, कई लोगोंने संसार-सागर पार कर लिया है। राम, कृष्ण नामोंने मेरे हृदयपर एक अमिट छाप छोड़ी है। इस प्रकार मैं सभी दस दिशाओंमें आत्माराम (श्रीराम, जो वास्तवमें मेरे स्वयंके स्वरूप हैं)-को देखता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सच्चिदानन्दके ज्योतिषी

(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

सर्वव्यापक, निरंजन, निर्गुण, अजन्मा, हर्ष-विषादसे रहित, नाम-रूप-रहित परब्रह्म परमात्मा जब भक्तिके वशीभूत होकर पृथ्वीका भार उतारनेके लिये श्रीअयोध्यामें माता श्रीकौसल्याजीकी गोदमें श्रीरामरूपमें अवतरित हुए, तब अयोध्यानगरी एक अलौकिक शोभाको प्राप्त हुई। जहाँपर अलौकिक शोभाधाम सच्चिदानन्द प्रभु स्वयं बालरूपसे खेल रहे हों, वहाँकी छविका क्या कहना! सुर-नर-मुनि सभी अयोध्यानगरीके सौभाग्यकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा कर रहे थे और भगवान्‌की रूप-माधुरीका पान करनेके लिये तथा परमानन्दका रसास्वादन करनेके लिये मनुष्यरूपमें अयोध्याकी गलियोंमें चक्कर लगाया करते थे। अखिलभुवनपति भगवान् महेश्वर भी उस समय सुरम्य कैलासधाममें टिक न सके, वह उन्हें अयोध्याके मुकाबले सूना, नीरस-सा लगने लगा। उन्होंने काकभुशुण्डि तथा कुछ अन्यान्य प्रेमी ऋषि-मुनियोंका एक दल संगठित किया और अयोध्यानगरीमें आकर निवास किया। इस रहस्यको उस समय कोई जानता नहीं था। भगवान् शंकर अपने दलके साथ राजमहलके इर्द-गिर्द चक्कर लगाया करते थे कि किसी तरह प्रभुके बालरूपकी झाँकी मिल जाय।

एक दिन उन्होंने अपने साथियोंको तो बाल शिष्योंका रूप धारण कराया और स्वयं एक वयोवृद्ध अनुभवी ज्योतिषी बन बैठे। इस तरह दिव्य वेश बनाकर अपनी मण्डलीसहित वे राजभवनके द्वारपर पहुँचे। उस समयका वर्णन भक्तप्रवर श्रीतुलसीदासजी अपनी गीतावलीमें इस प्रकार करते हैं—

अवध आजु आगमी एकु आयो।
करतल निरखि कहत सब गुन गन, बहुतन्ह परिचौ पायो॥ १॥
बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मन, संकर नाम सुहायो।
सँग सिसु सिष्य, सुनत कौसल्या भीतर भवन बुलायो॥ २॥
पायँ पखारि, पूजि, दियो आसन, असन बसन पहिरायो।
मेले चरन चारु चार्‌यो सुत, माथे हाथ दिवायो॥ ३॥
नख सिख बाल बिलोकि बिप्र तनु पुलक, नयन जाल छायो।
लै लै गोद कमल कर निरखत, उर प्रमोद न अमायो॥ ४॥
जनम प्रसंग कह्यो कौसिक मिस सीय स्वयंबर गायो।
राम, भरत, रिपुदवन, लखन को जय सुखु सुजसु सुनायो॥ ५॥
तुलसिदास रनिवास रहस बस भयो, सब के मन भायो।
सनमान्यो महिदेव असीसत सानँद सदन सिधायो॥ ६॥

राजभवनके रनिवासमें खबर पहुँची कि आज अवधपुरीमें एक सामुद्रिक ज्योतिषी आये हैं, जो हथेली देखकर ही सारे गुण बता देते हैं। उनके कथनकी सत्यताका परिचय बहुत-से लोगोंको मिला है। वे बूढ़े ब्राह्मण बड़े ही प्रामाणिक हैं। उनका बड़ा सुन्दर 'शंकर' नाम है और उनके साथ कई बालक शिष्य भी हैं। यह सुनकर माता कौसल्याजीने ज्योतिषीको भीतर महलमें बुला भेजा। ज्योतिषीके आनेपर उन्होंने ब्राह्मणके पैर धोये, पूजा की, आसनपर बैठाया, भोजन कराया और वस्त्र प्रदान किया। फिर उनके सुन्दर चरणोंमें चारों बालकोंको रखकर उनके सिरपर हाथ रखवाया। उन बालकोंको नखसे शिखतक निहारकर ब्राह्मणदेवताके शरीरमें रोमांच हो आया और नेत्रोंमें जल भर गया। फिर वे गोदमें ले-लेकर उनके करकमल देखने लगे। उस समय अपने आराध्यदेवको साकार मूर्तिमें और सो भी अपनी गोदमें पाकर उनके हृदयमें आनन्दकी सीमा न रही। उन्होंने उनके जन्म लेनेके कारणसे लेकर भविष्यमें श्रीविश्वामित्रजीकी यज्ञरक्षाके निमित्तसे श्रीसीताजीके स्वयंवरमें पधारनेतककी कथा सुनायी तथा राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्नके भावी जय, सुख और सुयशका वर्णन किया। यह सुनकर सारा रनिवास आनन्दमग्न हो गया; क्योंकि ज्योतिषीकी बात सबके हृदयको प्रिय लगनेवाली थी। उन्होंने उन विप्रप्रवरका अत्यन्त सम्मान किया और वे भी अतृप्त नयनोंसे सच्चिदानन्दकी सच्चिदानन्दमयी छविको मुँह फिरा-फिराकर निरखते हुए मन-ही-मन गुणगान करते हुए और ऊपरसे उन्हें आशीर्वाद देते हुए अपने धामको वापस चले गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधकका कर्तव्य

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)

गुण और दोषोंको देखनेकी शक्ति हरेक मनुष्यमें विद्यमान है। जिस योग्यतासे वह दूसरोंके दोषोंको देखता है, उसी योग्यतासे अपने दोषोंको देखे। अपने दोषोंको ठीक-ठीक देख लेनेपर दुःख होता है और दुःख होनेसे दोष दूर हो जाते हैं।

दूसरोंके दोष और अपने गुण देखनेसे मनुष्यका विकास रुक जाता है और अभिमान पुष्ट होता है तथा कर्तव्यसे निराश होनेपर भी विकास रुक जाता है। अतः साधकको चाहिये कि अपने गुणोंको न देखे, पराये दोषोंको न देखे और कर्तव्यसे निराश न हो। जो सचमुच साधक होता है, उसे पराये दोष देखनेकी फुरसत ही नहीं रहती और उसे दीखते भी नहीं।

पराधीन व्यक्ति साधन नहीं कर सकता। अतः साधकको चाहिये कि दूसरोंसे किसी प्रकारकी आशा न करे। अपनी रुचि और योग्यताके अनुसार तत्परतासे साधन करता रहे। अपनी योग्यताका अध्ययन करे कि मैं क्या-क्या कर सकता हूँ। जो कर सकता हो, उसके अनुसार दृढ़तापूर्वक साधन करनेकी चेष्टा करे। फिर जो कठिनाई आये, उसपर विचार करनेपर बराबर रास्ता दिखलायी देता रहेगा। आजकल लोग अपनी योग्यताको नहीं देखते कि हम क्या कर सकते हैं। केवल पूछते रहते हैं कि क्या करना चाहिये। इससे काम नहीं चलता। करनेलायक साधन तो असंख्य हैं; परंतु उसके तो वही काम आयेगा, जो वह स्वयं कर सकता हो। साधन बहुत बढ़िया हो, परंतु जो नहीं कर सके उसके कामका नहीं। अतः साधन वही ठीक है, जो वह कर सके तथा जिसमें साधकका प्रेम और विश्वास हो।

कठिनाई एक प्रकारका तप है। तपके बाद सामर्थ्य आती है। यह नियम है। अतः साधकको कभी निराश नहीं होना चाहिये। प्राप्त योग्यताके अनुसार साधन करते रहना चाहिये; क्योंकि न जाननेका दोष इतना प्रबल नहीं है, जितना कि न करनेका दोष है। अतः साधकको चाहिये कि जाननेके पीछे न पड़े, जो कुछ जाना है, उसके अनुसार करना आरम्भ कर दे। न करनेके दोषको मिटा दे एवं जिसको न कर सके, उसके करनेकी इच्छाका त्याग कर दे। जानना तो एक प्रकारका प्रकाश है। जिसके हाथमें सर्च लाइट या लालटेनका प्रकाश है, वह उसे लेकर चलता रहेगा तो जितना चलेगा उतना ही उससे आगेका मार्ग दीखने लगेगा। इस प्रकार वह बहुत दूर चला जा सकता है। परंतु यदि इस आशापर वहीं खड़ा रहे कि जब आखिरतक प्रकाश हो जायगा, पूरा रास्ता दिखलायी देगा, तब चलना आरम्भ करूँगा तो वह थोड़ी दूर भी नहीं जा सकेगा। चलते रहनेसे एकके बाद दूसरी शक्ति अपने-आप आती रहेगी। अतः साधकको चाहिये कि जो कुछ भी वह थोड़े-से-थोड़ा जानता है, उसके अनुसार चलना आरम्भ कर दे।

ईश्वरको प्राप्त करनेमें कर्मकी अपेक्षा नहीं है। उसमें तो एकमात्र लालसा चाहिये, व्याकुलता चाहिये। साधक जितना अधिक प्रभुके लिये व्याकुल होगा, उतनी ही शीघ्रतासे उसे भगवान् मिलेंगे। उनको पानेके लिये तो व्याकुलताका महत्त्व है।

भोगोंकी प्राप्ति व्याकुलतासे नहीं होती, भोग कर्म करनेसे मिलते हैं, अतः उनकी प्राप्तिके लिये कर्मका महत्त्व है। यदि कोई कहे कि मुझसे भगवत्-चिन्तन नहीं होता तो उसे सोचना चाहिये कि फिर मैं विषयोंका चिन्तन क्यों करता हूँ। जिस शक्तिसे वह विषयोंका चिन्तन करता है, उसी शक्तिको ईश्वरचिन्तनमें लगा देना चाहिये।

क्योंकि चिन्तन करना मनुष्यका स्वभाव है; जब वह ईश्वर-चिन्तन नहीं करता, तब विषयोंका चिन्तन करता है। कोई भला काम नहीं करता तो बुरा करता है। यदि कुछ न करे तो भी बहुत ठीक है; परंतु बिना करे तो रहे नहीं और करनेयोग्य काम करे नहीं, उलटा करे तो यह साधन नहीं है। इससे विकास नहीं हो सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधकोंके प्रति—

शिखा (चोटी)-धारणकी आवश्यकता

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

हिन्दू-संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसमें छोटी-से-छोटी अथवा बड़ी-से-बड़ी प्रत्येक बातका धर्मके साथ सम्बन्ध है और धर्मका सम्बन्ध कल्याणके साथ है। हिन्दूधर्ममें जो-जो नियम बताये गये हैं, वे सब-के-सब नियम मनुष्यके कल्याणके साथ सम्बन्ध रखते हैं। कोई परम्परासे सम्बन्ध रखते हैं, कोई साक्षात् सम्बन्ध रखते हैं। हिन्दूधर्ममें विद्याध्ययनका भी सम्बन्ध कल्याणके साथ है। संस्कृतव्याकरण भी एक दर्शनशास्त्र है, जिससे परिणाममें परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है! इसलिये हिन्दूधर्मके किसी नियमका त्याग करना वास्तवमें अपने कल्याणका त्याग करना है।

जैसे, घड़ीमें छोटे-बड़े अनेक पुर्जे होते हैं। उसमें बड़े पुर्जेका जो महत्त्व है, वही महत्त्व छोटे पुर्जेका भी है। बड़ा पुर्जा अपनी जगह पूरा है और छोटा पुर्जा अपनी जगह पूरा है। छोटे-से-छोटा पुर्जा भी यदि निकाल दिया जाय तो घड़ी बन्द हो जायगी। इसी तरह हिन्दूधर्मकी छोटी-से-छोटी बात भी अपनी जगह पूरी है और कल्याण करनेमें सहायक है। छोटी-सी शिखा अर्थात् चोटी भी अपनी जगह पूरी है और मनुष्यके कल्याण करनेमें सहायक है। शिखाका त्याग करना मानो अपने कल्याणका त्याग करना है।

जैसे घड़ीके छोटे पुर्जेकी जगह बड़ा पुर्जा काम नहीं कर सकता, ऐसे ही हम कोई भी काम करें, उसमें अगर थोड़ी-सी भी कमी रह जायगी, तो उसकी पूर्ति नहीं होगी। महाराज नलके चरित्रमें आता है कि कलियुग कई दिनोंतक उनके शरीरमें प्रवेश करनेकी चेष्टा करता रहा, पर प्रवेश कर नहीं सका। एक दिन महाराज नलने लघुशंका करके हाथ तो धो लिये, पर पैर नहीं धोये, तो उसी दिन कलियुग उनके भीतर प्रवेश कर गया। फलस्वरूप महाराज नल और उनकी पत्नी दमयन्ती—दोनोंको बड़ा कष्ट भोगना पड़ा। अत: शिखा नहीं रखना बड़ी भारी कमी है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

शिखा अर्थात् चोटी हिन्दुओंका प्रधान चिह्न है। हिन्दुओंमें चोटी रखनेकी परम्परा प्राचीनकालसे चली आ रही है। परंतु अब आपने इसका त्याग कर दिया है—यह बड़े भारी नुकसानकी बात है। विचार करें, चोटी न रखनेके लिये अथवा चोटी काटनेके लिये किसीने प्रचार भी नहीं किया, किसीने आपसे कहा भी नहीं, आपको आज्ञा भी नहीं दी, फिर भी आपने चोटी काट ली, तो आप मानो कलियुगके अनुयायी बन गये! यह कलियुगका प्रभाव है; क्योंकि उसे सबको नरकोंमें ले जाना है। चोटी कट जानेसे नरकोंमें जाना सुगम हो जायगा। इसलिये आपसे प्रार्थना है कि चोटीको साधारण समझकर इसकी उपेक्षा न करें। चोटी रखना मामूली दीखता है, पर यह मामूली काम नहीं है।

अग्निका एक नाम 'शिखी' है। शिखी उसको कहा जाता है, जिसकी शिखा हो— **'शिखा यस्यास्तीति स शिखी'**। वह धूमशिखावाला अग्नि हमारा इष्टदेव है—**'अग्निर्देवो द्विजातीनाम्'**। अत: शिखा हमारे इष्टदेव अग्निका प्रतीक है।

हरिवंशपुराणमें एक कथा आती है। हैहय और तालजंघ वंशके राजाओंने शक, यवन, काम्बोज, पारद आदि राजाओंको साथ लेकर राजा बाहुका राज्य छीन लिया। राजा बाहु अपनी पत्नीके साथ वनमें चला गया। वहाँ राजा बाहुकी मृत्यु हो गयी। तब महर्षि और्वने उसकी गर्भवती स्त्रीकी रक्षा की और उसको अपने आश्रममें ले आये। वहाँ उसने एक पुत्रको जन्म दिया, जो आगे चलकर राजा सगरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। राजा सगरने महर्षि और्वसे शस्त्र और शास्त्रकी विद्या सीखी। समय पाकर राजा सगरने हैहयोंको मार डाला और फिर शक, यवन, काम्बोज, पारद आदि राजाओंको भी मारनेका निश्चय किया। वे शक, यवन आदि राजालोग महर्षि वसिष्ठकी शरणमें चले गये। वसिष्ठजीने कुछ शर्तोंपर उनको अभयदान दे दिया और राजा सगरको आज्ञा दी कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे उनको न मारें। राजा सगर अपनी प्रतिज्ञा भी नहीं छोड़ सकते थे और वसिष्ठजीकी आज्ञा भी नहीं टाल सकते थे। अत: उन्होंने उन राजाओंका सिर शिखासहित मुँड़वाकर उनको छोड़ दिया। वे राजालोग क्षत्रिय थे, पर शिखा कटनेके कारण वे सब धर्मभ्रष्ट हो गये—

शका यवनकाम्बोजाः पारदाश्च विशाम्पते।
कोलिसर्पाः समहिषा दार्द्याश्चोला सकेरलाः॥
सर्वे ते क्षत्रियास्तात धर्मस्तेषां निराकृतः।
वसिष्ठवचनाद् राजन् सगरेण महात्मना॥
(हरिवंशपुराण १।१४।१८-१९)

'शक, यवन, काम्बोज, पारद, कोलिसर्प, महिष, दर्द, चोल और केरल—ये सब क्षत्रिय ही थे। वसिष्ठजीके वचनसे महात्मा सगरने इनके धर्मको ही नष्ट कर दिया।'

इस कथासे यह सिद्ध होता है कि शिखा काटनेसे मनुष्य मरे हुएके समान हो जाता है और अपने धर्मसे भ्रष्ट हो जाता है। प्राचीनकालमें किसीकी शिखा काट देना मृत्युदण्डके समान माना जाता था। धर्मके साथ शिखाका अटूट सम्बन्ध है। इसलिये शिखा काटनेपर मनुष्य धर्मच्युत हो जाता है। बड़े दुःखकी बात है कि आज हिन्दूलोग मुसलमानों-ईसाइयोंके प्रभावमें आकर अपने हाथों अपनी शिखा काट रहे हैं! खुद अपने धर्मका नाश कर रहे हैं! यह हमारी गुलामीकी पहचान है।

बोध-कथा—

भगवान्‌को पानेकी योग्यता

श्रीलालाबाबूका असली नाम था श्रीकृष्णचन्द्र सिंह। उनके पिता प्राणकृष्णके पास बड़ी जमींदारी थी और वे पूर्वी भारतके सबसे बड़े धनी-मानी व्यक्ति थे। बचपनसे ही वे किसीका दुःख नहीं देख सकते थे। एक बार एक धीवरकी कन्या अपने बाबाको कह रही थी 'बाबा! उठो। दिन शेष हय गलो।' उसे सुनकर श्रीलालाबाबूको वैराग्य हो गया। वे अपने परिवारको कलकत्तामें छोड़कर संन्यासी हो गये और वृन्दावनमें रहने लगे। उन्होंने ब्रजमण्डलके चौहत्तर परगने खरीदकर उनकी आयसे भग्न मन्दिरोंकी मरम्मत, नये मन्दिर और धर्मशालाओंका निर्माण और स्थान-स्थानपर देव-सेवाकी सुव्यवस्था करनेकी एक विराट् योजना बनायी। वृन्दावनमें एक विशाल सुरम्य मन्दिर बनवाया। वे स्वयं कंगाल वैष्णवकी तरह जीवनयापन करते रहे।

लालाबाबूने ब्रजके सभी तीर्थोंका दर्शन किया तथा गोवर्धनमें एक छोटी-सी गुफामें रहने लगे। वे नित्य प्रातः गोवर्धनकी परिक्रमा करते। दिनभर भजन करते तथा संध्याके समय एकबार मधुकरीको जाते थे। मथुराके सिद्ध महात्मा कृष्णदास बाबाजी उन दिनों वहाँ विद्यमान थे। लालाबाबूने उनका शिष्य बनना चाहा, तब बाबाजीने कहा कि 'अभी समय नहीं आया है। उपयुक्त समय आनेपर ही मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा। तुम्हारे विषयी जीवनके सूक्ष्म संस्कार अभी शेष हैं।'

रंगजीके विशाल मन्दिरके निर्माता सेठ लक्ष्मीचन्दजी, लालाबाबूके प्रतिद्वन्द्वी थे। मन्दिर-निर्माण, साधु-वैष्णवोंकी सेवा और दान-दक्षिणा आदिमें दोनोंमें होड़ लगी रहती थी। पहले दोनोंके बीच जमीन-जायदादको लेकर एक मुकदमा भी चल चुका था। सेठजीके प्रति लालाबाबूके मनमें सूक्ष्म रूपसे द्वेष अब भी बना हुआ था। एक दिन रंगजीके मन्दिरमें लालाबाबू स्वयं सेठजीके द्वारपर भिक्षाके लिये गये। सेठजीको यह जानकर अतीव आश्चर्य हुआ। सेठजीने लालाबाबूको बाँहोंमें भर लिया। दोनोंकी आँखें प्रेमाश्रुओंसे भीग गयीं।

फिर महात्मा कृष्णदासने स्वयं उन्हें आकर दीक्षा दी। उन्होंने लालाबाबूको गोवर्धनमें एक गुफामें रहकर भजन करनेको कहा। गुरुकी आज्ञाके अनुसार भजन करते-करते कई वर्ष बाद उन्हें अपने इष्टदेवके दर्शन हुए।

उनका कहना था कि यदि भगवान्‌को पाना चाहते हैं तो केवल दीक्षासे कुछ नहीं होता। दोनों हाथ बढ़ाने होंगे। एक हाथसे संसारको पकड़े रहकर दूसरा हाथ उनकी ओर बढ़ानेपर भी उनके चरणोंकी प्राप्ति नहीं होगी। भगवान्‌को पानेके लिये तो दोनों ही हाथ बढ़ाने होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोक-संस्कृतिमें राम—

छत्तीसगढ़में राम

(श्रीगिरीशजी पंकज)

प्रभु श्रीराम जन-जनके हैं। राम पूरे विश्वके हैं। राम अयोध्याके हैं। राम छत्तीसगढ़के हैं। राम हमारे हैं। राम आपके हैं। अर्थात् राम सबके हैं। जो उन्हें नहीं मानता, राम उनके भी हैं। राम कण-कणमें हैं। राम सिर्फ एक नाम नहीं है, यह हमारी आस्था, हमारी संस्कृति, हमारे सनातन-बोधका भी नाम है। जहाँ-जहाँ सनातन-संस्कृतिसे लगाव रखनेवाले लोग रहते हैं, वहाँ-वहाँ वे राममें रमे रहते हैं। छत्तीसगढ़में भी रामसे लगाव रखनेवाले करोड़ों लोग हैं। रामके सन्दर्भमें छत्तीसगढ़का उल्लेख इसलिये भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि रामने यहाँ लगभग बारह वर्ष भ्रमण किया। यहाँके सघन वनोंमें वे विचरण करते रहे। अनेक राक्षसोंका संहार किया और यहींसे वे दक्षिणकी ओर गये। यही कारण है कि छत्तीसगढ़में रामवनगमनपथको रेखांकित करके परिसर-निर्माणकी प्रक्रिया शुरू हुई है। प्रभु श्रीरामको जब वनवासका आदेश हुआ, तो उन्होंने पत्नी सीता और भाई लक्ष्मणके साथ चित्रकूट आदिसे होते हुए छत्तीसगढ़में प्रवेश किया था और दण्डकारण्यकी ओर यानी तत्कालीन दक्षिण कोसल क्षेत्रमें आये। बहुत सम्भव है कि अपने वनवासके लिये श्रीरामने दक्षिण कोसलको इसलिये चुना कि उनकी माताजीकी यह जन्मभूमि थी, यानी उनका ननिहाल था। प्रभु रामके छत्तीसगढ़में लम्बे भ्रमणके अनेक प्रमाण मिले हैं। उन सभी स्थलोंको अब भव्य तीर्थाटनक्षेत्रके रूपमें विकसित करनेकी कोशिश की जा रही है। ऐसे लगभग पचहत्तर स्थानोंको चिह्नित करके विकसित करनेकी कोशिश की जा रही है। रामवनगमनपथ सर्किट भी बनाया जा रहा है, जिसकी लम्बाई दो हजार किलोमीटरसे अधिक है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामने सबसे पहले कोरिया जिलेके सीतामढ़ी-हरचौकासे छत्तीसगढ़में प्रवेश किया था। इसके बाद वे रामगढ़, शिवरीनारायण, तुरतुरिया, चन्दखुरी, राजिम, सिहावा, जगदलपुर, सुकमा आदि स्थानोंमें अपने वनवासकालमें रहे। कुछ ऐसी गुफाएँ भी खोजी गयी हैं, जिनको सीतामाताकी रसोई भी कहा जाता है।

प्रभु श्रीरामका ननिहाल—धीरे-धीरे आम लोगोंको पता चलने लगा है कि छत्तीसगढ़ प्रभु श्रीरामका ननिहाल है। उनकी माता कौसल्याजी छत्तीसगढ़की बेटी थीं। लोकश्रुति है कि रायपुरसे लगभग बीस किलोमीटर दूर चन्दखुरी नामक जगहमें उनका जन्म हुआ था, जहाँ अब भव्य कौसल्या मन्दिरका निर्माण किया जा चुका है। हालाँकि कुछ लोग बिलासपुरके पास किसी जगहको माता कौसल्याकी जन्मस्थली बताते हैं, लेकिन आम राय चन्दखुरीको लेकर है। इसलिये अब विवादकी कोई गुंजाइश नहीं। चन्दखुरीमें पाँच दशक पहले माता कौसल्याका मन्दिर बनाया गया, जिसे धीरे-धीरे और भव्य किया जा रहा है। कौसल्याजीका जन्म चाहे रायपुर जिलेमें हुआ हो या बिलासपुर जिलेमें, इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनका जन्म छत्तीसगढ़में हुआ औरं यह प्रामाणिक बात है। माता कौसल्या यहाँके राजा भानुमतकी बेटी थीं। तब छत्तीसगढ़को दक्षिण कोसल प्रदेशके रूपमें जाना जाता था। कोसलमें जन्म लेनेके कारण ही माता कौसल्याको कौसल्या कहा गया। जैसे जनकपुरमें जन्म लेनेके कारण माता सीताको जानकी भी कहा जाता है। वे राजा जनककी बेटी थीं। पहले छत्तीसगढ़में बहुतसे बच्चोंके नाम उनके जन्मस्थलको ले करके भी रखे जाते थे। यहाँके लोग बड़ी श्रद्धाके साथ प्रभु श्रीरामको अपना भांजा कहते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषामें भांजेको भांचा कहा जाता है, जो भांजेका ही अपभ्रंश है। छत्तीसगढ़में भांजा मामाके पैर नहीं पड़ता। यह सुन्दर परम्परा है, जिसे लगभग पूरे देशमें आत्मसात् किया गया है कि भांजा अपने मामाके पैर न छुए। यह बहनके प्रति सम्मान भी है। छत्तीसगढ़में एक लोकश्रुति यह भी है कि रायपुरसे अस्सी किलोमीटर दूर अवस्थित धमतरी जिलेके नगरी-सिहावा क्षेत्रमें रहनेवाले शृंगी ऋषि राजा दशरथके द्वारा आयोजित पुत्रेष्टि यज्ञमें शामिल हुए थे। कहते हैं कि राजा दशरथने उनसे प्रसन्न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होकर अपनी पुत्री शान्ताका विवाह इन्हीं ऋषिसे कर दिया था। सिंहावामें आज भी शृंगी ऋषिका आश्रम है, जहाँ समय-समयपर दर्शनार्थी पहुँचते रहते हैं।

रामनामी सम्प्रदायके लोग—प्रभु श्रीरामकी भक्तिमें कुछ लोग किस सीमातक जाकर रम चुके हैं, इसे अगर देखना-समझना हो तो छत्तीसगढ़के उन लोगोंके दर्शन करने चाहिये, जिन्होंने अपने पूरे शरीरपर राम नाम गुदवा लिया है। इसे गोदना बोलते हैं। अंग्रेजीमें टैटू। आपादमस्तक राम नाम गुदवानेवाले ये रामभक्त इस बातकी परवा नहीं करते कि पूरे चेहरे और समूचे शरीरमें राम नाम गुदवानेसे उनके चेहरेकी पहचान खो जायगी। उन्हें तो सिर्फ राममय होना है। वे पूरी भक्ति-भावनाके साथ रामको आत्मसात् करते हैं और प्राय: शरीरपर राम नामकी चादर भी ओढ़ लेते हैं। सिरपर मोरपंखसे सज्जित लकड़ीसे बना मुकुट धारण करते हैं। रामभक्त होनेके कारण यह एक नया सम्प्रदाय ही बन गया है, रामरमिहा सम्प्रदाय। ये लोग रायगढ़, जांजगीर, चांपाके आस-पासके गाँवमें निवास करते हैं। इनको देखकर बड़ी आस्था टपकती है। उनके चेहरेपर बेहद कलात्मक तरीकेसे राम-राम गुदा रहता है। चादरपर भी, जिसके कोनेमें घुँघरू भी बँधा रहता है। इनकी चादर राम नामसे ओतप्रोत रहती है, कमाल है। हालाँकि अब धीरे-धीरे ऐसे रामरमिहा लोगोंकी संख्या कम होती जा रही है, लेकिन जो पुराने बुजुर्ग हैं, वे स्वाभाविक है कि आज भी उसी तरह नजर आते हैं, राममय। ये लोग जीविकोपार्जनके लिये किसानी करते हैं। गोपालन भी करते हैं। आपसमें जब मिलते हैं, तो 'राम-राम' बोलकर ही एक-दूसरेका अभिवादन करते हैं। कहा जाता है कि सौ साल पहले चपोरा गाँवके चर्मकार परशुराम नामक युवकने रामनामी सम्प्रदायकी स्थापना की थी। परशुराम और उनके समाजके लोगोंको जब मन्दिरमें प्रवेश नहीं मिला तो विरोधस्वरूप परशुरामने अपने माथेपर ही राम नाम गुदवा लिया। धीरे-धीरे ऐसा करनेवालोंकी संख्या बढ़ती गयी। ये लोग मन्दिर नहीं जाते, बस, इनको राम नाममें ही रमे रहना पसन्द है। इसलिये उस दौरमें कुछ लोगोंने पूरे शरीरपर राम नाम गोदवा लिया और देखते-ही-देखते एक नया सम्प्रदाय रामरमिहा विकसित होता चला गया। इनमें दो-तीन श्रेणीके रामनामी हैं। जैसा मैंने पढ़ा है, उसके मुताबिक कुछ लोग माथेपर राम नाम गुदवाते हैं, तो इनको शिरोमणि कहा जाता है। जो लोग पूरे शरीरमें राम नाम गुदवा लेते हैं, उन्हें सर्वांग रामनामी कहा जाता है। इन लोगोंका सम्बोधन भी राम-रामसे शुरू होता है। हर आगन्तुकसे यह प्रश्न करते हैं कि 'आप कहाँसे आये हो राम?' या 'कहाँ जायँगे राम?' मतलब यह कि रामके बिना इनका कोई काम नहीं होता। राममें ऐसे रमे हुए हैं ये लोग। छत्तीसगढ़के बाकी लोग अपने शरीरपर इस तरह राम नाम नहीं गुदवाते, लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें रामनामी सम्प्रदायका माना जाता है। सीधे, सरल, सज्जन किस्मके इन लोगोंसे मिलनेपर इनकी सहजता देखकर समझमें आ जाता है कि ये सच्चे रामभक्त हैं। गोस्वामी तुलसीदासने रामजीके भक्तितत्त्वका वर्णन करते हुए कहा—***निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥*** तो जब हम रामनामी सम्प्रदायके लोगोंको देखते हैं तो महसूस करते हैं, ये सारे प्रपंचोंसे दूर होकर प्रभु श्रीरामकी भक्तिमें लगे रहते हैं। इनके क्षेत्रमें बहुत पहले रामनामी मेला भी लगा करता था। रामनामी सम्प्रदायके लोग शाकाहारी होते हैं। मदिरापान नहीं करते। ये भगवान् रामके अलावा किसी और-को भगवान् नहीं मानते। हाँ, हनुमान्‌जीको ये लोग मानते हैं; क्योंकि हनुमान्‌जी रामके उपासक हैं। गोस्वामी तुलसीदासने जिन रामकी महिमाका बखान किया, उसे भी रामनामी सम्प्रदायके लोग श्रद्धाके साथ याद करते हैं। श्रीरामचरितमानस भी पढ़ते हैं। हालाँकि युवा पीढ़ीके लोग अब पूरे शरीरपर राम नाम नहीं गुदवाते। तथाकथित आधुनिकताके दौरमें अब जो नई पीढ़ी आ रही है, वह पूरे शरीरमें राम नाम नहीं गुदवाती। माथेपर गुदवा लिया या हाथपर, बहुत है।

रामके नामसे गहरा रिश्ता—एक तरफ रामनामी सम्प्रदायके लोग हैं, जिन्होंने पूरे शरीरपर राम गुदवा रखा है। वहीं छत्तीसगढ़के ग्रामीण परिवेशमें भगवान् श्रीरामके प्रति गहरा लगाव दिखायी देता है। यही कारण है कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनेक गाँवोंमें भी लोगोंके नामके साथ राम प्रत्यय या राम उपसर्ग जुड़ा हुआ है। हालाँकि अब तो यह चलन लगभग खत्म हो चला है। अब गाँवमें पैदा होनेवाले बच्चेका भी नाम टिंकू, रिंकू, पिंकू, सोनू, टोनू आदि रखा जाता है। लेकिन एक दौर था, जब हर दूसरे बच्चेका नाम रामसे ही जोड़कर रखा जाता था, जैसे भुलवाराम, बुधराम, जनकराम, परदेसीराम, खोराबाराराम, यहाँतक कि माता सीताको याद करते हुए किसी-किसीका नाम सीताराम भी रख दिया जाता था। आज भी कनीराम, रामकृष्ण, रामसजीवन, रामप्रसाद, रामलाल, रामजी, रामकिशोर, रामदयाल, रामरतन, रघुवीर, राममाधव, रामदुलारे, रामशरण, दशरथनन्दन, रामभगत, टेकराम, दयालूराम, गज्जूराम, परसराम, रामविचार, रामलखन, रामभरोसे, रामबरन, रामखिलावन, सियाराम, रामकृपाल, रामू, रम्मू, रमेश, रामेन्द्र, श्रीराम, रामकली, रामदेव, घनाराम, शिवराम, फिरूराम, राममूरत, रामदरश, रामसुभग, रामकिसन, पंचूराम, खेलूराम, सदाराम, रामाधार, सालिगराम और रामभद्र-जैसे नामवाले अनेक लोग आसानीसे मिल जायँगे। हो सकता है दो-तीन दशक बाद ये सारे नाम लुप्त हो जायँ, क्योंकि ऐसे नामोंवाली पीढ़ी ही खत्म हो जायगी; क्योंकि नयी पीढ़ीमें अब ऐसे नाम रखनेका चलन खत्म हो रहा है। लेकिन सौभाग्यसे अभी ऐसे नामधारी हजारों लोग जीवित हैं। छत्तीसगढ़में रामके साथ जुड़े स्थल भी मौजूद हैं। जैसे रामपुर, रामगढ़, राजिम (स्थान, जहाँ राजीवलोचन मन्दिर है)। लक्ष्मणजीके नामसे भी शहर है, लखनपुर। माता सीताके नामसे भी शहर है सीतापुर। श्रीराम भगवान्‌के पिताश्रीके नामसे भी एक शहर है दशरथपुर। भरतपुर, लखनपुर, जनकपुर, राघवपुरी, बलरामपुर और विश्रामपुर भी हैं। श्रीरामने यहाँ विश्राम किया था, इसलिये इसका नाम कालान्तरमें विश्रामपुर पड़ गया। इसी तरह रायगढ़ जिलेसे १८ किलोमीटर दूर 'रामझरना' है। इसके बारेमें भी लोकश्रुति यही है कि इसी झरनेसे प्रभु रामने जल पीया था, इसलिये इसका नाम रामझरना पड़ गया।

इस प्रकार छत्तीसगढ़के भी कण-कणमें और जन-जीवनमें राम वैसे ही व्याप्त हैं, जैसे अवध और मिथिलामें; और ऐसा हो भी क्यों न, यह तो उनकी जननीकी जन्मभूमि है।

बोध-कथा

सीखनेकी धुन

यह घटना सन् १९४७ ई०के आस-पासकी है। लेस्टर वण्डरमैन नामक युवक न्यूयॉर्ककी एक विज्ञापन एजेंसीमें काम कर रहा था। एक दिन एजेंसीके मालिकको लगा यदि वह कुछ कर्मचारियोंकी छँटनी कर दे तो उसे अधिक मुनाफा होगा। यह सोचकर उसने अनेक कर्मचारियोंको एजेंसीसे हटा दिया। वण्डरमैन भी उनमेंसे एक था। लेकिन नौकरीसे निकाले जानेके बाद भी वह एजेंसीमें आकर कार्य करता रहा। वहाँके कर्मचारी उससे बोले—'वण्डरमैन, जब तुम्हें यहाँसे निकाल दिया गया है तो तुम यहाँ काम क्यों कर रहे हो?' वण्डरमैनने कहा—'मैं बिना तनख्वाहके काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस एजेंसीके मालिकसे बहुत कुछ सीख सकता हूँ।'

एजेंसीके मालिक सैकहीम वण्डरमैनको देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीनेतक उसे नजरअंदाज किया और तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमैनने हार नहीं मानी और वहाँ काम करता रहा। कुछ समय बाद मालिक वण्डरमैनके पास आकर बोले—'ठीक है, तुम जीत गये। मैंने पहले कभी ऐसा आदमी नहीं देखा, जिसे तनख्वाहसे ज्यादा काम प्रिय हो।' वण्डरमैन वहींपर काम करता रहा। उसने वहाँ विज्ञापनकी बहुत-सी बारीकियाँ समझीं। जब उसे काम करते हुए काफी अनुभव हो गया तो उसने अपने तरीके और समझसे विज्ञापन बनाना आरम्भ कर दिया। वह विज्ञापनकी दुनियामें छा गया। आज वण्डरमैनको डायरेक्ट मार्केटिंगके जनकके रूपमें याद किया जाता है। [श्रीरामकिशोरजी]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्तिकमासकी महिमा

(डॉ० श्रीउपेन्द्रविनायकजी सहस्त्रबुद्धे)

सृष्टिके मूल सूर्यकी राश्यान्तर स्थितियोंके आधारपर दक्षिणायन और उत्तरायणका विधान है। भगवान् नारायणके शयन और प्रबोधनसे चातुर्मास्यका प्रारम्भ और समापन होता है। उत्तरायणको देवकाल और दक्षिणायनको आसुरीकाल माना गया है। दक्षिणायनमें देवकाल न होनेसे सद्‌गुणोंके क्षरणसे बचने और बचानेके लिये उपासना तथा व्रतविधान हमारे शास्त्रोंमें वर्णित है। कर्कराशिपर सूर्यके आगमनके साथ ही दक्षिणायन कालका प्रारम्भ हो जाता है और कार्तिकमास इसी दक्षिणायन और चातुर्मास्यकी अवधिमें ही उपस्थित होता है। पुराणादि शास्त्रोंमें कार्तिकमासका विशेष महत्त्व निर्दिष्ट है। हर मासका यूँ तो अलग-अलग महत्त्व है, मगर व्रत एवं तपकी दृष्टिसे कार्तिकको बहुत महिमा बतायी गयी है—

मासानां कार्तिकः श्रेष्ठो देवानां मधुसूदनः।
तीर्थं नारायणाख्यं हि त्रितयं दुर्लभं कलौ॥

(स्कन्दपु० वै० खं० का० मा० १।१४)

भाव यह है कि भगवान् विष्णु एवं विष्णुतीर्थके सदृश ही कार्तिकमासको श्रेष्ठ और दुर्लभ कहा गया है। कार्तिकमास कल्याणकारी मास माना जाता है।

एक दूसरे वचनमें कहा गया है कि कार्तिकके समान दूसरा कोई मास नहीं, सत्ययुगके समान कोई युग नहीं, वेदके समान कृत्य-अकृत्यबोधक कोई शास्त्र नहीं और गंगाजीके समान कोई तीर्थ नहीं है—

न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्॥
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गङ्गया समम्।

(स्कन्दपु० वै०खं०का०मा० १।३६-३७)

सामान्यरूपसे तुलाराशिपर सूर्यनारायणके आते ही कार्तिकमास प्रारम्भ हो जाता है।

कार्तिकका माहात्म्य पद्मपुराण तथा स्कन्दपुराणमें बहुत विस्तारसे उपलब्ध है। कार्तिकमासमें स्त्रियाँ ब्राह्ममुहूर्तमें स्नानकर राधा-दामोदरकी पूजा करती हैं।

कलियुगमें कार्तिकमास-व्रतको मोक्षके साधनके रूपमें दर्शाया गया है। पुराणोंके मतानुसार इस मासको चारों पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको देनेवाला माना गया है। स्वयं नारायणने ब्रह्माको, ब्रह्माने नारदको और नारदने महाराज पृथुको कार्तिकमासके सर्वगुणसम्पन्न माहात्म्यके संदर्भमें बताया है।

इस संसारमें प्रत्येक मनुष्य सुख, शान्ति और परम आनन्द चाहता है। कोई भी यह नहीं चाहता कि उसे अथवा उसके परिवारजनोंको किसी तरहका कोई कष्ट, दुःख एवं अशान्तिका सामना करना पड़े। परंतु प्रश्न यह है कि दुःखोंसे मुक्ति कैसे मिले? हमारे शास्त्रोंमें संत्राससे मुक्ति दिलानेहेतु कई उपाय निर्दिष्ट हैं, उनमें कार्तिकमासके स्नान-व्रतकी अत्यन्त महिमा बतायी गयी है और बताया गया है कि इस मासका स्नान-व्रत लेनेवालोंको संयम, नियमोंका पालन करना चाहिये तथा श्रद्धा-भक्तिपूर्वक भगवान्‌की आराधना करनी चाहिये। कार्तिकमें पूरे माह ब्राह्ममुहूर्तमें किसी नदी, तालाब, नहर या पोखरमें स्नानकर भगवान्‌की पूजा की जाती है।

इस मासमें व्रत करनेवाली स्त्रियाँ अक्षयनवमीको आँवला-वृक्षके नीचे भगवान् कार्तिकेयकी कथा सुनती हैं। तदुपरान्त जहाँ ब्राह्मणको अन्न-धन दानमें दिये जाते हैं, वहीं भतुआके अन्दर गुप्तदान भी दिया जाता है। इसके साथ ही कुँआरों-कुँआरियों एवं ब्राह्मणोंको आँवला-वृक्षके नीचे विधिवत् भोजन कराया जाता है। वैसे तो पूरे कार्तिकमासमें दान देनेका विधान है। कहीं-कहीं तो अक्षयनवमीके दिन मेला भी लगता है।

कार्तिकमास कई अर्थोंमें अन्य मासोंसे अधिक महत्त्व रखता है। इस मासकी अमावास्याको देशभरमें प्रकाशपर्व मनानेकी प्रथा है। इस प्रकाशपर्वको सभी धूमधामसे मनाते हैं। कहा जाता है कि प्रकाशपर्व अथवा दीपावलीके दिन विष्णुप्रिया माता लक्ष्मी सर्वत्र भ्रमण करती हैं और अपने भक्तोंको हर तरहसे धन-धान्यसे परिपूर्ण करती हैं।

स्कन्दपुराणके वैष्णवखण्डमें कार्तिकव्रतके महत्त्वके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषयमें कहा गया है—

रोगापहं पातकनाशकृत्परं सद्बुद्धिदं पुत्रधनादिसाधकम्।
मुक्तेर्निदानं नहि कार्तिकव्रताद् विष्णुप्रियादन्यदिहास्ति भूतले॥

(स्कन्दपु० वै०खं०का०मा० ५। ३४)

इस मासको जहाँ रोगापह अर्थात् रोगविनाशक कहा गया है, वहीं सद्बुद्धि प्रदान करनेवाला, लक्ष्मीका साधक तथा मुक्ति प्राप्त करानेमें सहायक बताया गया है।

कार्तिकमासभर दीपदान करनेकी विधि है। आकाश-दीप भी जलाया जाता है। यह कार्तिकका प्रधान कृत्य है। कार्तिकका दूसरा प्रमुख कृत्य तुलसीवन-पालन है। वैसे तो कार्तिकमें ही नहीं, हर मासमें तुलसीका सेवन कल्याणमय कहा गया है, किंतु कार्तिकमें तुलसी-आराधनाकी विशेष महिमा है। एक ओर आयुर्वेदशास्त्रमें तुलसीको रोगहर कहा गया है, वहीं दूसरी ओर यह यमदूतोंके भयसे मुक्ति प्रदान करती है। तुलसी-वन पर्यावरणकी शुद्धिके लिये भी महत्त्वपूर्ण है। भक्तिपूर्वक तुलसीपत्र अथवा मंजरीसे भगवान्‌का पूजन करनेसे अनन्त लाभ मिलता है। कार्तिकव्रतमें तुलसी-आरोपणका विशेष महत्त्व है। भगवती तुलसी विष्णुप्रिया कहलाती हैं।

इसी तरह कार्तिकमासव्रतका तीसरा प्रमुख कृत्य है—भूमिपर शयन। भूमिशयन करनेसे सात्त्विकतामें वृद्धि होती है। भूमि अर्थात् प्रभुके चरणोंमें सोनेसे जीव भयमुक्त हो जाता है।

कार्तिकका चौथा मुख्य कार्य ब्रह्मचर्यका पालन बताया गया है। पाँचवाँ द्विदलवर्जनको माना गया है। उड़द, मूँग, मसूर, चना, मटर, राई वगैरहकी गणना द्विदलमें की जाती है।

द्विदलं तिलतैलं च पक्वान्नं मूल्यदूषितम्।
अवदुष्टं शब्ददुष्टं वर्जयेत् कार्तिकव्रती॥

कार्तिकव्रतीको चना, मटर आदि दालों, तिलका तेल, पक्वान्न, भाव तथा शब्दसे दूषित पदार्थोंका त्याग करना चाहिये।

विष्णुसंकीर्तन कार्तिकमासका मुख्य कृत्य है। संकीर्तनसे वाणीको शुद्धता मिलती है। कलियुगमें तो इसका और भी अधिक महत्त्व है—**'कलौ हरिकीर्तनात्।'** कथाश्रवणसे पापोंका नाश होता है, बुद्धि सदाचारी बनती है। कार्तिकव्रतीको चाहिये कि वह गीता, श्रीमद्भागवत और श्रीरामचरितमानस आदिका श्रवण करे। इसके अलावा कार्तिकव्रतीके लिये गोदान, अन्नदान, विष्णुपूजन, सत्य, अहिंसा आदि धर्मोंका पालन आवश्यक है।

यदि कार्तिकमासके महत्त्वको वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें देखें तो यह पायेंगे कि अश्वत्थपूजा, तुलसीवन-पालन एवं पूजन, आँवला-वृक्षका पूजन, गोपूजा, गंगास्नान तथा पूजन, गोवर्धनपूजा आदिसे पर्यावरण शुद्ध होता है और मनुष्य प्रकृतिप्रिय बनता है। इस व्रतसे इहलोक और परलोक दोनोंमें यश, बुद्धि, बल, धन तथा सत्संगकी प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति इस मासको श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वाससे उत्सवकी भाँति मनाता है, वह सब तरहसे परिपूर्ण हो जाता है।

परम पावन कार्तिकमासका व्रत-विधान— मानव-जीवनमें कार्तिकमास शुचिता, स्नान और व्रतकी दृष्टिसे मोक्षका सर्वोत्तम साधन माना गया है। स्कन्दपुराणमें कार्तिकमासका महत्त्व भगवान् विष्णुके सदृश दुर्लभ और श्रेष्ठ बताया गया है। काशी जो सप्तपुरियोंमेंसे एक है, परम मोक्षदायिनी है और जहाँ हरिकथा हरका स्वरूप श्रीकाशीविश्वनाथजी स्वयं हैं, जहाँ गंगाजी प्रवाहित होती हैं, ऐसी मोक्षदायिनी नगरी काशीमें तथा अन्य पावन तीर्थोंमें अथवा घरमें रहकर कार्तिकमासका स्नान, व्रत एवं तप किस प्रकार किया जाना चाहिये, इसका वर्णन शास्त्रोंमें इस प्रकार दिया गया है—

कार्तिकव्रतीको सर्वप्रथम गंगा, विष्णु, शिव तथा सूर्यका स्मरणकर जलमें प्रवेश करना चाहिये। तदनन्तर नाभिपर्यन्त जलमें खड़े होकर विधिपूर्वक स्नान करना चाहिये।

गृहस्थ व्यक्तिको काला तिल तथा आँवलेका चूर्ण लगाकर स्नान करना चाहिये, परंतु विधवा तथा संन्यासियोंको तुलसीके पौधेकी जड़में लगी हुई मृत्तिकाको लगाकर स्नान करना चाहिये। सप्तमी, अमावास्या, नवमी, द्वितीया, दशमी तथा त्रयोदशी—इन तिथियोंमें तिल एवं आँवलेका प्रयोग वर्जित है।

तिलामलकचूर्णेन गृही स्नानं समाचरेत्।
विधवास्त्रीयतीनां तु तुलसीमूलमृत्सया॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तमी दर्शनवमी द्वितीया दशमीषु च।
त्रयोदश्यां न च स्नायाद्धात्रीफलतिलैः सह॥

कार्तिकमासमें पितरोंका तर्पण करनेसे पितरोंको अक्षयतृप्तिकी प्राप्ति होती है। तर्पणके पश्चात् व्रतीको जलसे बाहर आकर शुद्ध वस्त्र धारणकर भगवान् विष्णुका पूजन करना चाहिये।

किसी प्रकारके तामसी एवं उत्तेजक पदार्थोंका सेवन व्रतीको नहीं करना चाहिये। पराये अन्नका भक्षण, किसीसे द्रोह करना तथा परदेशगमन भी व्रतीको करना उचित नहीं है।

कार्तिकव्रतीको ब्रह्मचर्यका पालन, भूमिशयन, दिनके चतुर्थ प्रहरमें पत्तल आदिपर भोजन करना चाहिये। कार्तिकमासमें स्नान एवं व्रत करनेवालेको केवल नरकचतुर्दशी (कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी)-को ही तेल लगाना चाहिये। शेष दिनोंमें तेल लगाना वर्जित है। इसके अतिरिक्त कार्तिकव्रतीको लौकी, गाजर, कैथ, बैगन आदि तथा बासी अन्न, पराया अन्न, दूषित अन्नका भी भक्षण नहीं करना चाहिये। व्रतीको चाहिये कि वह मुनिवृत्तिसे रहे।

कार्तिकव्रत करनेवाले मानवको देखकर यमदूत इस प्रकार पलायन कर जाते हैं, जिस प्रकार सिंहसे पीड़ित हाथी भाग खड़े होते हैं। इस भूतलपर भुक्ति और मुक्तिप्रदायक जितने भी तीर्थस्थान हैं, वे सभी कार्तिकव्रतीके देहमें निवास करते हैं।

विष्णुव्रत करनेवाला प्राणी जिस किसी भी स्थानमें पूजित होकर रहता है, वहाँपर ग्रह-भूत-पिशाच आदि नहीं रहते—

विष्णुव्रतकरो नित्यं यत्र तिष्ठति पूजितः।
ग्रहभूतपिशाचाद्या नैव तिष्ठन्ति तत्र वै॥

उपर्युक्त विधिके अनुसार कार्तिकव्रती प्राणीके पुण्यको चतुर्मुख ब्रह्मा भी कहनेमें समर्थ नहीं हैं। जो भी मानव विष्णुप्रियकारी, समस्त पातकोंके नाशक, सत्पुत्र तथा धनधान्यवृद्धिकारक कार्तिकव्रतका नियमपूर्वक पालन करता है, उसे तीर्थयात्राके महान् फलकी प्राप्ति होती है।

बोध-कथा—

सबसे अच्छेकी तलाश

एक युवकने एक सन्तसे कहा—'महाराज! मैं जीवनमें सर्वोच्च शिखर पाना चाहता हूँ, लेकिन इसके लिये मैं निम्न स्तरसे शुरुआत नहीं करना चाहता। क्या आप मुझे कोई ऐसा रास्ता बता सकते हैं, जो मुझे सीधे सर्वोच्च शिखरपर पहुँचा दे?' सन्त बोले—'अवश्य बताऊँगा। पहले तुम आश्रमके बगीचेसे गुलाबका सबसे सुन्दर फूल लाकर मुझे दो। लेकिन एक शर्त है। जिस गुलाबको तुम पीछे छोड़ जाओगे, उसे पलटकर नहीं तोड़ोगे।' युवक यह आसान-सी शर्त मानकर बगीचेमें चला गया। वहाँ एक-से-एक सुन्दर गुलाब खिले थे। जब भी वह एक गुलाब तोड़नेके लिये आगे बढ़ता, उसे कुछ दूरपर उससे भी अधिक सुन्दर गुलाब नजर आते और वह उसे छोड़ आगे बढ़ जाता। ऐसा करते-करते वह बगीचेके मुहानेपर आ पहुँचा, लेकिन यहाँ उसे जो फूल नजर आये वे एकदम मुरझाये हुए थे। आखिरकार वह फूल लिये बिना ही वापस आ गया।

उसे खाली हाथ देखकर सन्तने पूछा—'क्या हुआ बेटा! गुलाब नहीं लाये?' युवक बोला—'बाबा! मैं बगीचेके सुन्दर और ताजे फूलोंको छोड़कर आगे और आगे बढ़ता रहा, मगर अन्तमें केवल मुरझाये फूल ही बचे थे। आपने मुझे पलटकर फूल तोड़नेसे मना किया था। इसलिये मैं गुलाबके ताजे और सुन्दर फूल नहीं तोड़ पाया।' इसपर सन्त मुसकराकर बोले—'जीवन भी इसी तरहसे है। इसमें शुरुआतसे ही कर्म करते चलना चाहिये। कई बार अच्छाई और सफलता प्रारम्भके कामों और अवसरोंमें ही छिपी रहती है। जो अधिक और सर्वोच्चकी लालसा पाकर आगे बढ़ते ही रहते हैं, अन्तमें उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ता है।' युवक समझ गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आत्मा-परमात्मा और पुनर्जन्म

(श्रीश्यामसुन्दरजी मिश्र)

सम्पूर्ण विश्व एक सर्वोच्च सत्ताकी अवधारणासे सहमत है। भौतिक उपलब्धियोंके चलते कुछ वैज्ञानिक एवं चिन्तनशील लोग ही भ्रमके वशीभूत होकर इस शाश्वत सत्यको नकारनेका दुस्साहस करते हैं, किंतु परिस्थितिजन्य साक्ष्य उन्हें भी इस शाश्वत सत्यको स्वीकार करनेहेतु झकझोरते रहते हैं। इस अद्भुत और अनोखी सृष्टिकी ओर दृष्टिपात करनेपर अनायास ही उस रचनाकार एवं नियन्ताकी सत्ताका भान होने लगता है। फिर भी कुछ लोग यह कहकर स्वयंको चिन्तक सिद्ध करनेका थोथा प्रयास करते ही रहते हैं कि क्या किसीने उसे देखा है? हम बिना देखे उसकी सत्ताको कैसे स्वीकार कर सकते हैं? उन मनीषियोंसे मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने हवाको देखा है? क्या आपने खुशबूकी रंगत देखी है? नहीं न! फिर भी आप उसे महसूस करके उसकी उपस्थितिका भान कर ही लेते हैं। इसके बावजूद भी उसे नकारनेका दुस्साहस करनेवालोंको किस सम्मानसे विभूषित किया जाय, कमसे कम मेरी समझसे तो बाहर है?

आदिग्रन्थ वेद! जिसे परमात्माने परावाणीद्वारा बताया। वह श्रुतिशास्त्र चार वेदोंके रूपमें सम्पूर्ण विश्वका मार्गदर्शन करनेको पर्याप्त है। भू-भाग बाँट लेनेसे सृष्टिके अस्तित्व एवं परमात्माकी कृतिमें अन्तर कैसे आ सकता है? श्रुतिशास्त्रको कपोल-कल्पना कहनेवालोंसे मैं पूछना चाहूँगा कि क्या किसीने अपने जन्मकी प्रक्रिया देखी है? कि वह कब, कहाँ? और कैसे पैदा हुआ? उसे उसके माता-पिता एवं परिवारजनोंने अथवा डॉक्टर या नर्सने ही बताया होगा। ठीक उसी प्रकार हमें आदिग्रन्थ वेदको स्वीकारकर उसपर चिन्तन-मनन करना ही होगा। सम्भव है ऋषियों-मुनियोंके भावार्थको समझनेमें कहीं त्रुटि हो जाय, क्योंकि हम-आप मनुष्य हैं, परमात्मा नहीं। मेधाशक्ति समय एवं कालकी गुलाम नहीं! वह आज भी अतुलनीय हो सकती है। अतः इस विषयपर चिन्तन तो किया जा सकता है, पर इसे नकारना तर्कसंगत नहीं।

आज हमने धर्मकी परिभाषा अपने-अपने बुद्धि-विवेकसे गढ़ ली है, पर क्या इस सत्यको नकारा जा सकता है कि जीवमात्रमें उसी परमसत्ताकी ऊर्जाका अंश समाया है, जिसे आदिसनातन धर्मने आत्मा कहकर स्वीकार किया है और आधुनिक विज्ञानने अथक प्रयासोंके बाद 'गॉड-पार्टिकल' कहकर सम्बोधित किया है। आंग्लभाषामें गॉडका अर्थ ईश्वर होता है। अतः यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिये कि ईश्वर सत्य है अथवा कल्पना। रही धर्मकी बात! तो हम सभी इंसान हैं और इंसानियत ही हमारा मूल धर्म है। जिसकी प्रेरणा हमें सत्-शास्त्रों, आप्त पुरुषोंके उपदेशों तथा आत्माद्वारा मिलती रहती है। आत्मा सदैव ही गलत कार्योंसे हमें रोकती है। उसकी उपेक्षा करके ही हम गलत कार्योंको अंजाम देते हैं। आत्माकी उपस्थिति ही हमें सुख-दुःख, गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास आदिका अनुभव कराती है और हमें क्रियाशील रखती है। आत्माके शरीर छोड़ते ही हम संज्ञाहीन और निष्क्रिय हो जाते हैं। विज्ञान लाख प्रयासोंके बावजूद मृत्युपर विजय न पा सका। फिर अहंकार किस बातका? भ्रम किस बातका?

आत्माके अजर-अमर होनेका सबसे बड़ा प्रमाण पुनर्जन्मकी सत्य और प्रमाणित घटनाएँ हैं, जिनके समक्ष आधुनिक विज्ञानने भी घुटने टेक दिये हैं। इसके पूर्व कुछ सिरफिरे वैज्ञानिक ये दावा करते नहीं अघाते थे कि आत्मा एक रासायनिक द्रव (जैवद्रव) है, जो शरीरके साथ ही समाप्त हो जाता है। हमारे वेद-पुराणोंने तो एक स्वरसे आत्माको अजर, अमर, अविनाशी बताया है। न कोई धातु उसे काट सकती है न ही अग्नि जला सकती है। न तो किसीमें ये क्षमता है कि उसे रोक ले। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैज्ञानिकोंने बुलेटप्रूफ ताबूतमें मृतप्राय इंसानको इस तरह पैक कर दिया कि हवा भी उसमें न तो प्रवेश कर सके, न ही बाहर निकल सके, किंतु ज्यों ही मृतप्राय व्यक्तिकी देहका आत्माने त्याग किया, वह बुलेटप्रूफ शीशेको तोड़कर निकल गयी। ५ वर्षतकके बालक-बालिकाओंने अपने पूर्वजन्मके क्रिया-कलापों एवं घटनाओंको जिस तरहसे उजागर किया, वे हर कसौटीपर खरी उतरीं। वैज्ञानिक भी इसे नकारनेका साहस न कर सके। फिर बहसका प्रश्न ही कहाँ उठता है?

मूर्तिपूजा, भजन-कीर्तन एवं प्रार्थनाओंका सृजन हमारे चिन्तकोंने मात्र इसलिये किया है कि हम उस परमसत्ताको भूलने न पायें। गोस्वामी तुलसीदासजी-जैसे महान् सन्त एवं युगद्रष्टाने धर्मकी जो परिभाषा प्रस्तुत की है, क्या विश्वका कोई भी चिन्तक इससे अलग कोई परिभाषा गढ़ सकता है? सन्त तुलसीदासजीने मात्र एक चौपाईमें ही धर्मकी अकाट्य परिभाषा गढ़ दी है—

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥

पीड़ा इस बातकी है कि अपना वर्चस्व कायम रखनेकी लालसासे अनेक बुद्धिजीवियोंने अलग-अलग धर्म और अलग-अलग परिभाषाएँ गढ़ ली हैं। यदि मानव जाति आदि सनातन धर्मपर गहन चिन्तन करके सुख एवं शान्तिका मार्ग खोजनेका प्रयास करे, तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि विश्वमें जो मारकाट, लूटपाट, एवं व्यभिचार हो रहे हैं, उनको समाप्त होनेमें अधिक समय न लगेगा। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमने आदि सनातन धर्मको सिर्फ हिन्दुओंका धर्म मान लिया है। जबकि निर्विवाद सत्य यह है कि यह मानवमात्रका धर्म है।

सत्य अटल और अकाट्य होता है। हमारे आर्यसमाजी बन्धु और कुछ अन्य मतावलम्बी ईश्वरको निराकार मानते हैं। ठीक यही धारणा हमारे वेद-उपनिषदोंकी है। वे भी एक ब्रह्म, जो निराकार है, की घोषणा करते नहीं अघाते। फिर परमात्माके विषयमें विरोध किस बातका? अन्तरमात्र नामोंका है। हमलोग परमात्माको ईश्वर कहते हैं, दूसरे लोग कुछ और कहते हैं, जो कि एक ही है। जो हो ही नहीं सकता, वह तो जीवमात्रका है और एक है। बात उठती है मूर्तिपूजाकी। तो हमारे यहाँ आर्यसमाजी भी इसके पक्षधर नहीं हैं। किंतु आकार देकर पूजनेका नाम यह है कि हम मूर्तिको परमात्माका प्रतीक मानकर नतमस्तक होकर पूर्ण मनोयोगसे समर्पण करते हैं, जो काफी हदतक हमारे अन्तर्मनमें समा जाती है। समर्पण तो दूसरे धर्मावलम्बी भी करते हैं, किंतु वे बहुधा निराकार ईश्वरके प्रति ही समर्पण करते दीखते हैं। साथ ही अविवेकपूर्ण अनन्यताके कारण प्राय: उनमें उग्र कट्टरता भी आ जाती है। यह कट्टरता निश्चय ही परित्याज्य है। रही बात साकार या निराकारकी, तो दोनों ही अपने-अपने स्थानपर ठीक हैं। वस्तुतः सभीकी निष्ठा ठीक है, इससे इनकारका प्रश्न ही नहीं उठता, किंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणसे देखनेपर प्रतीत होता है कि जो प्रार्थना तथा समर्पण प्रत्यक्ष परमात्माके प्रतीकके सम्मुख किया जाता है, वह अन्तर्मनकी असीम गहराइयोंमें उतर ही जाता है। उसकी तुलनामें निराकार ब्रह्मकी उपासना कम प्रभावी होती है। इसमें दो राय हो ही नहीं सकती। प्रत्येक धर्मावलम्बीको इस सत्यको पूरी शिद्दतसे स्वीकार कर लेना चाहिये कि ईश्वर एक ही है, जो सम्पूर्ण मानव जातिका ही नहीं, जीवमात्रका है। इंसान सृष्टिका सबसे बुद्धिमान् प्राणी है और हर इंसान सुख-शान्तिकी कामना करता है, किंतु ईश्वरके प्रति अनासक्ति ही उसे अत्याचार एवं अनाचारकी ओर प्रेरित करती है। सन्त तुलसीने ***'भय बिनु होइ न प्रीति'*** के सत्यका उद्घाटन करते हुए यह भी सिद्ध किया है कि अनीश्वरवादी निरंकुश होकर अनाचार एवं अत्याचारकी ओर अग्रसर होता है। अत: हर धर्मावलम्बी यदि आदि ग्रन्थ वेदोंको मानवमात्रका ग्रन्थ मानकर उसपर अमल करता है तो नि:सन्देह वर्तमान त्रासदीसे मुक्ति मिल जायगी। सम्भव है थोड़ा समय लगे, किंतु इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प भी शेष नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक शाश्वत यक्ष-प्रश्न—मेरे साथ ऐसा नहीं होगा

(श्रीसीतारामजी गुप्ता)

महाभारतकी कथामें एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है—यक्ष-प्रश्न। पाण्डवोंके वनवासके अन्तिम दिनोंकी घटना है, जब वनमें उनका सामना यक्षसे हुआ और उसके प्रश्नोंका उत्तर दिये बिना सरोवरसे पानी पीनेके प्रयासमें नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम—ये चारों भाई मृतप्राय होकर वहीं गिर पड़े। बादमें युधिष्ठिरने यक्षके सभी प्रश्नोंका सही उत्तर देकर अपने भाइयोंकी रक्षा की। यक्षद्वारा युधिष्ठिरसे पूछे गये महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंमेंसे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह भी था कि संसारमें सबसे बड़े आश्चर्यकी बात क्या है?

युधिष्ठिरने इस प्रश्नका उत्तर दिया कि हर रोज हमारी आँखोंके सामने न जाने कितने लोग मृत्युके मुखमें समा जाते हैं, लेकिन फिर भी हममेंसे बचे हुए लोग यही कामना करते हैं कि हम अमर रहें। यही संसारका सबसे बड़ा आश्चर्य है। इस संसारमें जो आया है, उसे एक-न-एक दिन इस संसारसे जाना ही होगा, लेकिन फिर भी इस प्रकारका आचरण करते हैं कि जैसे उन्हें सदा ही यहाँ रहना है और मृत्यु उनके लिये नहीं है।

यक्षद्वारा पूछे गये अन्य प्रश्नोंके साथ-साथ ये प्रश्न आज भी हमारे समक्ष उस कालके समान ही विद्यमान हैं। प्रश्न इतने महत्त्वपूर्ण थे कि आज यक्ष-प्रश्न एक मुहावरा अथवा प्रतीकात्मक शब्द बन गया है। न केवल यक्षद्वारा युधिष्ठिरसे पूछा गया प्रश्न कि संसारमें सबसे बड़े आश्चर्यकी बात क्या है तथा अन्य प्रश्न आज भी हमारे सम्मुख उत्पन्न एवं उपस्थित हैं, अपितु आजकी परिस्थितियोंके अनुसार अनेकानेक दूसरे नये यक्ष-प्रश्न भी हमारे सम्मुख उत्पन्न एवं उपस्थित हैं, जिनका उत्तर खोजना अनिवार्य प्रतीत होता है।

यदि आजके सन्दर्भमें पूछें कि संसारमें सबसे बड़े आश्चर्यकी बात क्या है, तो एक उत्तर तो यही मिलेगा कि जो लोग अपराधोंमें लिप्त होते हैं, वे अवश्य ही पकड़े जाते हैं और उन्हें सजा भी मिलती है, लेकिन फिर भी जो लोग कतिपय कारणोंसे आजतक गिरफ्तमें नहीं आये, वे यह सोचते हैं कि हम थोड़े ही पकड़े जायँगे। है न आश्चर्यकी बात! आज समाजमें पहलेके मुकाबले विभिन्न प्रकारके अपराधोंकी संख्यामें बेतहाशा वृद्धि हुई है। अपराधोंसे ही नहीं, अपराधियोंको सजा देनेसे भी सामाजिक ढाँचा चरमरा जाता है, जो स्वस्थ समाजके विकासमें बाधक है।

आज नैतिक मूल्योंका ही क्षरण नहीं हो रहा है, अपितु अनेकानेक सामाजिक तथा आर्थिक अपराधोंमें भी वृद्धि हो रही है। बात कहकर पलट जाना, वादा करके मुकर जाना, अमानतमें खयानत, कमजोरका आर्थिक शोषण, सामाजिक-आर्थिक नियमोंकी अनदेखी, सरकारी सम्पत्तिका गबन, पद एवं स्थितिका दुरुपयोग, टैक्स-चोरी, रिश्वतका लेन-देन आदिकी बात छोड़िये; बलात्कार, चोरी, डकैती, अपहरण और हत्या-जैसे संगीन अपराधोंको भी लोग बेखौफ होकर अंजाम दे रहे हैं।

लेन-देनमें विवाद होनेपर मात्र कुछ रुपयोंके लिये किसीकी हत्या कर देना, अवैध प्रेम-प्रसंगोंके चलते पत्नी अथवा पतिकी हत्या कर देना अथवा करवा देना, अपने प्रतिद्वन्द्वियों अथवा विरोधियोंको मरवा डालना आम बात हो गयी है। दहेज कानून अत्यन्त सख्त होनेके बावजूद दहेजके लिये हर साल अब भी न जाने कितने व्यक्ति अनेकानेक युवतियोंको जलाकर अथवा गला घोंटकर मार डालते हैं और स्वयं जिन्दगीभर जेलमें सड़नेको अभिशप्त हैं। यह आजके संसारका एक महान्तम आश्चर्य नहीं है, तो और क्या है?

पिछले दिनों देशकी राजधानी अथवा अन्य बड़े शहरोंमें हुई चर्चित डकैतियों, अपहरण और हत्याओंपर नजर डालिये। अपराधियोंने बड़ी चतुराईसे इन घटनाओंका ताना-बाना बुना, लेकिन अपराधी अथवा हत्यारे पकड़े गये हैं। इसके बावजूद नये अपराधी तथा हत्यारे पैदा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो जाते हैं और अपने कुकृत्योंके परिणामस्वरूप अपना जीवन नरक बनानेको विवश होते हैं। यह आजके समाज एवं संसारका सबसे बड़ा आश्चर्य ही तो है। उर्दूके मशहूर शायर 'आतिश' का एक शेर है—

काश! जमशेद को मालूम होता जाम में।
कासा-ए-सर, कासा-ए-दस्ते गदा हो जायगा॥

जमशेद ईरानका एक प्रसिद्ध बादशाह था। उसके पास एक ऐसा प्याला था, जिसमें वह सारे संसारके भूत, भविष्य और वर्तमानका हाल जान लेता था। कहते हैं कि उसकी मौतके बाद उसकी खोपड़ीको एक भिखारी भिक्षापात्रके रूपमें इस्तेमाल करता था। आतिश इस शेरमें कहते हैं कि काश! जमशेद अपने मशहूर जाम अथवा प्यालेसे अपने बारेमें भी ये पता लगा लेते कि उनका कासा-ए-सर (खोपड़ीनुमा प्याला) कासा-ए-दस्ते-गदा (भिखारीके हाथका प्याला) बन जायगा।

हम सबकी स्थिति भी कमोबेश कुछ-कुछ ऐसी ही प्रतीत होती है। हम सब भी अपने-आपको सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् समझनेकी भूल करते हैं और अपने ज्ञान, अपनी ताकतके सामने किसीको कुछ नहीं समझते। हम सबको एक दिन इस नश्वर संसारसे विदा हो जाना है, फिर भी हम अपने लिये एक ऐसा मुकम्मल बन्दोबस्त करनेकी कोशिश करते हैं, मानो हमें सदाके लिये यहीं रहना है। बन्दोबस्त भी करते हैं तो लूट-खसोट और कत्लो-गारतके द्वारा। क्या कोई बन्दोबस्त और ऐसा बन्दोबस्त कभी स्थायी हो सकता है? ऐसा बन्दोबस्त आजके समाज तथा संसारका सबसे बड़ा आश्चर्य नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

वीरप्पन या लादेन-जैसे कुख्यात दस्यु तथा आतंकवादी ही नहीं, अत्याचारी तथा निरंकुश भ्रष्ट जनप्रतिनिधि भी निश्चित रूपसे अपने गलत कार्योंकी सजा भुगतते हैं। अपने पदोंका दुरुपयोगकर अरबों-खरबोंकी सम्पत्तिका अनुचित संग्रह करनेवाले कई जनप्रतिनिधि और नौकरशाह आज जेलोंमें बन्द हैं अथवा अदालतोंमें आरोपोंका सामना कर रहे हैं। कर्नल मुअम्मर गद्दाफी और सद्दाम हुसैनका जो हश्र हुआ वह किसीसे छिपा नहीं है। कबतक दूसरोंकी आँखोंमें धूल झोंकते रहोगे? चलो दूसरोंसे तो बच गये, पर अपने-आपसे कैसे बचोगे? अपनी अन्तरात्माकी आवाजको कैसे अनसुनी करोगे? यदि हम अपनी अन्तरात्माकी आवाजको अनसुनी करनेका प्रयास करते हैं, तो यह सचमुच संसारका एक बड़ा आश्चर्य ही है।

कर्नल मुअम्मर गद्दाफी-जैसा शक्तिशाली व्यक्ति भी अपने अन्तिम दिनोंमें जान बचानेके लिये छुपता फिरा, जूठन खाकर जीवित रहा और ऐसे नारकीय जीवनकी भीख माँगनेके लिये भी रोया-गिड़गिड़ाया, लेकिन इसके बावजूद उसे जीवनकी भीख नहीं मिल पायी। एक अपराधीके लिये इससे बड़ी सजा और क्या हो सकती है? कुख्यात दस्यु अपराधी तथा आतंकवादीको सजा मिलना कोई आश्चर्यकी बात नहीं। हाँ, वे यह सोचें कि उन्हें सजा नहीं मिलेगी, उनका ये सोचना इस संसारका एक बड़ा आश्चर्य हो सकता है।

रोमके सम्राट् नीरोसे लेकर हिटलर, मुसोलिनी, ईदी अमीन और आजके बाहुबली जनप्रतिनिधियोंतक सभी अपने-आपको जायज ठहरानेका प्रयास करते हैं। हम भी हमेशा अपने दुष्कृत्योंको जायज ठहरानेका प्रयास करते हैं। हम प्राय: यही सोचते हैं कि हमारी बात और है। मैं अपराध करके बच जाऊँगा। मेरे साथ ऐसा नहीं होगा, जो आम अपराधीके साथ होता है। लेकिन क्यों? क्योंकि मैं जिस स्तरतक झूठ बोलता हूँ, चोरी अथवा अन्य अपराध करता हूँ, वहाँतक जायज है, उससे ज्यादा नाजायज। जायजको सजा कैसे मिल सकती है? नाजायजको सजा मिलनी ही चाहिये। हम करें तो ठीक, और वही काम दूसरा करे तो गलत? हम करें तो विवशता और अन्य कोई करे तो अपराध! इस प्रकारकी खामखयालीमें जीना भी किसी बड़े आश्चर्यसे कम नहीं कहा जा सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीर्थ-दर्शन— श्रीशारंगधर बालाजी मन्दिर, बुलडाणा-महाराष्ट्र

(डॉ० श्रीसूरज जयप्रकाशजी शर्मा)

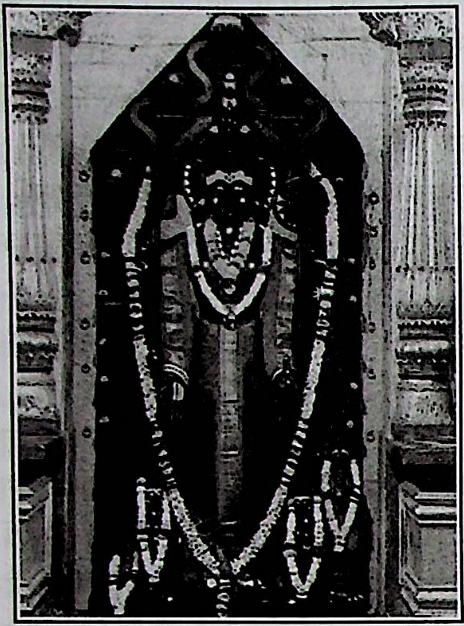

सृष्टिके साथ उत्पन्न होनेवाली पवित्र नदी पैनगंगा (प्राणहिता)-के तटपर श्रीशारंगधर बालाजीकी मूर्ति विराजमान है। इनका ध्यान-श्लोक इस प्रकार है—

कंजाक्षं भुवनैकसुन्दरतनुं भव्यं शशांकद्युतिं,
भ्राजच्छंखगदाब्जचक्रकरजं श्री-भूमिसिद्ध्यान्वितम्।
ब्रह्माद्यैः सनकादिभिः स्तुतपदं भ्रान्तं प्रणीतातटे,
वन्देऽहं सततं त्रिविक्रमपदं श्रीशार्ङ्गपाणिं प्रभुम्॥

अर्थात् जिन कमलनयन भगवान्‌का श्रीविग्रह तीनों भुवनोंमें सर्वाधिक सुन्दर है, जिनकी भव्य देहकान्ति चन्द्रमाकी कान्ति-जैसी है। जिनके हाथोंमें शंख, चक्र, गदा एवं पद्म शोभायमान हैं, जो पृथ्वीदेवी एवं श्रीदेवीसे समन्वित एवं सिद्धियोंसे संवलित हैं। ब्रह्मा आदि देवगण तथा सनकादि ऋषिगण जिनके श्रीचरणोंका स्तवन करते रहते हैं, जो प्रणीताके तटपर उल्लसित हो रहे हैं; शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले उन प्रभु त्रिविक्रमकी मैं सतत वन्दना करता हूँ।

मूर्तिका इतिहास यह है कि महाराष्ट्रके जिला-बुलडाणा, तालुका मेहकरमें विश्वकी सबसे ऊँची यानी साढ़े ग्यारह फुट ऊँची चार फुट चौड़ी और दो फुट जड़ी यह मूर्ति काले रंगके गण्डकी पाषाण (पत्थर)-से बनी हुई है। मूर्तिके साथ श्रीमहालक्ष्मी और श्रीभूदेवीके विराजमान होनेसे भक्तोंको श्रीलक्ष्मीनारायणके दर्शनका लाभ होता है।

भगवान्‌के चरणकमलोंमें जय और विजय विराजमान हैं। श्रीकी मूर्ति चतुर्भुज होनेके साथ-साथ हाथोंमें शंख, चक्र, गदा, पद्म है, गलेमें वैजयन्ती मालाके साथ कौस्तुभमणि है, हाथोंपर हस्तरेखा है, छातीपर भृगुऋषिद्वारा अंकित चरणकमल है। भगवान् कमलपत्रपर विराजमान हैं। भगवान्‌के मूर्तिके ऊपरी भागमें ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश भगवान्‌के विराजमान होनेसे इन्हें त्रिबालाजी भी कहते हैं। मूर्तिपर भगवान्‌के दशावतार भी अंकित हैं, मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह तथा वामन अवतार भगवान्‌के बायें बाजूमें और परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध तथा कल्कि-अवतार भगवान्‌के दाहिने बाजूमें हैं। पैरमें पैजण तथा चरणोंमें गरुड़ भगवान् विराजमान हैं। जो बालाजी भक्त तिरुपति नहीं जा सकते। वे अपनी मनौतियाँ देनेके लिये यहाँ आते हैं। इसीलिये इन्हें प्रत्ती बालाजी भी कहते हैं, अपने मनमें जो भाव रहते हैं, वह भाव ही श्रीबालाजीके मुखमण्डलपर दिखायी देते हैं। हम खुश हैं तो भगवान् भी खुश दिखते हैं, यदि हम किसी दुःखसे नाराज हैं, तो भगवान् भी हमें नाराज दिखायी देते हैं।

श्रीबालाजी महाराजको हर वारके अलग-अलग पोशाक पहनाये जाते हैं, जैसे बुधवारको सफेद (श्वेत) तो गुरुवारको पीले रंगका। श्रीबालाजी महाराज शुभकार्य सिद्ध करनेवाले और मनकी इच्छा पूर्ण करनेवाले होनेसे इन्हें मराठी भाषामें 'नवसाला पावणारा बालाजी' भी कहते हैं।

दर्शन करनेके बाद लगता है कि मूर्ति भूतलपर आकर स्वयं भगवान् विश्वकर्माने बनायी है। इस दुर्लभ मूर्तिका इतिहास यह है कि यह मूर्ति ७ दिसम्बर, १८८८ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मार्गशीर्ष शुद्ध पंचमी (नागादी दीपावली)-के शुभदिन जमीनमेंसे उत्खननसे निकली है। जबतक यह मूर्ति जमीनमें थी, तबतक दाऊला नामक एक आदमी वहीं आस-पास घूमा करता था। कड़ी धूप और ठण्डीमें भी रातको वही सोता था, वहाँ बहुत प्रमाणमें झाड़ी भी थी; क्योंकि वह नदीका किनारा था। दाऊला महाराज अंगमें चोली तथा छोटी लंगोटी पहनते थे। उनकी यह दिनचर्या देखकर गाँवके आस-पासके देहातके लोग उन्हें कहते थे कि महाराज इस झाड़ीमें आप अकेले क्यों रहते हो? जबाव मिलता था—माझा देव तेथे प्रकटा आहे (मेरे भगवान् वहाँ अकेले हैं) इसीलिए रहता हूँ। उस वक्त अपना भारत देश पारतन्त्र्यमें था। देशपर अंग्रेजोंका शासन चल रहा था, अंग्रेजोंने सरकारी कार्यालय बनानेके लिये उसी जगहको चुना और वहाँ मजदूरोंद्वारा खुदाईका काम प्रारम्भ हुआ, तब अन्दरसे आवाज आ रही थी। 'धीरे खोदो मैं अन्दर हूँ।' मजदूर घबरा गये और गाँवमें भागे। थोड़ी देरमें गाँवके प्रतिष्ठित लोग सर्वभाषिक विप्र समाज, मारवाड़ी वैश्य, क्षत्रिय समाज, गुजराती लोग वहाँ उपस्थित हो गये और खुदाईका काम सावधानीसे होने लगा, थोड़ी ही देरमें चंदनकी पेरीमें चंदनके भूसेके अन्दर श्रीजीकी मूर्ति मिली, साथमें एक ताम्रपत्र भी मिला, भूमिमेंसे सुन्दर मूर्ति मिलनेकी भूरि-भूरि प्रशंसा गाँव-गाँवमें फैल गयी। उस वक्त देशपर ब्रिटिश सत्ता और अंग्रेजोंकी पुराण वस्तु संग्रह करनेकी आदतसे 'मूर्ति इंगलैण्ड ले जानेके लिये ले आवो' ऐसा आदेश बुलडाणा, जिला-कलेक्टरको दिया। ऐसा आदेश आनेसे गाँवके लोग घबरा गये थे, मगर अंग्रेज रानी विक्टोरियाका जाहीरनामा (आदेश) इस प्रकार था कि जिस मूर्तिकी पूजा-अर्चना हो रही है, उस मूर्तिको हाथ मत लगावो। इस आधारपर विप्र समाजने गाँववालोंकी मददसे रातको १ बजे प्राणप्रतिष्ठा करके मूर्तिकी स्थापना की और पूजा-अर्चना प्रारम्भ कर दी, इसीलिये अंग्रेज मूर्तिको हाथ नहीं लगा सके। परंतु मूर्तिके साथ निकला हुआ ताम्रपत्र ले गये, वह अभी लंदनमें है। इस प्रकार गाँववालोंने भगवान्‌की कृपासे ही मूर्तिको बचाया है। कुछ दिनोंके बाद मन्दिरके पुजारीके स्वप्नमें भगवान्‌ने कहा था कि 'मेरा भाई वहाँ रह गया है, उसे निकालकर यहाँ ले आओ।' स्वप्न सच्चा है या झूठा—यह देखनेके लिये वहाँ जानेपर एक मूर्ति और मिल गयी, उसे श्रीबालाजीका छोटा भाई कहते हैं। मन्दिरका काम कोरीव पत्थरोंसे बना हुआ है। आस-पास श्रीगणेश, माँ दुर्गा, केशवराज, नागदेवता और भगवान् शिवके छोटे-छोटे मन्दिर हैं। अग्रवाल समाजके एक सद्गृहस्थने अपनी पूरी जायदाद भगवान्‌के लिये और मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिये अर्पण कर दी है। कहते हैं कि इस नगरीमें मेघंकर और पासके लोणार गाँवमें लवणासुर नामके राक्षस बहुत ही ऊधम मचा लोगोंपर अत्याचार कर रहे थे। तब भगवान्‌के वहाँ प्रकट होकर अपने शार्ङ्ग धनुषसे, जो समुद्रमन्थनसे निकला था, उससे मेघंकरका वध किया था, जब मेघंकर मरणासन्न होने लगा तो भगवान्‌से कहने लगा—हे भगवन्! मेरे लिये भी कुछ तो करो, तब भगवान्‌ने उस नगरीका मेहकर नाम रखा। भगवान्‌ने मेघंकरको मुक्ति देकर शार्ङ्ग धनुषके साथ मेघंकरको अपने सिरमुकुटमें धारण किया है। लवणासुरके वधके बाद वहाँ लोणार गाँवमें खारे पानीके सरोवरका निर्माण हुआ है, ऐसा भी कहते हैं, उसे सरकारने पर्यटक क्षेत्र घोषित किया है, वहाँ प्रतिवर्ष पापड खार (क्षार) निकलता है, जो सरकारके नियंत्रणमें है। श्रीबालाजी मन्दिरमें प्रतिवर्ष नागादि दीपावलीसे दत्तजयन्तीतक भगवान्‌का अवतरण-उत्सव धूमधामसे मनाया जाता है। इस अवसरपर कथा, प्रवचन, रक्तदान-शिविर, आरोग्य-शिविर आदि आयोजित होते हैं।

उसी प्रकार गोकुल अष्टमी, रामनवमी आदिके उत्सव भी मन्दिरमें धूमधामसे होते हैं। विप्र समाज घी और हल्दी देकर पुजारीद्वारा भगवान्‌की छातीपर मालिश कराकर भृगु ऋषिद्वारा किये गये अपराधकी भगवान्‌से आर्त्तभावसे क्षमा-याचना करता है। भगवान् दयालु हृदयके तो हैं ही, क्षमाशील भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्त-चरित—

सन्त विसोबा सराफ

पण्ढरपुरसे पचास कोसपर, औंढ़िया नागनाथ एक प्रसिद्ध शिवक्षेत्र है। यहींपर यजुर्वेदी ब्राह्मणकुलमें विसोबाका जन्म हुआ था। सराफीका काम करनेके कारण ये सराफ कहे जाते थे। विसोबाके घरमें साध्वी पत्नी और चार लड़के थे। घरसे ये सम्पन्न थे। इनका गृहस्थ-जीवन सादा और पवित्र था। घरके कामकाज करते हुए भी इनके मुखसे बराबर पाण्डुरंगका नाम निकला करता था और चित्त उन्हीं श्रीविट्ठलमें लगा रहता था। अतिथिसेवा तो गृहस्थका सर्वोपरि कर्तव्य है। इनके यहाँसे कभी भी अतिथि बिना सत्कार पाये जाता नहीं था। अतिथिको साक्षात् नारायण समझकर ये उसकी पूजा करते थे।

एक बार दक्षिणदेशमें घोर दुर्भिक्ष पड़ा। अन्न मिलना दुर्लभ हो गया। क्षुधासे पीड़ित हजारों स्त्री-पुरुष विसोबाके द्वारपर एकत्र होने लगे। विसोबाने समझा कि नारायणने कृपा की है। इतने रूपोंमें वे सेवाका सौभाग्य देने पधारे हैं। वे खुले हाथों लुटाने लगे। जो आता, तृप्त होकर जाता। भीड़ बढ़ती गयी। अन्नभण्डार समाप्त हो गया। रुपयेसे बहुत महँगा अन्न खरीदकर बाँटा जाने लगा। बिसोबा निर्धन हो गये, पर भीड़ तो बढ़ती ही गयी। घरके गहने, बर्तन आदि बेचकर भी अभ्यागतोंका विसोबाने सत्कार किया। जो एक दिन नगरसेठ था, वही कंगाल हो गया। संसारके लोग हँसी करने लगे। कोई मूर्ख कहता था, कोई पागल बतलाता था। धन होनेपर जो चाटुकारी किया करते थे, वे ही व्यंग्य कसने लगे। किंतु विसोबाको इन बातोंकी चिन्ता नहीं थी। वे तो अभ्यागतोंके रूपमें नारायणकी सेवा करते थे।

निरन्तर बाँटा ही जाय तो कुबेरका कोष भी समाप्त हो जायगा। विसोबाके पास कुछ भी नहीं बचा। अब कंगाल, भूखे अभ्यागतोंका स्वागत कैसे हो? स्वयं नारायण द्वारपर दो मुट्ठी अन्न माँगने आयें तो क्या उन्हें लौटा दिया जा सकेगा? परंतु देनेके लिये अन्न आये कहाँसे? विसोबाने अपने गाँवसे कई कोस दूर काँसे गाँव जाकर वहाँके पठानसे कई हजार रुपये ब्याजपर लिये। पठान इनको नगरसेठ जानता था। अतः उसने रुपये दे दिये। इनके आनन्दका पार नहीं रहा। घर आकर सब रुपयोंका अन्न ले लिया गया और वह दरिद्रनारायणकी सेवामें लगने लगा। गाँवके लोगोंको इनके कर्ज लेनेकी बातका पता लग गया। द्वेषियोंने जाकर पठानसे इनकी वर्तमान दशा बता दी। वह आकर इनसे रुपये माँगने लगा। इन्होंने कहा—'सात दिनमें मैं रुपये दे दूँगा।' पठान मानता तो नहीं था, पर गाँवके लोगोंने उसे समझाया। लोग जानते थे कि विसोबा अपनी बातके पक्के हैं। सत्यकी रक्षाके लिये वे प्राण भी दे सकते हैं। पठान चला गया।

छः दिन बीत गये। विसोबा कहाँसे प्रबन्ध करें? अब उन्हें कौन कर्ज देगा? वे रात्रिमें अपने भगवान्‌से प्रार्थना करने लगे—'नाथ! आजतक आपने मेरी एक भी बात खाली नहीं जाने दी। आज मेरी लाज आपके हाथ है। विसोबा आज मर जाय, तो भी उसका सत्य बच जायगा। हे हरि! मैं तुम्हारी ही बाट देख रहा हूँ।' नेत्रोंसे अखण्ड आँसूकी धारा चल रही है। विसोबाको अपनी देहका पता ही नहीं। वे प्रार्थना करनेमें तल्लीन हो गये हैं।

सच्चे हृदयकी कातर प्रार्थना कभी निष्फल नहीं गयी। दीनबन्धु प्रभु तो अधम, पामर प्राणीकी भी आर्त प्रार्थना सुन लेते हैं। उनका भक्त प्रार्थना करे और वे स्थिर रहें, यह तो सम्भव ही नहीं है। उन लीलामयने विसोबाके मुनीमका रूप धारण किया और समयपर पठानके पास पहुँच गये। पठानको आश्चर्य हुआ कि ऐसे अकालके समय इतने रुपये विसोबाको किसने दिये; पर मुनीमरूपधारीने उसे समझा दिया कि विसोबाकी साख तथा सच्चाईके कारण रुपये मिलनेमें कठिनाई नहीं हुई। कई आदमियोंके सामने हिसाब करके ब्याजसहित पाई-पाई मुनीमने चुका दिया और पुरनोटपर भरपाईकी रसीद लिखवा ली।

दूसरे दिन विसोबा स्नान करके गीतापाठ करने बैठे तो पुस्तकमें फटा पुरनोट मिला। वे पूजा करके सीधे पठानके घरको चल पड़े। वहाँ जाकर बोले—'भाई!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हारा रुपया पूरे ब्याजसहित दे दूँगा। मुझे कुछ समय दो।' पठान आश्चर्यमें आकर बोला—'आप कहते क्या हैं? आपका मुनीम कल ही तो पूरे रुपये दे गया है। मैंने आपसे रुपये माँगकर गलती की। जितने रुपये चाहिये, आप ले जाइये। आपसे पुरनोट लिखानेकी मुझे कतई जरूरत नहीं।' विसोबाके आश्चर्यका पार नहीं रहा। गाँवके लोगोंने भी बताया कि 'आपका मुनीम रुपया दे गया है।' घर लौटकर मुनीमसे उन्होंने पूछा। बेचारा मुनीम भला, क्या जाने। वह हक्का-बक्का रह गया। अब विसोबाको निश्चय हो गया कि यह सब उनके दयामय प्रभुकी ही लीला है। उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। उनके लिये पाण्डुरंगको इतना कष्ट उठाना पड़ा। सब कुछ छोड़-छाड़कर वे पण्ढरपुर चले आये। ऐसे उदार स्वामीको छोड़कर अब उनका मन अन्यत्र रहनेका नहीं हुआ। वे अब भजनमें लीन हो गये।

श्रीज्ञानेश्वरके मण्डलमें विसोबा पीछे सम्मिलित हुए। उन्होंने योगका अभ्यास किया और सिद्ध महात्मा माने जाने लगे। श्रीज्ञानेश्वरको ये भगवान्‌का अवतार ही मानते थे।

श्रीनामदेवजीको भगवान्‌ने स्वप्नमें आदेश किया कि वे विसोबासे दीक्षा लें। इस भगवदीय आज्ञाको स्वीकार करके जब नामदेव इनके पास आये तो ये एक मन्दिरमें शिवलिंगपर पैर फैलाये लेटे थे। नामदेवको इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। इन्होंने कहा—'नमिया! मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मुझसे पैर उठते नहीं। तू ऐसे स्थानपर मेरे पैर रख दे, जहाँ शिवलिंग न हो।' नामदेवजीने इनके पैर वहाँसे हटाकर नीचे रखे, वहाँ भूमिमेंसे दूसरा शिवलिंग प्रकट हो गया। अब नामदेव समझ गये। वे गुरुदेवके चरणोंपर गिर पड़े। नामदेवजीने अपने अभंगोंमें इनकी बड़ी महिमा गायी है।

बोध-कथा

एक युवककी देशभक्ति

स्वामी विवेकानन्द उन दिनों एक देशसे दूसरे देशकी यात्रापर थे। इसी दौरान वे जापानकी यात्रापर गये। जापानके अनेक स्थानोंका भ्रमण स्वामीजीने किया। एक दिन वे ट्रेनमें बैठकर जापानके किसी शहर जा रहे थे। रास्तेमें उनकी इच्छा हुई कि फलाहार किया जाय। उन्होंने बीचके अनेक स्टेशनोंपर फलोंकी खोज की, किंतु कहीं भी फल उपलब्ध नहीं हुए। स्वामीजी कुछ निराश हो गये। और उनके मुँहसे अनायास निकल पड़ा—'यह कैसा देश है, जहाँ फल भी नहीं मिलते?'

यह बात उनके पास बैठे जापानी युवकको बहुत बुरी लगी। वह जानता था कि फल कहाँ मिलते हैं। अगले स्टेशनपर वह उतरा और स्वामीजीके लिये ढेर सारे फल लेकर आया। उसने अत्यन्त स्नेहसे वे फल स्वामीजीको भेंट किये। स्वामीजीने उसे हृदयसे धन्यवाद दिया और फलोंके दाम पूछे, किंतु युवकने उत्तर नहीं दिया। तब स्वामीजीने उससे कहा—'देखो भाई! संकोच मत करो। तुम इनकी कीमत चुकाये बगैर तो इन्हें लाये नहीं हो। इसलिये बेझिझक इनकी कीमत बता दो, वरना इन फलोंका सेवन करना मेरे लिये मुश्किल हो जायगा।'

तब युवकने बड़ी ही विनम्रतासे कहा—'स्वामीजी! इसका मूल्य यह है कि आप अपने देशमें जाकर यह न कहें कि मेरे देश जापानमें फल नहीं मिलते।' यह सुनकर स्वामीजी जापानी युवककी देशभक्तिके कायल हो गये। कथाका सार यह है कि अपने देशकी प्रतिष्ठाकी किसी भी रूपमें रक्षा करना देशभक्ति है, जो प्रत्येक नागरिकका परम दायित्व है। [श्रीमती अनीताजी कुमावत]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कस न होइ मगु मंगलदाता'

(श्रीसुभासचन्द्रजी बग्गा)

रावणके अत्याचारसे व्याकुल देवता स्वार्थमें अन्धे हो रहे थे। सभी चाहते थे कि भरतजी रामजीसे भेंट न कर पायें। इसके लिये उन्होंने प्रयत्न भी किये। अवधके प्रथम दरबारमें भरतजीने सबसे आशीर्वाद माँगा कि आप सब पंच निश्चय ही मेरा हित मानकर सुन्दर वाणीसे आज्ञा और आशीर्वाद दें, जिससे मेरी विनती सुनकर मुझे अपना दास जानकर श्रीरामचन्द्रजी राजधानीको लौट आयें।

तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी॥
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिं बहुरि रामु रजधानी॥

(रा०च०मा० २। १८३। ४-५)

सदैव स्वार्थमें रत देवताओंको इसमें सन्देह हुआ कि भरतजी श्रीरामचन्द्रजीको लौटाने जाते हैं। इसमें अपने कार्यकी हानि समझ उन्होंने मार्गमें अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ डालीं। पृथ्वी कठोर बनकर उनके पथको कठोर और गर्म बना देना चाहती थी। सूर्य किरणोंके तापसे उन्हें जलाकर उनकी यात्रा रोकना चाहते थे। गर्म वायु और काँटे-कंकड़ आदिसे उनके पैरोंमें छाले पड़ गये। गोस्वामी तुलसीदासजीने लिखा कि भरतजीके पैरोंमें छाले कैसे झलक रहे हैं, जैसे कमलपत्रोंके भीतर ओसके कण हों अर्थात् भरतजीको मार्गमें बहुत कष्ट हुआ।

झलका झलकत पायन्ह कैसें। पंकज कोस ओस कन जैसें॥

(रा०च०मा० २। २०४। १)

पैरोंमें फफोले पड़ गये, पर उस प्रेमीके मुखसे आहतक नहीं निकली। श्रीरामचन्द्रजीके ठहरनेकी जगहों और वृक्षों आदिको देखकर भरतजीके हृदयमें प्रेम रोके नहीं रुकता। निषादराज गुहने जिन स्थानोंपर श्रीरामने विश्राम किया था, उन स्थानोंका संकेत किया तो भरत पागलकी तरह उस धरतीपर लोट जाते और उन वृक्षोंसे लिपट जाते।

और जब भरतजीने प्रयागराजसे वर माँगा कि ***'जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन॥'*** उनका अन्तःकरण शुद्ध समझकर देवताओंका सन्देह दूर हुआ। लज्जासे पृथ्वी पानी-पानी हो गयी। सूर्यने बादलोंकी ओटमें अपनेको छिपा लिया। भरतजीके करुणभावको देखकर देवता भी अपने कार्यको भूल गये। आये तो थे इन्द्रकी आज्ञा मानकर इन्द्रको गोपनीय सूचना देनेके लिये, परंतु प्रेम-मूर्ति भरतके प्रति अपने व्यवहारसे उन्हें क्षोभ हुआ। स्वार्थी देवता श्रीभरतकी प्रेममयी दिव्य स्थिति देखकर भाव-विभोर हो उठे। प्रायश्चित्तस्वरूप, भरतकी दशा देखकर देवता फूल बरसाने लगे। रामभक्तकी सेवामें सारी प्रकृति समर्पित हो गयी। **भगवान्** शब्द पाँच तत्त्वोंको दर्शाता है। 'भ'-से भूमि, 'ग'-से गगन, 'व'-से वायु, 'अ'-से अग्नि और 'न'-से नीर अर्थात् जल। भगवान् रामकी वनयात्रामें ये पाँचों तत्त्व उनके अनुकूल हो गये।

जहाँ-जहाँ श्रीरामचन्द्रजीके चरण चले जाते हैं, उनके समान इन्द्रकी पुरी अमरावती भी नहीं है। धरती उनके अनुकूल हो जाती है।

जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं॥

(रा०च०मा० २। ११३। ३)

भगवान् रामके रास्तेमें बादल छाया करते हैं और देवता पुष्पोंकी वर्षा करते हैं। पर्वत, वन और पशु-पक्षियोंको देखते हुए श्रीरामजी रास्तेमें चले जा रहे हैं। आकाश उनके अनुकूल रहता है।

छाँह करहिं घन बिबुधगन बरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं॥

(रा०च०मा० २। ११३)

भौंरोंकी पंक्तियाँ बहुत ही सुन्दर गुंजार करती हैं और सुख देनेवाली शीतल, मन्द, सुगन्धित हवा चलती रहती है अर्थात् वायु भी श्रीरामके अनुकूल बहती है।

गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारि बहइ सुख देनी॥

(रा०च०मा० २। १३७। ८)

श्रीराम सीताजीसे कहते हैं—मैं अब कुछ मनुष्य-लीला करूँगा। इसलिये जबतक मैं राक्षसोंका नाश करूँ, तबतक तुम अग्निमें निवास करो। ज्योंही श्रीरामने समझाकर कहा, त्योंही श्रीसीताजी प्रभुके चरणोंको हृदयमें धरकर अग्निमें समा गयीं। सीताजीने अपनी छायामूर्ति वहाँ रख दी। इस प्रकार अग्निद्वारा भगवान् रामको सेवा प्राप्त हुई।

तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा॥
जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी॥

(रा०च०मा० ३। २४। २-३)

जिन तालाबों और नदियोंमें भगवान् राम स्नान कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेते हैं, देवसरोवर और देवनदियाँ भी उनकी बड़ाई करती हैं। यहाँ जलतत्त्वद्वारा की गयी सेवाका वर्णन है—

जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं॥

(रा०च०मा० २।११३।६)

यहाँतक कि जगत्‌में जहाँतक जितने देवताओंके वन हैं। सब श्रीरामके वनको देखकर सिहाते हैं। गंगा, सरस्वती, सूर्यकुमारी यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि पुण्यमयी नदियाँ, सारे तालाब, समुद्र, नदी और अनेकों नद सब मन्दाकिनीकी बड़ाई करते हैं।

सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या॥
सब सर सिंधु नदीं नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना॥

(रा०च०मा० २।१३८।४-५)

लेकिन भरतजीका स्वागत राघवेन्द्रसे भी बढ़कर हुआ। भरतजीका स्वागत शिष्टाचारका निर्वाह नहीं है। वह चराचर प्रकृति-मण्डल और देवताओंके प्राणोंकी प्यास है। भरतकी दशा देखकर देवता पुष्प बरसाने लगे। पृथ्वी कोमल और मार्ग मंगलका मूल बन गया।

देखि दसा सुर बरिसहिं फूला। भइ मृदु महि मगु मंगल मूला॥

भरतजी अवधमें सिर झुकाकर अपनी दारुण दीनता कहते हैं—श्रीरघुनाथजीके चरणोंका दर्शन किये बिना मेरे जीकी जलन न जायगी। प्रभुसे मिलापपर ही अग्नितत्त्वकी अनुकूलता होती है।

आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ॥

(रा०च०मा० २।१८२)

भरतजीने प्रयागमें विधिपूर्वक गंगा-यमुनाके श्वेत और श्याम जलमें स्नान किया। श्याम और श्वेत लहरोंमें भरतजीको श्रीराम और सीताजीका दर्शन प्राप्त हुआ और शरीर पुलकित हुआ। इस प्रकार जलतत्त्व भी भरतजीके अनुकूल हुआ।

सबिधि सितासित नीर नहाने। दिए दान महिसुर सनमाने॥
देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे॥

(रा०च०मा० २।२०४।२-३)

भरतजीका श्रीरामके प्रति अनुराग देखकर धरती मृदुल हो गयी। धूप न लगे, इसलिये बादल आ गये और सुखद वायु बहने लगी। भरतके मानससे प्रकृतिका मानस मिल गया।

किएँ जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात।

(रा०च०मा० २।२१६)

भरतका मन प्रकृतिसे नहीं मिला, बल्कि भरतका मन तो रामजीसे मिला हुआ है। भरतजीके जाते समय मार्ग जैसा सुखदायक हुआ, वैसा तो श्रीरामचन्द्रजीके लिये भी नहीं हुआ।

तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात॥

(रा०च०मा० २।२१६)

प्रकृतिने रामजीके लिये वैसी व्यवस्था नहीं की थी, जैसी भरतजीकी वन-यात्रामें की थी।

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि भगवान् राम जब वनसे जा रहे थे, उस समय जिन वृक्षोंने प्रभुको देखा, जिन पक्षियोंने उनका दर्शन किया, जिन नदियोंका, जिस भूमिका उन्होंने स्पर्श किया अथवा जिन्हें श्रीरामने करुणापूर्वक देख लिया, उन सारी स्थावर-जंगम वस्तुओंका भाग्य ऐसा हुआ कि वे सब रामपदके अधिकारी हो गये, परंतु परमपद—परमसत्ताका अनुभव नहीं मिला। लेकिन भरतजीके दर्शनसे सब परम पद पा गये। प्रभु रामकी कृपासे अधिकार मिला और सन्त भरतकी कृपासे परमार्थ मिला।

गोस्वामीजी संकेत करते हैं कि भवरोग तो भरतदर्शनसे ही दूर हुआ। अभाव प्रभावोंका सन्ताप तो भरतजीने ही दूर किया।

जड़ चेतन मग जीव घनेरे। जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥
ते सब भए परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू॥

(रा०च०मा० २।२१७।२)

यह विलक्षण प्रभाव भरतजीमें आया कहाँसे? भरतके रूपमें राम ही तो प्रकट हैं। अपनी विशेष महिमा और मधुरताके साथ भरतके माध्यमसे राम प्रकट हो रहे हैं। गोस्वामीजीका कहना है कि स्वयं प्रभु श्रीराम ही जिसका स्मरण करते हों, उसके लिये यह कोई बड़ी बात नहीं है।

यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं। सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं॥

भरतजीका प्रेम श्रीरामजीमें उमगा, इसलिये चराचरका स्नेह भरतजीमें हो गया और वे सुखदायक हो गये। प्रभु अपने भक्तपर कृपा करते ही हैं, इससे उनका मार्ग अधिक सुखद कर दिया।

'कस न होइ मगु मंगलदाता'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आरोग्य-चर्चा—

हृदय-रोगसे बचनेके उपाय एवं चिकित्सा

(डॉ० श्रीओमप्रकाशजी गुप्ता, एम०डी० (आयु०), पी-एच०डी०)

आन्तरिक एवं बाह्य प्रदूषणोंकी अधिकता, भावनात्मक आवेश, राजसिक एवं तामसिक आहारका अति प्रयोग तथा श्रमकी कमी हृदय-रोगोंके बढ़नेमें प्रमुख कारण हैं। इन कारणोंके साथ पारिवारिक इतिहास इस रोगको और बढ़ानेमें सहायक होते हैं। हृदय-रोग एक दिनमें नहीं होता, इसका आरम्भ कारणोंके सेवनके साथ-साथ शुरू हो जाता है और कारणोंके दूर होते ही हृदय पुनः स्वस्थ होकर सुचारु रूपसे कार्य करने लगता है।

हृदय कमल-कलिका (पुण्डरीक)-के रंग, रूप एवं आकारसे मिलता-जुलता मजबूत मांसपेशियोंका बना एक अंग है, जो फेफड़ोंके बीच स्थित रहता है। शिरा, धमनियोंसे जुड़ा यह अंग रसवह स्रोतस्, प्राणवह स्रोतस्, ओजवह स्रोतस् और मनोवह स्रोतस्‌का मूल होते हुए चेतनाका प्रमुख स्थान है, मुख्य मर्म है, प्राणायतन है। इसकी संकोच एवं प्रसारकी गतिसे समस्त शरीरमें प्राण-रसोंका संचालन होता है। इसकी गतिसे ही जीवन है।

चिन्ता, अतिशोधन, भय, विषाक्त भोजन, शारीरिक वेगों (मल-मूत्र)-को रोकना, धूम्रपान, शराब-सेवन, अतिरिक्त दाब, मोटापा, पेटमें गैस, कृमि, रासायनिक दवाओंका बहुत सेवन, मधुमेह तथा आलस्यके अतिरिक्त रक्त-वसाकी वृद्धि हृदय-रोगोंके सहायक कारण माने जाते हैं। मैंने चिकित्सकीय अनुभवमें यह भी देखा है कि अजीर्ण, अम्लपित्त, गैस, पेटके कीड़े तथा आँवकी अधिकता भी हृदय-रोगोंका कारण बनते हैं।

कोलेस्ट्रॉल क्या है—हमारे शरीरकी सप्तधातुओंमें मेद भी प्रमुख घटक है, जो जीवनचर्याके लिये आवश्यक है। आवश्यकतासे अधिक मेद (चर्बी) कोलेस्ट्रॉल एवं ट्राईग्लिसराइड वसा पदार्थका अधिक उत्पादन करता है। जम जानेवाले घी, अण्डे, धूम्रपान, मांसाहार, भैंसका दूध, शराब, आइसक्रीम, मक्खन तथा आलस्यसे यह कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है। यह कोलेस्ट्रॉल रक्त-नलियोंमें जमकर रक्तचापकी भी वृद्धि करता है। यही नहीं, इसके जमावके कारण हृदयको रक्त पहुँचानेवाली धमनियाँ, जिन्हें कोरोनरी धमनी कहा जाता है, उनमें रुकावट भी पैदा हो सकती है। रुकावटके कारण हृदयकी मांसपेशियोंमें रक्त तथा जीवनीय द्रव्योंकी कमी हो जाती है। इसी खूनकी कमी या सम्पूर्ण बन्द होनेसे ही हृदय-शूल, हृदयाघात या हार्ट-अटैक होता है। आजकल इसे एनजाइना या इनफॉरक्सन कहा जाता है। अतः इस कोलेस्ट्रॉल नामक वसाको तुरन्त सामान्य करनेका प्रयास करना चाहिये। भारतीय पुरुषोंमें इसकी मात्रा १७० या १८० एम०जी० से अधिक नहीं होनी चाहिये। कम कोलेस्ट्रॉलका अर्थ है हृदय-रोगकी कम सम्भावना।

सामान्य लक्षण—थोड़े परिश्रमसे साँस फूलना, खाँसी, ज्वर, हिक्का, तृष्णा, भ्रम, चक्कर आना, धड़कन बढ़ना, छातीमें दर्द रहना, आराम करनेसे दर्द कम हो जाना, मेहनतसे बढ़ना, भोजनकी इच्छामें कमी, उत्साहमें कमी, मुँहका स्वाद खराब रहना, नींद न आना, कमजोरी बढ़ना, कब्ज रहना, मूत्रकी मात्रामें कमी होना, पैरोंमें सूजन, चेहरेपर सूजन, मूर्च्छा आदि हृदय-रोगके सामान्य लक्षण हैं। ये लक्षण अन्य रोगोंमें भी मिलते हैं, जैसे खूनकी कमी, क्षयरोग आदि। इसलिये इस प्रकारके लक्षण मिलनेपर जाँच तथा परीक्षण अवश्य करवाना चाहिये।

नैदानिक आवश्यकताएँ—(१) रक्त-परीक्षणोंमें मुख्यतया रक्तशर्करा, रक्तयूरिया, कोलेस्ट्रॉल, ट्राईग्लिसराइड, हीमोग्लोबिन, ई०एस०आर०, इसनोफिल, एल०डी०एल०, एच०डी०एल० आदि। (२) एक्स-रे परीक्षण। (३) सोनोग्रॉफी, (४) ई०सी०जी०, (५) मल-मूत्र-परीक्षण एवं (६) रक्तदाब-परीक्षण।

हृदयरोगोंकी चिकित्सा—हृदयरोगोंकी चिकित्सा-हेतु इस वर्गको हम दो भागोंमें बाँट सकते हैं—(१) प्रतिषेध-चिकित्सा एवं (२) रोग एवं उपद्रव चिकित्सा।

प्रतिषेध चिकित्सा-प्रथम चरण—हमारे यहाँ स्वस्थ एवं निरोगी रहनेके लिये विधिवत् एवं वैज्ञानिक चर्याओंकी कल्पना की गयी थी। जैसे दिनचर्या, ऋतुचर्या, रात्रिचर्या, कल्प आदि। उत्तरोत्तर कालोंमें विद्युत् प्रकाश आदिके प्रादुर्भावके कारण इन चर्याओंका महत्त्व लगभग समाप्त-सा हो गया है। प्रकृतिके साथ तारतम्यता टूटनेसे नैसर्गिक आचरणमें कमी आयी तथा कृत्रिम आचरणोंका प्रादुर्भाव हुआ। इन कृत्रिम आचरणोंके कारण, दोष-धातु-मल एवं अग्निके नैसर्गिक व्यापारमें भी असामान्यता हुई, जिससे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोग बढ़े और मनुष्यकी उम्रका ह्रास हुआ। पूर्णायु एवं स्वास्थ्यके लिये तारतम्यता आवश्यक है। प्रमुख चर्याओंको रोग प्रतिषेधके लिये नियमित अपने जीवनका हिस्सा बनाना चाहिये। जैसे—

१-सुबह सूर्योदयके समय बिस्तर छोड़ दें। २-प्रातः उठकर ताम्रपात्रमें रखा स्वच्छ पानी २ या ३ गिलास पीयें। ३-शौचादिसे निवृत्त होकर लगभग ३५ से ४५ मिनटतक प्रातः-भ्रमण करें। ४-हलके तथा ढीले वस्त्र पहनें, सूती वस्त्र ज्यादा हितकर हैं। ५-स्नानके लिये समशीतोष्ण जलका व्यवहार करें। ६-सम्भव हो तो सप्ताहमें १-२ बार नीमकी दातौन करें। ७-ऋतुओंके अनुसार उपलब्ध साग, सब्जी, फल अवश्य खायें। चीनी, घी, नमक कम खायें। भोजनके बाद वज्रासन तथा थोड़ा आराम करें। ८-सिगरेट, बीड़ी, शराब बिलकुल न लें। ९-अण्डा एवं मांसका सेवन न करें। १०-रातमें सोते समय आँवलाचूर्ण, त्रिफला, बेलचूर्ण, मेथीचूर्ण या ईसबगोल लेनेसे वायु नहीं बनती है तथा कोष्ठशुद्धि भी ठीक तरहसे हो जाती है।

गर्भकालमें माता-पिताका असंयम, माताके आहारमें कमी, माताद्वारा अनायास दवाओंका सेवन, भय, गर्भके चतुर्थ माहमें माताद्वारा असेवनीय द्रव्य जैसे मूत्रल दवाओंका सेवन, गर्भावस्थामें पिताद्वारा घरके अन्दर किया जानेवाला धूम्रपान, गर्भावस्थामें मानसिक एवं शारीरिक आघात या त्रासदी पैदा होनेवाले बच्चेमें हृदयरोग पैदा कर सकते हैं। ऐसी माताएँ जो गर्भनिरोधक गोलियों एवं धूम्रपानका सेवन करती हैं, उन्हें तथा उनकी सन्तानको हृदय-रोगकी सम्भावना ज्यादा होती है।

उष्ण पदार्थों, गुरु पदार्थों, कषाय रसकी अधिकता, तिक्त रसोंकी अधिकता, विषमाशन, अतिलंघन आदिसे भी रस-रक्तमें विकार होकर हृदय-रोग होते हैं।

प्रतिषेध चिकित्सा-द्वितीय चरण—ऐसे व्यक्ति जिनमें हृदय-रोगके सम्भावित कारण मौजूद हों, उनको भविष्यमें हृदय-रोग न हो, उनके लिये द्वितीय चरणका प्रतिषेध भी आवश्यक होता है।

उच्च रक्तदाब—ऐसे व्यक्ति जिनके परिवारमें उच्च रक्तदाबका इतिहास हो, या जो स्वयं अम्लपित्त, रक्तपित्त, रक्तवात या उच्च रक्तदाबसे ग्रस्त हैं, उन्हें हृदयरोगसे बचावके लिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये। उच्च रक्तदाब मानसिक आवेश, मलावरोध, मूत्रावरोध, तनाव, अनिद्रा, मोटापा, धूम्रपान आदिसे बढ़ता है। उच्च रक्तदाब स्वयंमें कोई रोग नहीं है, परंतु इसका सीमामें रहना स्वास्थ्यके लिये अच्छा होता है। सामान्य अवस्थामें १३०।८०-९० एम०एम०एच०जी० रक्तदाब रहना ठीक रहता है। इससे ऊपर रहनेपर कुछ लक्षण मिलते हैं। जैसे—सिरमें दर्द रहना, कानमें शब्द होना, चक्कर आना, धड़कन महसूस करना, क्रोधका बढ़ना, आँखोंमें दर्द या भारीपन, नींद न आना, चिड़चिड़ापन आदि।

ऐसी अवस्थामें नमक कम लें, पपीता कच्चा या पका नियमित लें। सर्पगन्धा, घनवटी या ब्राह्मीवटीकी एक-एक गोली गुलाबजल या दूध या शंखपुष्पी शर्बतसे दिनमें दो बार लें। पंचमुखी रुद्राक्षकी माला पहनें। रातमें सोते समय त्रिफला ५ ग्राम जलके साथ लें।

प्रौढ़ पुरुष एवं उम्रदराज लोगोंमें जराजन्य रोग तथा हृदयरोग होनेकी सम्भावना रहती है। ऐसे लोगोंको संयमके साथ सादा एवं सहज जीवन-यापन करना चाहिये। ऐसे व्यक्तियोंके लिये आयुर्वेदने रसायन एवं आचार-रसायनका निर्देश किया है। जैसे—

(१) नियमित हलका व्यायाम करें एवं शरीरकी मालिश करें। (२) ध्यान एवं योगासन करें। (३) सप्ताहमें एक दिनका उपवास करें। (४) फल-जूस, सूप या कोई रस नित्य लें। (५) साप्ताहिक विचार-गोष्ठीमें भाग लें तथा अपने ज्ञानानुभवका उपयोग करें। (६) सुबह च्यवनप्राश या आमलकी रसायन १ चम्मच लें। (७) रात्रिमें १ चम्मच हरीतकी चूर्ण तथा बड़ी किशमिश १० नग लें। किशमिशकी जगह अंजीर, बेलचूर्ण, ईसबगोल लिया जा सकता है। (८) चन्द्रप्रभा वटी या शिलाजीत वटी १-१ गोली दूधसे लेते रहनेसे ताकत बनी रहती है तथा प्रोस्टेट विकार नहीं होता है।

मेदोरोग—स्थूलता तथा शारीरिक भारमें वृद्धिसे हृदयके ऊपर भी बोझ बढ़ता है तथा रक्त नलिकाओंमें रक्त जमने, वसाके जमने आदिसे अवरोध होनेकी सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिये हृदय-रोगसे बचावके लिये आवश्यक है कि मोटापा तथा स्थूलता न हो, इस प्रकारका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आहार-विहार करें। यदि रक्त-कोलेस्ट्रॉलकी मात्रा २०० एम०जी० से अधिक है, तो उसको कम करनेका प्रयत्न करें तथा निम्न चर्या अपनाएँ—

(१) नियमित ४५ मिनटतक पैदल चलें। (२) चाय, कॉफी, शराब, अण्डा, क्रीम, चॉकलेट, चीनी, आलू, चावल, कोल्डड्रिंक्स, बीयर, मांस, सिगरेटका सेवन न करें। (३) यदि स्थूलता हो तो मेदोहर गूगल, नवक गूगल, आरोग्यवर्धिनीकी दो-दो गोलियोंका सेवन प्रातः, दोपहर, सायं तीन बार करें। (४) रातमें मेथी, अजवायन तथा त्रिफला चूर्णका सेवन करें।

मधुमेहकी बढ़ी अवस्थामें धमनी-क्षय तथा वृक्क दोषादिके द्वारा हृदय-रोग होनेकी सम्भावना रहती है। इसलिये मधुमेहीको हृदय-रोग न हो, इसके लिये उसे मधुमेहकी दवाओंके साथ प्रभाकर तथा शिलाजीतयुक्त लौह वटीका प्रयोग करना चाहिये। मधुमेहकी चकित्सा आसान है, परंतु पथ्यके बिना सफलता नहीं मिलती है। मेथी, आँवला, हल्दी, गिलोय, नीम, तुलसी, करेला, जामुन, बेलपत्ता, सदाबहार पत्ता, कुटकी, चिरायता, काला जीरा, गुड़मार आदि द्रव्योंका प्रयोग मधुमेहमें लाभकारी है।

धूम्रपान, शराब एवं गर्भनिरोधक गोलियाँ—तम्बाकू-सेवन, सिगरेट एवं बीड़ी पीनेसे प्राणवह स्रोतस्‌में विकार होकर हृदय-रोग पैदा होता है। इसी प्रकार शराब अलवह स्रोतस् तथा गर्भनिरोधक गोलियाँ हारमोन्सको असन्तुलित करके हृदयविकार पैदा कर सकती हैं।

प्रतिषेध-चिकित्सा-तृतीय चरण—प्रारब्ध तथा कुपथ्यके परिणामस्वरूप यदि हृदय-रोग हो जाय, तो उसे चिन्ताका विषय न बनाकर पथ्य-पालनकर उचित चिकित्सा करनेसे हृदय-रोग पूर्णरूपसे ठीक हो जाता है। वर्तमानका जो हृदय-रोग है, उसको केवल कोष्ठ वायुगत या मेदगत न मानकर त्रिदोषगत मानना चाहिये, क्योंकि इसमें वात, पित्त, कफ तीनों शारीरिक विकार एवं मानसिक विकार सम्मिलित होते हैं तथा प्रायः रस+रक्तमें मेदकी मात्रा बढ़ी हुई पायी जाती है। इसलिये चिकित्साके लिये यह आवश्यक है कि हम उन कारणों तथा सम्प्राप्तिको जानें, जो इस रोगकी जनक होती है।

चिकित्साके प्रथम चरणमें रोगीको पूर्ण विश्राम आवश्यक है, साथमें शामक औषधिया; जैसे—ब्राह्मी वटी २-२ गोली, अश्वगन्धाके साथ देना चाहिये। वायुका प्रकोप न हो, इसलिये लंघन कराना तथा मूत्रल औषधि जैसे श्वेतपर्पटी तथा पुनर्नवा एवं गोक्षुरका काढ़ा देना चाहिये। नमक तथा घी बन्द कर देना चाहिये। इस अवस्थामें महानारायण तैलकी बस्ति या ईसबगोल २-२ चम्मच ३ बार पानीसे देना चाहिये, जिससे कब्ज न रहे। प्रायः २ या ३ सप्ताह विश्रामकी आवश्यकता हो सकती है।

बृहत्वात चिन्तामणि १२५ मिग्रा०, शृंगभस्म १२५ मिग्रा०, पुष्कर गुग्गुलु २५० मिग्रा०, मधुके साथ दिनमें दो बार देना चाहिये। यदि सम्भव हो तो प्रथम चरणकी चिकित्सा अस्पतालके सघन चिकित्सा-कक्षमें दी जाय, इससे रोगीको अन्य उपद्रवोंसे भी बचाया जा सकता है।

द्वितीय चरणकी चिकित्सा ज्यादातर पथ्यके ऊपर ही आश्रित होती है। रोगीको सम्पूर्णरूपसे घी, तेल, मक्खन, दूध, दहीका परित्याग कर देना चाहिये। प्रेक्षा ध्यान करना चाहिये तथा मानसिक आवेश दूर रखना चाहिये। नीबू, टमाटर, पपीता, सेब, गाजर, मौसमी, फालसा, लीची, अमरूद, आँवला, आम, नारियल-पानी, लहसुन, अदरक (शुष्क), धनिया, परवल, केला, मधु, मूँगदालका प्रयोग पथ्यके रूपमें करना चाहिये। १ चम्मच अर्जुन-छालको १ कप दूध तथा १ कप पानीमें डालकर उबालें, १ कप रह जानेपर छानकर नियमित पीना अति लाभदायक है।

औषधियोंमें योगेन्द्र रस, प्रभाकर तथा नागार्जुनाभ्रका प्रयोग हृदय रोगोंमें उत्तम परिणाम देते हैं। गोक्षुरादि गुग्गुलु तथा चन्द्रकलाका साथ-साथ प्रयोग वृक्कको भी बल देता है। श्वास चिन्तामणि एवं सितोपलादिका प्रयोग श्वास कष्टको दूर करता है। यदि शरीरके किसी हिस्सेमें शोथ दिखायी दे तो पुनर्नवामण्डूरका प्रयोग साथमें करना चाहिये।

पुष्कर मूल-जटामांसीके काढ़ेके साथ सितोपलादि १।४ चम्मच देनेसे हृदय-रोगके उपद्रव शान्त होते हैं।

हृदय-रोग साध्य है, निदान एवं चिकित्सासे यह पूर्णरूपेण ठीक हो जाता है। चिकित्सामें त्रिमर्म—शिर (मस्तिष्क), बस्ति (वृक्क) तथा हृदय तीनोंका ध्यान रखना चाहिये। सद्‌विचार एवं सद्‌वृत्तका पालन सभी रोगोंको निर्मूल करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गो-चिन्तन—

गोरक्षा ही प्रपंच-रक्षा है

(ब्रह्मलीन कामकोटिपीठाधिपति जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीजी महाराजका उपदेश]

श्रीकृष्णरूपमें अवतार ग्रहण करनेकी प्रार्थना करनेके लिये जब श्रीभूदेवी श्रीभगवान्‌के पास गयीं, तब वे गोरूप धारण करके ही गयी थीं। वे श्रीभूदेवी और गौ—दोनों ही हमारी माताएँ हैं। महाकवि कालिदास कहते हैं—**'जुगोप गोरूपधरावोर्वीम्', 'यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्।'** इत्यादि।

श्रीभगवान्‌ने लोक-संरक्षणार्थ श्रीकृष्णावतार ग्रहण किया और गौओंके साथ क्रीड़ा की। **'नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।'** श्रीभगवान्‌ने कहा है—देवलोक और भूलोक दोनों प्रेमपूर्वक परस्पर उपकार करते हुए एक-दूसरेका श्रेय:साधन करें—

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

उनका और भी उपदेश है कि इस परस्पर-भावनाकी जड़ यज्ञ ही है।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥

भगवान्‌ने अपने अवतारका यही कर्तव्य समझा कि ऐसे यज्ञोंकी वृद्धिके द्वारा गो-ब्राह्मणका रक्षण करना। यज्ञके लिये द्रव्यशुद्धि और मन्त्रशुद्धिकी आवश्यकता होती है। यज्ञोंमें जिन पदार्थोंका व्यवहार होता है, उनमें गायका पवित्र घी सर्वप्रधान है। मन्त्रसिद्धिका संरक्षण करना ब्राह्मणका कर्तव्य है। इसीलिये गो-रक्षा, यज्ञ-रक्षाका प्रधान साधन है। यज्ञ-रक्षासे प्रपंच-रक्षा होती है। अतएव आस्तिक पुरुषोंके द्वारा किया जानेवाला गोरक्षण ही लोकरक्षण है।

लौकिक दृष्टिसे विचार करनेपर भी यही सिद्ध होता है कि सब लोगोंको बड़ी सावधानीके साथ गो-संरक्षण करना चाहिये।

कहना न होगा कि संसारभरके भावी सन्तानोंकी रक्षाके लिये गौओंकी और खाद्य द्रव्य—अनाज आदिके उत्पादनकी वृद्धिके लिये बैलोंकी अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्योंके शरीर-निर्वाह और खाद्य-पदार्थोंकी प्राप्तिमें बड़ी कठिनाई आ गयी है। इसका परिहार गो-संरक्षणसे ही होगा। आधुनिक लौकिक नेताओंने भी इस बातको स्वीकार किया है और संसारभरको यह सन्देश दिया है कि गायका दूध ही जगत्‌के अनिवार्य महारोगोंकी अक्सीर दवा है। उनकी इस उक्तिसे शास्त्रोंपर विश्वास न करनेवालोंको भी गौकी महत्तापर विश्वास होना चाहिये। हमारे लिये यह कोई नयी बात नहीं है। हजारों वर्षोंसे हमारे शास्त्रोंमें पंचगव्यप्राशन करनेके समय इस मन्त्रपाठका नियम चला आता है—

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

अर्थात् मेरे अस्थि-चर्ममें जो पाप वर्तमान हैं, वे पंचगव्यप्राशनसे वैसे ही भस्म हो जाते हैं, जैसे अग्निसे ईंधन।

'कोढ़ आदि महारोगोंके लिये गायका दूध एकमात्र अनुभवसिद्ध औषध है।' इस नवीन तत्त्वको एक राष्ट्रीय नेताने और दूसरे एक अंग्रेजी डॉक्टरने बतलाया है। इससे भी उपर्युक्त पंचगव्यप्राशनके श्लोककी पुष्टि होती है; क्योंकि कुष्ठरोग चर्म और अस्थिका ही प्रधान बाधक है। गोबर सारी दुर्गन्धको दूर करता है और रोग-कीटाणुओंका नाश करता है। गोमाता सिर्फ अपनी सन्तानको ही नहीं, संसारभरकी समस्त जातियों और समूहोंको पवित्र एवं अमृतोपम दूध देती है। यदि संसार गोमाताको प्रत्यक्ष लक्ष्मी मानकर उसका पूजन-सत्कार करे तो संसारके पाप नष्ट हो जायँ।

लोगोंको ऐसा भ्रम हो सकता है कि पशुहिंसा करनेसे अधिक रुपये मिलेंगे। ऐसा माननेवाले लोग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धोखा खाकर स्वयं तो नरकोंमें पड़ते ही हैं, दुनियामें पाप बढ़ाकर उस पापके परिणामस्वरूप जगत्पर महान् विपत्तियोंकी वृद्धिमें भी कारण बनते हैं। अब, जब कि लड़ाई बन्द हो गयी है, दुनियाके सुधारके लिये जैसे भी हो अधिक-से-अधिक गायोंकी आवश्यकता होगी। यह बात सुशिक्षित पुरुषोंके द्वारा प्रत्येक किसानकी झोंपड़ीतक पहुँचनी चाहिये और उन्हें पशु-रक्षणके लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

जिन्होंने जगत्के हितकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले रखी है, उन देशके शासकोंको इन सब बातोंपर खूब विचार करके तुरंत गोहिंसा-निवारण और गो-संरक्षणके कार्यमें लग जाना चाहिये। और सर्वसाधारणको भी सावधानीके साथ गौओंकी रक्षा करनी चाहिये।

['गो-अंक'से]

बोध-कथा

वाणीसे व्यक्तित्वका बोध

मुरलीधरके स्वभावसे उसके घरके लोग तंग आ चुके थे। वह हर बात इतने कठोर तरीकेसे बोलता कि लोगोंको चुभ जाती। इससे उसका व्यापार भी प्रभावित हो रहा था। ग्राहक उसकी दूकानपर जानेसे कतराने लगे। दिन-पर-दिन बिक्री कम होती गयी। मुरलीधर चिन्तित हो गया।

एक बार शहरमें एक बाबाजी आये। मुरलीधरने सोचा, क्यों न बाबाजीसे आशीर्वाद लूँ और व्यापारमें सुधारका कोई उपाय पूछूँ। यह सोचकर वह सुबह-सुबह बाबाजीके डेरेपर जा पहुँचा। वहाँ पहलेसे ही और भी बहुत-से लोग थे। मुरलीधरको वहाँ खड़े-खड़े काफी वक्त लग गया, दूकान खोलनेमें देर हो रही थी। मुरलीधरने खीझकर वहाँ उपस्थित लोगोंसे झगड़ा कर लिया।

बाबाजीने उसकी ओर देखा, उन्हें उसका स्वभाव समझते देर न लगी। बोले—'आओ बेटा! पहले तुम आ जाओ। इनकी बात बादमें सुन लूँगा।' मुरलीधरने बाबाजीके चरण छूते हुए उन्हें अपनी समस्या बतायी। बाबाजी बोले—'पहले तुम एक कहानी सुनो।' बाबाजीने उसे कहानी सुनायी—

एक धनी सेठ कई नौकरोंके साथ यात्रापर निकला। रास्तेमें उसे प्यास लगी। उसने अपने एक नौकरको पानीकी तलाशमें भेजा। नौकर कुछ दूर गया। वहाँ एक कुआँ था। एक अन्धा व्यक्ति, लोगोंको जल पिला रहा था। नौकरने अकड़कर उससे कहा—'अबे ओ अन्धे! एक लोटा जल मुझे भी दे दे।' अन्धेने भी उसी अकड़से कहा—'जा भाग यहाँसे, मैं तुझ-जैसे मूर्ख बेवकूफ इंसानको पानी नहीं देता।' नौकरको गुस्सा तो आया, लेकिन वह अन्धेका बिगाड़ भी क्या सकता था! उसने वापस लौटकर सेठको सारी बात बतायी।

तब सेठ स्वयं अन्धेके पास जल लेनेके लिये गया। उसने मधुर वाणीमें कहा—'बाबा! मुझे बहुत प्यास लगी है। कृपया एक लोटा जल दें।' अन्धेने कहा—'बैठिये सेठजी, अभी जल पिलाता हूँ।' जल पीनेके बाद सेठने अन्धेसे पूछा—'बाबा! आपकी तो आँखें ही नहीं हैं, फिर भी आप कैसे जान गये कि मैं सेठ हूँ?' तब अन्धेने कहा—'सेठजी! मनुष्यकी वाणी ही उसके व्यक्तित्वका बोध कराती है।'

यह कहानी सुनाकर बाबाजीने कहा—'तुम भी उस नौकरकी तरह कठोर वाणीमें बोलते हो। सभी मीठी वाणी सुनना चाहते हैं। मीठी वाणीसे बिगड़े हुए काम बन जाते हैं, जबकि कटु वाणीसे बना-बनाया काम बिगड़ जाता है। जैसे तुम्हारा जमा-जमाया व्यापार खत्म हो गया।' मुरलीधरको अपनी गलतीका अहसास हो गया। उसी दिनसे उसने गुस्सा करना छोड़ दिया।

ऐसी बानी बोलिये मनका आपा खोय।
औरनको सीतल करे आपहुँ सीतल होय॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुभाषित-त्रिवेणी

विचारपूर्वक कार्य करना चाहिये

[Should act thoughtfully]

मिथ्योपेतानि कर्माणि सिध्येयुर्यानि भारत।
अनुपायप्रयुक्तानि मा स्म तेषु मनः कृथाः॥

भारत! असत् उपायों (जूआ आदि)-का प्रयोग करके जो कपटपूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं, उनमें आप मन मत लगाइये।

O Bharata! One should not indulge in deceitful acts in order to succeed in vicious designs.

तथैव योगविहितं यत्तु कर्म न सिध्यति।
उपाययुक्तं मेधावी न तत्र ग्लपयेन्मनः॥

इसी प्रकार अच्छे उपायोंका उपयोग करके सावधानीके साथ किया गया कोई कर्म यदि सफल न हो, तो बुद्धिमान् पुरुषको उसके लिये मनमें ग्लानि नहीं करनी चाहिये।

Likewise, it is not wise to be disheartened if you do not succeed even after putting in a careful and honest effort.

अनुबन्धानपेक्षेत सानुबन्धेषु कर्मसु।
सम्प्रधार्य च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत्॥

किसी प्रयोजनसे किये गये कर्मोंसे पहले प्रयोजनको समझ लेना चाहिये। खूब सोच-विचारकर काम करना चाहिये, जल्दबाजीसे किसी कामका आरम्भ नहीं करना चाहिये।

One must be clear about one's objective before initiating an activity. Think deep before taking a step forward. One must not hurry thoughtlessly.

अनुबन्धं च सम्प्रेक्ष्य विपाकं चैव कर्मणाम्।
उत्थानमात्मनश्चैव धीरः कुर्वीत वा न वा॥

धीर मनुष्यको उचित है कि पहले कर्मोंके प्रयोजन, परिणाम तथा अपनी उन्नतिका विचार करके फिर काम आरम्भ करे या न करे।

A thoughtful person must think of the purpose, the consequences of an activity and the accruing benefit, if any, before taking up a project or not.

यः प्रमाणं न जानाति स्थाने वृद्धौ तथा क्षये।
कोशे जनपदे दण्डे न स राज्येऽवतिष्ठते॥

जो राजा स्थिति, लाभ, हानि, खजाना, देश तथा दण्ड आदिकी मात्राको नहीं जानता, वह राज्यपर स्थित नहीं रह सकता।

A king ought to understand the reality of the situation in his kingdom, progress or lack thereof under his rule. He must know the limits to which he can stretch his treasury. He should be aware of the measure of punishment that can be inflicted on the guilty. Otherwise, his rule will be unstable.

यस्त्वेतानि प्रमाणानि यथोक्तान्यनुपश्यति।
युक्तो धर्मार्थयोर्ज्ञाने स राज्यमधिगच्छति॥

जो इनके प्रमाणोंको ठीक-ठीक जानता है तथा धर्म और अर्थके ज्ञानमें दत्तचित्त रहता है, वह राज्यको प्राप्त करता है।

A man who is aware of the aforesaid limitations and is occupied with the pursuit of knowing *Dharma* and *Artha,* rules a stable kingdom.

न राज्यं प्राप्तमित्येव वर्तितव्यमसाम्प्रतम्।
श्रियं ह्यविनयो हन्ति जरा रूपमिवोत्तमम्॥

'अब तो राज्य प्राप्त हो ही गया'—ऐसा समझकर अनुचित बर्ताव नहीं करना चाहिये। उद्दण्डता सम्पत्तिको उसी प्रकार नष्ट कर देती है, जैसे सुन्दर रूपको बुढ़ापा।

Having attained a kingdom, the king must not become overconfident and treat others unfairly. Arrogance and an unbending temperament destroy wealth as old age shatters good looks.

[विदुर-नीति २।६—१२]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्रतोत्सव-पर्व

सं० २०८१, शक १९४६, सन् २०२४, सूर्य-दक्षिणायन, शरद्-हेमन्त-ऋतु, मार्गशीर्ष-कृष्णपक्ष

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि
प्रतिपदा रात्रिमें १।१० बजेतक	शनि	कृत्तिका रात्रिमें ९।१६ बजेतक	१६ नवम्बर	वृश्चिक संक्रान्ति रात्रिमें ७। ३५ बजे, हेमन्त-ऋतु प्रारम्भ।
द्वितीया „ ११।२८ बजेतक	रवि	रोहिणी „ ८।११ बजेतक	१७ „	× × ×
तृतीया „ १०।७ बजेतक	सोम	मृगशिरा „ ७।२७ बजेतक	१८ „	भद्रा दिनमें १०।४७ से रात्रिमें १०।७ बजेतक, मिथुनराशि प्रातः ७।५० बजेसे।
चतुर्थी „ ९।९ बजेतक	मंगल	आर्द्रा „ ७।६ बजेतक	१९ „	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ८। २३ बजे।
पंचमी „ ८।४३ बजेतक	बुध	पुनर्वसु „ ७।१३ बजेतक	२० „	कर्कराशि दिनमें १। १२ बजेसे।
षष्ठी „ ८।४५ बजेतक	गुरु	पुष्य „ ७।४९ बजेतक	२१ „	भद्रा रात्रिमें ८। ४५ बजेसे, मूल रात्रिमें ७। ४९ बजेसे।
सप्तमी „ ९।२१ बजेतक	शुक्र	आश्लेषा „ ८।५७ बजेतक	२२ „	भद्रा दिनमें ९। ३ बजेतक, सायन धनुका सूर्य दिनमें १। ५० बजे, सिंहराशि रात्रिमें ८। ५७ बजेसे।
अष्टमी „ १०।२४ बजेतक	शनि	मघा „ १०।३२ बजेतक	२३ „	श्रीभैरवाष्टमी, मूल रात्रिमें १०। ३२ बजेतक।
नवमी „ ११।५६ बजेतक	रवि	पू.फा. „ १२।३४ बजेतक	२४ „	× × ×
दशमी „ १।४८ बजेतक	सोम	उ. फा. „ २।५५ बजेतक	२५ „	भद्रा दिनमें १२। ५२ बजेसे रात्रिमें १। ४८ बजेतक, कन्याराशि प्रातः ७। ९ बजेसे।
एकादशी „ ३।५४ बजेतक	मंगल	हस्त रात्रिशेष ५।२९ बजेतक	२६ „	उत्पन्ना एकादशीव्रत (सबका)।
द्वादशी रात्रिशेष ६।४ बजेतक	बुध	चित्रा अहोरात्र	२७ „	तुलाराशि रात्रिमें ६। ४८ बजेसे।
त्रयोदशी अहोरात्र	गुरु	चित्रा प्रातः ८।६ बजेतक	२८ „	प्रदोषव्रत।
त्रयोदशी प्रातः ८।७ बजेतक	शुक्र	स्वाती दिनमें १०। ३५ बजेतक	२९ „	भद्रा प्रातः ८। ७ बजेसे रात्रिमें ९। ० बजेतक, वृश्चिकराशि रात्रिशेष ६। १५ बजेसे।
चतुर्दशी दिनमें ९।५३ बजेतक	शनि	विशाखा „ १२।४९ बजेतक	३० „	श्राद्धकी अमावस्या।
अमावस्या „ ११।१७ बजेतक	रवि	अनुराधा „ २।३९ बजेतक	०१ दिसम्बर	अमावस्या, मूल दिनमें २। ३९ बजेसे।

सं० २०८१ शक १९४६, सन् २०२४, सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त-ऋतु, मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि
प्रतिपदा दिनमें १२।१३ बजेतक	सोम	ज्येष्ठा सायं ४। ३ बजेतक	२ दिसम्बर	धनुराशि दिनमें ४। ३ बजेसे, ज्येष्ठाका सूर्य रात्रिशेष ५। ४९ बजे।
द्वितीया „ १२।३७ बजेतक	मंगल	मूल „ ४। ५५ बजेतक	३ „	मूल सायं ४। ५५ बजेतक।
तृतीया „ १२।२९ बजेतक	बुध	पू०षा० „ ५। १८ बजेतक	४ „	भद्रा रात्रिमें १२। ११ बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, मकरराशि रात्रिमें ११। १६ बजेसे।
चतुर्थी „ ११।५३ बजेतक	गुरु	उ०षा० सायं ५।११ बजेतक	५ „	भद्रा दिनमें ११। ५३ बजेतक।
पंचमी „ १०।५० बजेतक	शुक्र	श्रवण „ ४। ३९ बजेतक	६ „	कुम्भराशि रात्रिमें ४। १३ बजेसे, पंचकारम्भ रात्रिमें ४। १३ बजे, श्रीरामविवाह-महोत्सव।
षष्ठी „ ९। २३ बजेतक	शनि	धनिष्ठा दिनमें ३।४६ बजेतक	७ „	श्रीस्कन्दषष्ठी।
सप्तमी प्रातः ७।३७ बजेतक	रवि	शतभिषा „ २।३४ बजेतक	८ „	भद्रा प्रातः ७। ३७ बजेसे रात्रिमें ६। ३६ बजेतक।
नवमी रात्रिमें ३।२१ बजेतक	सोम	पू.भा. „ १। ७ बजेतक	९ „	मीनराशि प्रातः ७। २९ बजेसे।
दशमी „ १। १ बजेतक	मंगल	उ.भा. „ ११।३० बजेतक	१० „	× × ×
एकादशी „ १०।३९ बजेतक	बुध	रेवती „ ९।५० बजेतक	११ „	मोक्षदा एकादशीव्रत (सबका), श्रीगीता-जयन्ती, भद्रा दिनमें ११। ५० बजेसे रात्रिमें १०। ३९ बजेतक, मेषराशि दिनमें ९।५० बजेसे, पंचक समाप्त दिनमें ८। ५० बजे।
द्वादशी „ ८। २१ बजेतक	गुरु	अश्विनी प्रातः ८।१० बजेतक	१२ „	× × ×
त्रयोदशी रात्रिमें ६।११ बजेतक	शुक्र	कृत्तिका रात्रिशेष ५।११ बजेतक	१३ „	वृषराशि दिनमें ११। १२ बजेसे, प्रदोषव्रत।
चतुर्दशी सायं ४।१४ बजेतक	शनि	रोहिणी रात्रिमें ४।१ बजेतक	१४ „	भद्रा सायं ४। १४ बजेसे रात्रि ३। २४ बजेतक, व्रतपूर्णिमा।
पूर्णिमा दिनमें २।३५ बजेतक	रवि	मृगशिरा रात्रिमें ३।१४ बजेतक	१५ „	मिथुनराशि सायं ६। ३८ बजेसे, पूर्णिमा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीभगवन्नाम-जपकी शुभ सूचना

(इस जपकी अवधि कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०८० से चैत्र पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०८१ तक रही है)

ते सभाग्या मनुष्येषु कृतार्था नृप निश्चितम्।
स्मरन्ति ये स्मारयन्ति हरेर्नाम कलौ युगे॥

'राजन्! मनुष्योंमें वे लोग भाग्यवान् हैं तथा निश्चय ही कृतार्थ हो चुके हैं, जो इस कलियुगमें स्वयं श्रीहरिका नाम-स्मरण करते और दूसरोंसे नाम-स्मरण करवाते हैं।'

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

—इस वर्ष भी इस षोडश नाम-महामन्त्रका जप पर्याप्त संख्यामें हुआ है। विवरण इस प्रकार है—

(क) मन्त्र-संख्या ६७,८०,९१,६०० (सरसठ करोड़, अस्सी लाख, इक्यानवे हजार छः सौ)।

(ख) नाम-संख्या १०,८४,९४,६५,६०० (दश अरब, चौरासी करोड़, चौरानबे लाख, पैंसठ हजार, छः सौ)।

(ग) षोडश नाम-महामन्त्रके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका भी जप हुआ है।

(घ) बालक, युवक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर, अपढ़ एवं विद्वान्—सभी तरहके लोगोंने उत्साहसे जपमें योग दिया है। भारतका शायद ही कोई ऐसा प्रदेश बचा हो, जहाँ जप न हुआ हो। भारतके अतिरिक्त बाहर अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रामिंघम, मलेसिया, मेलबोर्न, लासपाल मास (स्पेन), मिडिलटाउन, यू०के०, यू०एस०ए०, यूनाइटेड किंगडम, सिंगापुर, सउदी अरब, नेपाल, बंगलादेश, दुबई आदिसे भी जप होनेकी सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

स्थानोंके नाम—

अंजनु, अंतुरा, अंदौली, अंधेरी, अंबाला, अंबाला सिटी, अकबरपुर, अकोला, अचरोल, अडसीसर, अजमेर, अजयपुर, अनघौरा, अन्दौली, अमरेली, अमरवाड़ा, अमरावती, अमरावतीघाट, अमृतसर, अयानी, अयोध्याधाम, अलवर, अल्मोड़ा, अलीगढ़, अलीपुर, अवराइन, असोहा, अहमदाबाद, आऊवा, आकोट, आगरा, आनन्दनगर, इन्दरवास, इंदौर, इगतपुरी, इचलकरंजी, इमामगंज, इरोड, इलाहाबाद, ईशापुर, उज्जैन, उदसर, उदयपुर, उधमपुर, उल्हासनगर, उन्नाव, उरतुम, उस्मानाबाद, ऊना, ऋषिकेश, ओड़ासकरी, औदहा, एन. ए., कछुआ, कटक, कटनी, कटिहार, कठुवा, कठराथला, कथैया, कदन्या कनखल, कन्दरपुर, करजू, करही (शुक्ल), करसौत, कर्नाटक, कलकत्ता, कलिगाँव, कल्याण, कसारीडीह, करजगाँव, करौली, काँकरोली, काँगड़ा, काकिन्दा, काटोल, काठमांडो, कानपुर, कापरेन, कारा, कालियागंज, कालीकट, कालूखाँड़, काशीपुर कीसियापुर, किसनगंज, किसनगढ़, कुंजली, कुकरा, कुचामन सिटी, कुडी, कुरमापाली, कुर्वी, कुरुक्षेत्र, कुलग्रां, कुलना, कुसुमखेर, कूड़ाघाट, कृष्णनगर, कूच बिहार, कैथल, कैथापकड़ी, कैथाया, कोईलारी, कोची, कोटक, कोटा, कोड़लहिया, कोबरा, कोर्बा, कोलकाता, कोविलपट्टी, कोसीकला, कौड़िया, कौलती (नेपाल), खजूरीरुण्डा, खगडिया, खामगाँव, खामला, खारीजमा, खुनखुना, खेतराजपुर, खैराचातर, खैराबाद, गंगानगर, गंगवाल, गंगापुर सिटी, गंगाशहर, गंजवसौदा, गँठेरी, गड़कोट, गडग, गवलीपुरा, गरौठा, गाँधीधाम, गाँधीनगर, गाजियाबाद, गिरिडीह, गुड़गाँवा, गोकुल, गोकुलपेठ, गोकुलकालडी, गोरेगाँव, गोपालगंज, गुरुग्राम, गोल, गोविन्दपुरा, गोरखपुर, गोंसाईगंज, गोहाटी, ग्वालियर, गुण्डरदेही, घघरा, घडसना, घुघली, घोंटा, चंडीगढ़, चकनगरा, चक्कीरामपुर, चपकीबघार, चमोली, चाँदखेड़ा, चाईबास, चाहा, चिखली, चित्तौड़गढ़, चित्रकूट, चिहाई, चुरू, चुल्हार, चेन्नई, चौखा, चौखुटिया, चौधरी बसन्तपुर, चौरास, छतरपुर, छपरा, छपरौला, जम्मू, जगराँव, जगदीशपुर, जगतपुरी, जनापुर, जनौरा, जमानी, जमुई, जयपुर, जलगाँव (जामोदा), जलोदाखाटयान, जाँजगीर, जहाँगीराबाद, जानडोल, जामनगर, जालन्धर, जैतगढ़, जौनपुर, जोधपुर, जोरहाट, जोस्यूड़ा, जौलजीवी, जोशीमठ, झाँसी, झुन्झूनू, झालावाड़, झूलाघाट, टटेडा, टिकरीखिलड़ा, टीकमगढ़, टीटरो, टूगाँव, ठाडे, ठाकुरगंज, डडिहथ, डीग, डीडवाना, डूँगरगढ़, डूँगरगाँव, ढाँगू, तालछापर, तुगाँव, तुलसीपुर,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिनसुकिया, तिलौरा, तिवारीपुर, तालीगंज, तोला, त्रिपोलिया, त्रिलोचनपुर, तेलंगाना, थलेचर, थाणे, थाना, दडीबा, दतिया, दघोड़, दव्यारसुनी, दयापुर, दयालबाग, दमोह, दयापुर, दाँतारामगढ़, दामनजोड़ी, दामोदरपुर, दिलोरा, दिलीपपुर, दिल्ली, दुमका, दुर्ग, देलही, देवगढ़, देवगाँव, देवास, देवगलपुर, देशनोक, देहरादून, दौलतपुर चौक, द्वारका, धकोली, धनबाद, धनसार, धार, धराने, धामनोदी, धुलीया, धौलपालिया, ध्रांगधा, नंदन, नन्हवारा कला, नंदावता, नयीदिल्ली, नरहरपुर, नरसिंहपुर, नरहे, नवादा, नवापाड़ा, नवीमुंबई, नागपुर, नागौर, नापासर, नारायणपुर, नारायणपुरा, नासिक, नाहन, नाहली, निमाज, नेवारी, नोखा, नोहर, नोनीहाट, नीमका थाना, नोयडा, न्यू दिल्ली, पकड़ी, पंचवटी, पंडरीपानी, पंडेर, पंडेश्वर, पगार, पड़गा, पटना, पटनासिटी, पट्टी, पटियाला, पड़रौना, पत्थरकोट (नेपाल), परभनी, परलीबैजनाथ, पर्वतस्पर, परौख, पांडुनगर, पाँडेयढौर, पानीपत, पालमपुर, पिछोर, पिजड़ा, पीठीपट्टी, पीलीवंगा, पुणे, पुरुणावान्ध्रगोडा, पुरानी बस्ती, पूना, पूरेठकुराइन, पूर्णिया, प्रतापगंज, प्रयागराज, फतेहपुर, फतेहपुर शेखावाटी, फतेहाबाद, फरीदाबाद, फागी, फुलेरा, फूलपुररामा, बंगलूरु, बंगलौर, बक्सापुर, बगरु, बम्बई, बखरीबाजार, बगदहिया, बदलपुर, बड़कागाँव, बड़खेरवा, बड़गरा शिवमंदिर, बड़वाह, बड़ोत, बनैल, बमोरा, बरगढ़, बरहानपुर, बरीपुरा, बरेली, बरोदा सागर, बस्तर, बसेरा कालोनी, बस्ती, बलसाड, बलांगीर, बलिया, बलेश्वर, बलिगाँव, बल्लभगढ़, बसई, बहादुरगढ़, बहादुरपुर, बाडमेर, बालाजीनगर, बिदराली, बिरहा कन्हई, बिलखा, बिलासपुर, बीकानेर, बीग्गा, बीदासर, वीरतानगर, बीरतामोड़, बुलन्दशहर, बरहनिपुर, बीरागया, बूँदी, बेगूँ, बेगूसराय, बेनियाका बास, बेरलीखुर्द, बैकुंठपुर, भईन्दर, भटगाँव, भटिंडा, भदेसर, भनगाँवा भन्डाकर, भरतपुर, भरसी, भलड़ी, भलस्वाईसापुर, भवानीपुर, भागलपुर, भादलिया, भादवा, भावनगर, भिण्डुवा, भिलाई, भिवण्डी, भिवानी, भेऊँरीवा, भोपाल, भीलवाड़ा, भुज, भुना, भुवनेश्वर, भूरेवाला, भेडवन, भेल, भैंसहिया, भोजपुर, मथुरा, मंडी दीप, मधाना, मनकापुर, मनासा, मलाड, मलासिया, महथी, महेसरा, महासमुन्द, महेन्द्रगढ़, महेशाना, महेश्वर, महेन्द्रपुर, मिलकीपुर, मालेगाँव कैम्प, मालेरकोटला, माजिरकांडा, माधोपुर, मानजॉब, मिलना, मुंगेर, मुंडवा, मुंबई, मुकुंदगढ़, मुजफ्फरनगर, मुजफ्फरपुर, मुरादाबाद, मुलताई, मुलुँड, मुस्तफाबाद, मूडी, मेड़तारोड, मेड़तासिटी, मिर्जापुर, मुर्शिदाबाद, मेरठ, मेरठ कैण्ट, मेंहदपुर, मोतीपुर, मोरवण, मोहाली, मौजपुर, मैनपोर, यमुनानगर, यवतमाल, यशोदानगर, रतनगढ़, रतलाम, रन्नौद, रसड़ा, रहली, राँची, राजपुरा, रामनगर, रामपुरा, राजाखेड़ा, राजीवनगर, राऊ, राघौपुर, राजकोट, राजरूपपुर, राजाआहर, राजारामनगर, राजेन्द्रनगर, रानीकटरा, रानीगंज, रामपुर हरी, रामेश्वरकम्पा, रायपुर, रायबरेली, रुड़की, रोहतक, रींवा, लक्ष्मणगढ़, लखनऊ, लखनपुर, लखीमपुर खीरी, लाडनू, लारीन, लालापुर, लुधियाना, लोहासिंहा, बक्सर, वगरेठी, वडोदरा, वरगदवा, वल्लभनगर, विंदकी, विदिशा, विलारा, वसई, वाराकला, वाराणसी, वास, विजयनगर, विंध्यनगर, विराट, विलासपुर, विशाखापट्टनम, विशालनगर, विश्वेश्वरनगर, वीकापुर, वीसलपुर, वोरावली, वैकुंठपुर, वैर, वैशालीनगर, शंकरगढ़, शंकरपुर, श्यामनगरमंडी, शाजापुर, शास्त्रीनगर, शाहपुर (मगरोन), श्रीडूँगरगढ़, शिमला, शिवशक्तिनगर, शाहपुरा, शिवसागर, शिवाजीनगर, शेगाँव, शोभासर, श्रीगंगानगर, संकीर्तन मंडली, (झूलाघाट) संजयनगर, सतना, संघवा, सन्दवा, समस्तीपुर, समाधा, संभलपुर, संभाजीनगर, सरथुआ, सरदमपिंडारा, सरदहरी, सरदारशहर, सरस्वतीनगर, सरकंडा, सरायशेखान, ससना, साँची, साँगली, सांडवा, सादातगंज, सालोर, सारंगगढ़, सासुरे, साहबगंज, सिंधीकैम्प, सिकहुला, सिंगरौली, सिरपुर कागजनगर, सिरसा, सिरोज, सिरहौल, सिरोही, सिवनी, सिलीगुड़ी, सीकर, सीनखेड़ा, सुखसाल, सुखलिया, सुगवाँ, सुजानगढ़, सुन्दरनगर, सुनगाँव, सुफलाँ, सुल्तानपुर, सूदसर, सूरजपुर, सूरत, सूरतगढ़, सेमरामेडौल, सेमराहाट, सेमरी, सेमला, सेंठा, सेहलंग, सैदपुर, सैदही, सोठियाँ, सोनाला, सोनीपत, सोलापुर, स्लम्बर, हसनपुर, हटनी, हनुमागढ़, हनुमाननगर, हरदा, हरदोई, हरसोरा, हरिद्वार, हल्लीखेड़ा (बी), हमीरपुर, हातोद, हाथरस, हाथीदेह, हाबड़ा, हराबाग, हिंगोली, विरखेड़ा, हिसार, हुगली पानगोरे, हैदराबाद, होशंगाबाद।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

आज सारे संसारमें जीवनकी जटिलताएँ बढ़ती जा रही हैं। अधिकतर लोग अपनी असीमित भौतिक आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेमें संलग्न हैं। वे अपने क्षुद्र स्वार्थकी सिद्धिके लिये दूसरोंका अहित करनेमें भी कोई संकोच नहीं करते। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, कलह और हिंसाके वातावरणमें अशान्त स्थिति है। देशके कुछ भागोंमें तो हिंसाका नग्न ताण्डव दिखायी दे रहा है। अधिकतर लोग मानसिक तनावके शिकार बनते जा रहे हैं। कलिका प्रकोप सर्वत्र व्याप्त है। प्रश्न यह होता है कि इस स्थितिका समाधान क्या है? ऋषि-महर्षि, मुनि और शास्त्रोंने इस स्थितिको अपनी अन्तर्दृष्टिसे देखकर बहुत पहलेसे यह घोषित कर दिया है कि 'कलिकालमें मानव-कल्याण और विश्वशान्तिके लिये श्रीहरि-नामके अतिरिक्त कोई दूसरा सुलभ साधन नहीं है।' इसीलिये यह बात जोर देकर शास्त्रोंमें कही गयी है कि 'भगवान् श्रीहरिका नाम ही एकमात्र जीवन है। कलियुगमें इसके अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा—चारा नहीं है'—

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

(ना०पूर्व० ४१।११५)

हमारे शास्त्रोंके अतिरिक्त अनुभवी संत-महात्माओंने भी भगवन्नाम-स्मरण-जपको कलियुगका मुख्य धर्म (ऐहिक-पारलौकिक कल्याणकारी कर्तव्य) माना है। इतना ही नहीं, जगत्के समस्त धर्म-सम्प्रदाय भी किसी-न-किसी रूपमें भगवान्के नाम-स्मरण-जपके महत्त्वको प्रतिपादित करते हैं। नामके जप-स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई भी नियम नहीं है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने भी कहा है—

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।

'हे भगवन्! आपने लोगोंकी विभिन्न रुचि देखकर नित्य-सिद्ध अपने बहुत-से नाम कृपा करके प्रकट कर दिये। प्रत्येक नाममें अपनी सारी शक्ति भर दी और नाम-स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई नियम भी नहीं रखा।'

विपत्तिसे त्राण पानेके लिये आज श्रीभगवन्नामका स्मरण ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कौन-सा विघ्न है, जो भगवन्नाम-स्मरणसे नहीं टल सकता और ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो नहीं मिल सकती? इस कलिकालमें मंगलमय भगवान्के आश्रयके लिये भगवन्नामका सहारा ही एकमात्र अवलम्बन है। अतएव भारतवर्ष एवं समस्त विश्वके कल्याणके लिये, लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक सुख-शान्तिके लिये तथा साधकोंके परम लक्ष्य एवं मानव-जीवनके परम ध्येय—भगवान्की प्राप्तिके लिये सबको भगवन्नामका स्मरण-जप-कीर्तन करना चाहिये।

अतः 'कल्याण' के भाग्यवान् ग्राहक-अनुग्राहक, पाठक-पाठिकाएँ स्वयं तथा अपने इष्ट-मित्रोंसे प्रतिवर्ष भगवन्नाम-जप करते-कराते आये हैं।

गत वर्ष पंचानबे करोड़ नाम-जपकी प्रार्थना की गयी थी। इस वर्ष विभिन्न स्थानोंसे जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं; उनके अनुसार सरसठ करोड़, अस्सी लाख, इक्यानबे हजार, छः सौ मन्त्रके नाम-जप हुए हैं। भगवन्नाम-प्रेमी महानुभावोंसे प्रार्थना है कि जपकी संख्यामें विशेष उत्साह दिखलायें, जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें और वृद्धि हो सके। आशा है, अधिक उत्साहसे नाम-जप होता रहेगा।

जपकर्ताओंकी सूचना अभीतक लगातार आ रही है, किंतु विलम्बसे सूचना आनेपर उसे प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। अतः जपकर्ताओंको जप पूरा होने (चैत्र शुक्ल पूर्णिमा)-के अनन्तर तत्काल सूचना प्रेषित करनी चाहिये, जिससे उनके जपकी संख्या प्रकाशित की जा सके।

आप महानुभावोंसे पुनः इस वर्ष पंचानबे करोड़ भगवन्नाम-मन्त्र-जपकी प्रार्थना की जा रही है। यह नाम-जप अधिक उत्साहसे करना तथा करवाना चाहिये, जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

निवेदन है कि पूर्ववत् कार्तिक शुक्ल पूर्णिमासे जप आरम्भ किया जाय और चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (वि० सं० २०८२)-तक पूरा किया जाय। पूरे पाँच महीनेका समय है।

भगवान्के प्रभावशाली नामका जप स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-शूद्र सभी कर सकते हैं। इसलिये 'कल्याण' के भगवद्विश्वासी पाठक-पाठिकाओंसे हाथ जोड़कर विनयपूर्वक प्रार्थना की जाती है कि वे कृपापूर्वक सबके परम कल्याणकी भावनासे स्वयं अधिक-से-अधिक जप करें और प्रेमके साथ विशेष चेष्टा करके दूसरोंसे भी जप करवायें। नियमादि सदाकी भाँति ही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१) जप प्रारम्भ करनेकी तिथि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा (दिनांक १५।११।२०२४ ई०) शुक्रवार रखी गयी है। इसके बाद किसी भी तिथिसे जप आरम्भ कर सकते हैं, परंतु उसकी पूर्ति चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, वि० सं० २०८२ दिन-शनिवार (दिनांक १२।४।२०२५)-को कर देनी चाहिये। इसके आगे भी अधिक जप किया जाय तो और उत्तम है।

(२) सभी वर्णों, सभी जातियों और सभी आश्रमोंके नर-नारी, बालक-वृद्ध, युवा इस मन्त्रका जप कर सकते हैं।

(३) एक व्यक्तिको प्रतिदिन उपरिनिर्दिष्ट मन्त्रका कम-से-कम १०८ बार (एक माला) जप अवश्य ही करना चाहिये, अधिक तो कितना भी किया जा सकता है।

(४) संख्याकी गिनती किसी भी प्रकारकी मालासे अथवा अंगुलियोंपर या किसी अन्य प्रकारसे भी रखी जा सकती है। तुलसीजीकी माला उत्तम होगी।

(५) यह आवश्यक नहीं है कि अमुक समय आसनपर बैठकर ही जप किया जाय। प्रातःकाल उठनेके समयसे लेकर चलते-फिरते, उठते-बैठते और काम करते हुए सब समय—सोनेके समयतक इस मन्त्रका जप किया जा सकता है।

(६) बीमारी या अन्य किसी कारणवश जप न हो सके और क्रम टूटने लगे तो किसी दूसरे सज्जनसे जप करवा लेना चाहिये। पर यदि ऐसा न हो सके तो बादमें अधिक जप करके उस कमीको पूरा कर लेना चाहिये।

(७) संख्या मन्त्रकी होनी चाहिये, नामकी नहीं; उदाहरणके रूपमें—

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

—सोलह नामके इस मन्त्रकी एक माला प्रतिदिन जपें तो उसके प्रति मन्त्र-जपकी संख्या १०८ होती है, जिसमें भूल-चूकके लिये ८ मन्त्र बाद कर देनेपर गिनतीके लिये एक सौ मन्त्र रह जाते हैं। अतएव जिस दिन जो भाई-बहन मन्त्र-जप आरम्भ करें, उस दिनसे चैत्र शुक्ल पूर्णिमातकके मन्त्रोंका हिसाब इसी क्रमसे जोड़कर हमें अन्तमें सूचित करें। सूचना भेजनेवाले सज्जनोंको जपकी संख्याके साथ अपना नाम-पता, मोबाइल नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

(८) प्रथम सूचना तो मन्त्र-जप प्रारम्भ करनेपर भेजी जाय, जिसमें चैत्र पूर्णिमातक जितनी जप-संख्याका संकल्प किया हो, उसका उल्लेख रहे और दूसरी बार जप आरम्भ करनेकी तिथिसे लेकर चैत्र पूर्णिमातक हुए कुल जपकी संख्या उल्लिखित हो।

(९) प्रथम सूचना प्राप्त होनेपर जपकर्ताको सदस्यता दी जाती है। द्वितीय सूचना भेजते समय सदस्य-संख्या अवश्य लिखनी चाहिये।

(१०) जप करनेवाले सज्जनको सूचना भेजने-भिजवानेमें इस बातका संकोच नहीं करना चाहिये कि जपकी संख्या प्रकट करनेसे उसका प्रभाव नष्ट हो जायगा। स्मरण रहे, ऐसे सामूहिक अनुष्ठान परस्पर उत्साहवृद्धिमें सहायक होकर प्रभावक बनते हैं।

(११) जापक महानुभावोंको प्रतिवर्ष श्रीभगवन्नाम-जपकी सूचना अवश्य दे देनी चाहिये।

(१२) सूचना संस्कृत, हिन्दी, मराठी, मारवाड़ी, गुजराती, बँगला, अंग्रेजी, उर्दूमें भेजी जा सकती है।

सूचना भेजनेका पता—

नामजप-कार्यालय, द्वारा—'कल्याण' सम्पादकीय विभाग, गीताप्रेस, पो०—गीताप्रेस—२७३००५ (गोरखपुर)

प्रार्थी—

प्रेमप्रकाश लक्कड़

सम्पादक—'कल्याण'

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे। घोर भव-नीर-निधि नाम निज नाव रे॥
एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साधि रे। ग्रसे कलि-रोग जोग-संजम-समाधि रे॥
भलो जो है, पोच जो है, दाहिनो जो, बाम रे। राम-नाम ही सों अंत सब ही को काम रे॥
जग नभ-बाटिका रही है फलि फूलि रे। धुवाँ कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे॥
राम-नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे। तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे॥

[विनय-पत्रिका]

श्रीभगवन्नाम-जपके जापक महानुभावोंको अपना नाम-पता (मोबाइल नम्बरसहित) साफ-साफ अक्षरोंमें प्रत्येक वर्ष लिखना चाहिये, जिससे उनके ग्राम/नगरका शुद्ध नाम दिया जा सके। —सम्पादक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृपानुभूति

(१)

हनुमान-चालीसाके पाठका प्रभाव

यह घटना १६ सितम्बर १९७५ ई० की है, तब मैं नगरपालिकाका वित्त चेयरमैन था। नगरके उत्तरी भागमें कुछ साधु एक कच्चे कमरे और झोंपड़ीमें रहते थे। उनके कमरेके साथ ४० फुटका रास्ता था। १३ सितम्बरको उन लोगोंने रास्तेमें दीवाल बनाकर नाजायज कब्जा कर लिया। नगरपालिकाके इंस्पेक्टरने उनसे कहा कि रास्तेपर आप नाजायज कब्जा मत करो, परंतु उन्होंने उस कर्मचारीकी बात नहीं मानी। कर्मचारीने रिपोर्ट मुझे दी और मुझसे नाजायज कब्जा हटानेका आदेश माँगा। मैंने उस जगहपर जाकर देखा तो कर्मचारीकी बात ठीक पायी, तब मैंने उनसे कहा—'ये सरेआम सड़क—पक्का रास्ता है। इसपर कब्जा मत करो, मैं तुम लोगोंको दूसरी तरफ जगह या कोई और स्थान नियमोंके अनुसार एलाट कर दूँगा। रास्तेपर नाजायज कब्जा उचित नहीं है—ऐसा कहकर मैंने नाजायज कब्जा हटानेका आदेश दे दिया और दूसरे दिन कब्जा हटा दिया गया। १६ सितम्बरको साधुओंने और कुछ ग्रामवासियोंने मेरे घरके आगे धरना दिया। शामको जब मैं घर पहुँचा तो देखा मेरे घरके आगे रास्तेपर १०-१२ आदमी टाट बिछाकर बैठे हैं, कार अन्दर करनेके लिये भी रास्ता नहीं छोड़ा था। मैंने कार बैक करके उन्हें हाथ जोड़कर विनती की, मुझे कार अन्दर कर लेने दो, फिर बैठकर बात करता हूँ, परंतु वे नहीं उठे। आखिर मैं कार बैक करके कारको दौड़ाकर अपने दरवाजेकी तरफ ले जाने लगा, तब वे लोग जल्दीसे दूर हट गये। मैंने कार अन्दर करके उनसे पुनः हाथ जोड़कर विनती की, कि आपको अगर धरना देना है तो मेरे कार्यालयमें दो, यहाँसे चले जाओ। परंतु वे न माने। मैंने पुलिसको सूचना दे दी। मगर पुलिस भी धरनेवालोंको न उठा सकी और घरपर पुलिसका पहरा लगा दिया। मैं अपना दैनिक कार्यक्रम सायं-सन्ध्या करके उठा और विचार किया कि मैंने कोई नाजायज काम नहीं किया। वे लोग बिना किसी कारणके मुझे परेशान कर रहे हैं। अब बजरंगबलीकी शरणमें जाता हूँ। फिर मैंने स्नान किया, घरमें मन्दिर बना हुआ था। वहाँ धूप और जोत जगाकर हनुमान-चालीसाका सौ पाठ करनेका संकल्प किया और पच्चीस पाठ हनुमान-चालीसाके कर दिये। दूसरे दिन सुबह मैं उनसे कोई बातचीत किये बिना अपने ऑफिस जाकर अपना काम करने लगा। पुलिस और प्रशासनको नगरपालिकाकी ओरसे लिखित सूचना दे दी। धरनेवालोंसे मैंने कोई बात नहीं की न ही नगरपालिका प्रशासन या पुलिसकी ओरसे ही उनसे कोई बात की गयी। उसी दिन रातको मैंने हनुमान-चालीसाके २५ पाठ किये और अगले दिन अपने कामपर चला गया।

१८ सितम्बरको ११ बजे वे लोग चुपचाप उठकर चले गये। मुझे पहरेदार पुलिसवालोंने आकर सूचना दी कि वे लोग उठकर चले गये हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वहाँ कोई आया था या किसीने उनको उठनेकी बात कही? तो पहरेदारने कहा 'कलसे हम वहीं हैं, वहाँपर कोई भी नहीं आया।' पहरेदारोंने आगे बताया कि वे 'जय हनुमान' कहते हुए उठ खड़े हुए।

मैंने तीसरे और चौथे दिन २५ और ३३ पाठ हनुमान-चालीसाके किये और बजरंगबलीका अत्यन्त आभार किया तथा चूरमेका प्रसाद बाँटा। [श्रीडी०एन० आत्रेयजी]

(२)

हनुमत्कृपा

२५ दिसम्बर २०११, रात्रिके ९:३० बजे; हम अपनी गाड़ीसे अपने निवास काकादेव एम. ब्लॉकसे ओरिएण्टकी तरफ जा रहे थे। गाड़ीमें मेरे अतिरिक्त मेरा लड़का सुमित, जो गाड़ी चला रहा था, मेरा पोता अक्षत, मेरे मित्र और उनका लड़का भी था। स्वभावानुसार मैं और मेरे मित्र भगवच्चर्चामें मग्न थे और बच्चे आपसमें बात करनेमें लीन थे। सब प्रसन्न मन चले जा रहे थे। हम विजयनगर चौराहेसे पनकी रोडकी ओर मुड़ गये। पनकीके पास एक ओवर ब्रिजपर गाड़ी आगे बढ़ी। तभी देखा कि ऊपरसे आ रहे एक ट्रकने दूसरे ट्रकको किनारेसे टक्कर मारी और ऊपरसे आनेवाला ट्रक अनियन्त्रित हो गया। दूरसे देखते ही सुमितने अपनी कार किनारे कर ली, परंतु देखते-ही-देखते ट्रकने हमारी कारके ड्राइवर साइडसे सीधे टक्कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मारी और कारको नीचेकी तरफ धकेलने लगा। अब कार पीछे खिसकने लगी। हमलोग स्थितिकी गम्भीरतासे बेखबर बातोंमें लीन थे। तभी हमारा ध्यान उधर हुआ और मैं चिल्लाया कि देखो, ट्रक-ड्राइवरको क्या हो गया? हमारी गाड़ी पीछे होती जा रही है। अचानक ट्रकका बोनट कारके बोनटसे अलग हुआ और ट्रक कारकी परिक्रमा करता हुआ सीधा नीचे खड्डमें गिर गया। ट्रकपर मौरंग लदी थी। अब हम लोग कारसे बाईं तरफसे ही उतर सके; क्योंकि दायीं ओरके दरवाजे तो जाम हो चुके थे। शीशा चकनाचूर हो चुका था। कारसे उतरकर देखा तो हम सब एकदम अवाक् रह गये। बायीं तरफका पिछला पहिया खड्डकी तरफ लटक रहा था और ट्रकमें ड्राइवर-क्लीनर दोनों गायब थे, जो कि बादमें पता चला कि पहली टक्कर होते ही ट्रकसे कूद गये थे और मौरंग लदा ट्रक पुलकी ढाल होनेसे अपने-आप ही नीचे जा रहा था। हम सबके मुँहसे एक साथ 'बालाजी महाराज पनकीवाले बाबाकी जय' निकला। कार बहुत ज्यादा डैमेज हो चुकी थी और हम सब आश्चर्यचकित थे कि ट्रक और कारके अगले भाग एकदमसे जुड़े हुए थे। ड्राइवर-क्लीनर दोनों ट्रकमें नहीं थे। फिर ट्रकका स्टेयरिंग किसने घुमाकर हम सबकी प्राणरक्षा की। उधरसे जो भी निकलते, सब रुककर देखते और पनकीवाले बाबा बजरंगबली महाराजका चमत्कार देखकर जय-जयकार किये बिना न रहते कि यदि कुछ सेकण्ड ही ट्रक कारको नीचेकी ओर और धकेलता रहता तो कार खड्डमें होती और कारके ऊपर मौरंगसे लदा ट्रक! ऐसेमें कार और सवारियोंकी क्या दशा होती, यह केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। बाबा अपने बच्चोंका स्वयं ध्यान रखते हैं, इसका इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा।

पनकीवाले बाबाकी जय! [श्रीसुभाष खन्नाजी]

(३)

श्रीहनुमान्‌जीका कृपाप्रसाद

महाराष्ट्रके ठाणे जिलेमें अरण्यके मध्य, एकान्तमें मेरी कुटिया है। सन् १९९२ ई० में वहाँ श्रीहनुमान्‌जीके मन्दिरकी स्थापना हो गयी है। उनकी सेवा करना यही मेरा भक्तिभाव है और कोई इच्छा नहीं, न जाने किस भेषमें मिल जायँ भगवान्—यही सोचता रहता हूँ।

एक दिन मन्दिरकी लाइट बिगड़ गयी थी, इसलिये मैं मन्दिरके ऊपर चढ़ गया। श्रावण पूर्णिमाका दिन सायंकाल ७ बजेका समय थोड़ा अँधेरा था, मन्दिरका स्लैब १३ फुट ऊँचा था, ऊपरसे बरसात हो रही थी। मेरा पैर फिसल गया और मैं १३ फुटसे नीचे गिर गया। मैं जहाँ गिरा, वहाँ बड़े-बड़े पत्थर थे, उनके ऊपर गिरनेसे जबरदस्त चोट लग गयी। दाहिने हाथका पंजा उलटा हो गया, दोनों हाथ नाकाम हो गये। छातीमें जोरदार चोट लगी। एकान्त अरण्यमें अकेला रहता था। उस समय यहाँ कोई भी मनुष्य नहीं था। ऐसे समयमें मैंने नीचे गिरते ही देखा एक १३-१४ वर्षका बालक खड़ा है, लाल कपड़ा उसकी कमरमें था, मैं बदहवास हो गया, मेरे लिये बोलनेकी शक्ति नहीं थी। उस बालकने पहले मेरा हाथ खींचा, हाथ सीधा बिठा दिया। पाँवको जहाँ-तहाँ दबा दिया। किसी पेड़का पत्ता लाकर घिस-पीस कर बाँध दिया, फिर मुझे उठाकर मेरे आसनपर बैठा दिया। पूरी रात बीत गयी। यहाँ कोई मनुष्य नहीं था। मेरी उमर उस समय ७३ वर्षकी थी, सबेरे कुछ भक्त लोग आये तो मैं जबरदस्त बीमार था, वही बालक जाते समय बोला 'आप डॉक्टर-वॉक्टर कुछ करना नहीं, आप ७-८ दिनमें ठीक हो जायँगे।' मैंने सोचा वह बालक किसके घरका था, उसका उसी दिनसे आजतक १९ वर्षतक खोज करके देखा, लेकिन उनका रूप और पता प्राप्त नहीं हुआ।

उसके कहनेपर मैंने कोई डॉक्टरी उपचार नहीं किया। ८-१० दिनोंमें ठीक हो गया, लेकिन मेरे लिये एक याद आजतक रही है, मेरा हाथ उलटा हुआ था, वही हाथ उन्होंने पकड़कर जोरसे खींचा और सीधा कर दिया। यह काम उसी समय न होता, तो सूजन हो जाती और तबसे मेरे लिये अपार दुःख भोगना पड़ता, हाथ भी नष्ट हो जाता। लेकिन दयामय प्रभु संकटमें दौड़के आते हैं— यह अनुभव हुआ, उसी समयसे मेरी निष्ठा-विश्वास ऐसा बढ़ गया कि दुनियामें जो कुछ है, उसकी इच्छा करना ही नहीं, एक विषय सबसे श्रेष्ठ कि अन्ततक भक्ति करना। 'यही मेरी खेती, यही मेरी दूकान, दिन-रात कहे राम राम।' जय बजरंगबली! [श्रीपुरुषोत्तमदासजी महाराज]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पढ़ो, समझो और करो

'बहनका मान'

घटना आजसे लगभग ५०वर्ष पहलेकी है, मुझे राज्य सेवामें आये यह पाँचवाँ वर्ष चल रहा था और अभी मैं अपने तीसरे स्थान (गाँव)-में स्थानान्तरित होकर आया ही था।

यह अलग बात है कि जहाँ मैं चिकित्साधिकारी (आयुर्वेद)-के रूपमें पदस्थापित था, वहाँसे जिला मुख्यालय १४-१५ किलोमीटर ही दूर था, किंतु उस समय यातायातके साधन बहुत ही सीमित थे और सर्वसुलभ नहीं थे। आपको यदि कहीं आना-जाना हो तो रात हो या दिन; मैं जहाँ नियुक्त था, वहाँसे सड़क ढाई किमी० दूर थी। गाँवसे मुख्य सड़कतक पैदल जानेके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं था। ध्यान देनेयोग्य बात यह भी थी कि गाँवसे मुख्य सड़कतक एक तंग, ऊबड़-खाबड़, झाड़-झंखाड़युक्त गड्ढोंभरा रास्ता ही था और बीचमें इस रास्तेसे सटी जरायमपेशा लोगोंकी कुछ झोंपड़ीनुमा छोटी-सी बसावट भी थी। एक छोटे बरसाती नालेके साथ-साथ बारहों महीने बहनेवाली नदी भी थी, जिसपर इस किनारेसे उस किनारेतक जानेका पक्का खड़ंजा बना हुआ था। गरमी हो, सर्दी हो या वर्षा; मुख्य सड़कसे गाँवतक पहुँचनेका यही एक मार्ग था।

अवकाश होनेसे उस दिन मैंने प्रातः ९ बजेसे ११ बजेतक चिकित्सा-केन्द्रपर सेवाएँ दीं तथा घर लौटकर भोजन करनेके उपरान्त शीघ्र ही तैयार होकर पत्नी तथा १० माहके बालक (पुत्र)-सहित बहुतसे जरूरी कार्योंकी पूर्तिहेतु दोपहर डेढ़ बजे ही शहर पहुँच गया था। अपने सवा दो वर्षीय बड़े बच्चेको गाँवकी ही एक सहृदया माईके भरोसे छोड़कर और यह बोलकर चले गये कि हम हर हालमें शाम होनेसे पहले गाँव लौट आयेंगे। शहर पहुँचते ही अपने कार्य निबटानेमें जुट गया। वर्षाकाल था, मैं बच्चे एवं उसकी माँ सहित निर्धारित कार्योंको पूरा करने बाजारमें निकल गया। छाता ठीक करवाना था, टॉर्च सुधरवानी थी, अपने तथा पत्नीके लिये बरसाती जूते-चप्पल खरीदने थे, बच्चोंके लिये आवश्यक कपड़े, दाल-चावल, गुड़ इत्यादिके अलावा कुछ जरूरी दवाओंकी खरीद भी करनी थी, परिणामतः बिना विलम्ब किये हम इस दूकानसे उस दूकान, इस बाजारसे उस बाजारतककी भागदौड़ करने लगे। मुझे मालूम ही नहीं हो पाया कि इस बीच समय कब पंख लगाकर उड़ गया? जब कुछ स्थिरचित्त हुआ तो घड़ीपर नजर गयी, शामके पौने सात बज रहे थे उस समय। वर्षा-ऋतुमें तो शामके पाँच बजते-बजते ही वातावरणमें अँधेरा-सा घिरने लगता है। मुझे गाँव पहुँचनेके लिये जो बस मिलनेवाली थी, वह इस मार्गकी आखिरी बस थी और उस बसके छूटनेमें मात्र पन्द्रह-बीस मिनट ही शेष थे।

मैं भागता-दौड़ता बच्चे और उसकी माँ सहित तुरन्त बस स्टैण्डहेतु चल देना चाहता था, किंतु तभी आकाशमें बादल उमड़-घुमड़ आये, बिजलियाँ चमकने लगीं और देखते-ही-देखते वर्षाकी झड़ी लग गयी, मैं जहाँ अभी खड़ा था, वहाँसे बस-अड्डा लगभग एक-डेढ़ किलोमीटरकी दूरीपर था, बच्चे और पत्नीसहित वहाँतक पहुँचना दूभर हो गया, सड़कें पानीसे भर गयीं, फिर साथमें सामानसे भरा झोला, मैं तो किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रह गया,रह-रहकर आखिरी बस छूट जानेकी चिन्ता हम पति-पत्नीको खाये जा रही थी। जैसे-तैसे एक रिक्शावालेको भाई-दादा कहकर उसके मुँहमाँगे दामपर बस-स्टैण्डतक छोड़नेको कहा और अविलम्ब बस-स्टैण्ड पहुँचा। तबतक भी वर्षा उसी गति और सघनताके साथ जारी थी। वहाँ पहुँचते ही बसकी तरफ लपका, किंतु बस नहीं थी, लोगोंसे पूछा तो उत्तर मिला कि बस तो आधा घंटा पहले ही निकल चुकी है। हारे-थके मनसे घड़ीपर नजर उठी, शामके साढ़े सात बज रहे थे, अँधेरा गहराने लगा था, अब क्या किया जाय? मैं और बच्चेको सँभाले पत्नी देरतक चुपचाप खड़े रह गये। रुआँसी-सी पत्नी बोली, 'बिट्टू (बड़ा बच्चा) रो-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोकर परेशान हो रहा होगा?'

'चलो, किसी धर्मशाला या होटलमें शरण लें,' मैंने निर्णायक स्वरमें कहा। तभी पास खड़े एक सज्जन बोल उठे, 'कुछ देर ठहरकर देख लो, शायद कोई ट्रक मिल जाय? आपको जहाँ पहुँचना है, वहाँतक तो कोई ट्रकवाला भी छोड़ देगा।'

बिजलियाँ कड़क रही थीं, अँधेरा बढ़ गया था, वर्षाकी झड़ी अब भी लगी थी। हमारी दुविधा यह थी कि बड़े बच्चेको गाँवमें जिस पड़ोसकी माईके पास छोड़कर हम यहाँ आये थे, उसकी क्या स्थिति हो रही होगी? कुछ भी समझमें नहीं आ रहा था कि इस स्थितिमें हमें क्या करना चाहिये? इसी ऊहापोहमें लगभग एक घंटा और बीत गया। अन्ततः यही सोचकर कि आज तो यहीं ठहरना होगा, मैं बोला, 'यदि कोई साधन (रिक्शा, ताँगा) मिल जाता है, तो मैं देखता हूँ।' पत्नीको आश्वस्त करता हुआ मैं रिक्शेकी तलाशमें आगे बढ़ा, तभी दूर सड़कपर एक वाहनकी रोशनी निकट आती दिखायी दी। वर्षा रुक जानेके इन्तजारमें वहीं देरसे खड़े एक सज्जनने पत्नीसे कहा, 'बाल-बच्चोंके साथ आप लोगोंका ट्रकसे सफर करना ठीक नहीं होगा, बहनजी, फिर आप जानें।' वह सज्जन भी इतना कहनेके साथ ही तेजीके साथ वहाँसे निकल गये।

अभी हम कुछ निर्णय ही नहीं कर पाये थे कि हमें देखकर एक ट्रक एकदम हमारे सामने आ खड़ा हुआ। एक सिर खिड़कीसे बाहर निकला और बोला, 'कहाँ जाना है?' हठात् मेरे मुँहसे भी निकल गया— 'दस-बारह किलोमीटर दूर गाँवके मोड़तक।' पत्नीने हाथके संकेतसे मुझे नहीं जानेहेतु इशारा भी कर दिया था, किंतु तबतक ट्रकका फाटक खोलकर एक आदमी सड़कपर उतर आया था, 'बैठो-बैठो, जल्दी करो।' मैं भी पहले बच्चे और पत्नीको ट्रकमें चढ़ाते हुए उनके साथ ट्रकके केबिनमें चढ़ आया, एक मिनट भी इस सारी कार्यवाहीमें नहीं लगा, वह व्यक्ति भी अन्दर आया, फटाकसे फाटक बन्द हुआ और ट्रक अपनी गतिसे आगे बढ़ चला। अब हम (मैं, पत्नी और बच्चा) ड्राइवर और उस आदमी (जो शायद ट्रकपर खलासी था) दोनोंके बीच सिमट-सिकुड़कर बैठे थे। ट्रक अपनी गतिसे चलता जा रहा था। ट्रकमें चढ़नेके साथ ही हमें यह मालूम हो गया था कि दोनों व्यक्ति (ड्राइवर और खलासी) शराब पीये हुए हैं। पत्नी भयवश मुझसे और ज्यादा दुबककर सट गयी, मैं आसन्न विपत्तिको सोच-समझकर, मन-ही-मन जगदाधार, जगदीश्वर श्रीहरिका स्मरण करने लगा—

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग-
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥

बगलमें सटी बैठी हुई पत्नी, बच्चेको अपने वक्षसे सटाये आँखें बन्दकर निःस्तब्ध बुदबुदा रही थी। कृष्णपक्ष, वर्षाकी निरन्तरता, रात्रिका समय, निर्जन सड़क और सुनसान वातावरण, चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, ट्रककी चलनेकी आवाजके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं, मैं पत्नी और शिशु पुत्रसहित शराबी लोगोंके साथ ट्रकमें था; किंतु इस विकट घड़ीमें भी मेरा यह दृढ़ विश्वास मेरा सम्बल था—

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे॥

मेरे मन-मानसमें निरन्तर परब्रह्म परमेश्वर श्रीहरिका स्मरण चल रहा था।

वे दोनों व्यक्ति (ट्रक-ड्राइवर और खलासी) भी हमारी बेबसी और चिन्तापूर्ण अकुलाहटको ताड़ चुके थे, तभी मेरे मुँहसे यह शब्द फूट पड़े, 'भैयाजी, आप हमें यहीं उतार दें।' इस रातमें ऐसे मौसममें कहाँ जाओगे यहाँ उतरकर? देखते नहीं बच्चा और तुम्हारी पत्नी तुम्हारे साथ हैं, चुपचाप बैठे रहो। ड्राइवर हमपर घुड़कनेके अन्दाजमें गुर्राया।

'ये लोग डर गये हैं उस्ताद, इन्हें यहीं छोड़ दो, अभी इनकी अक्ल ठिकाने आ जायगी।' ठहाका लगाते हुए खलासी बोला।

'बात क्या है? मुझे बताओ' ड्राइवरने मुझसे पूछा, 'इतने परेशान क्यों हो?'

'हम अपने सवा दो वर्षके बच्चेको गाँवमें ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अकेला छोड़ आये थे कि समयपर वापस गाँव पहुँच जायँगे और हालत यह है कि अभी हम कब बच्चेके पास पहुँचेंगे, पता नहीं।' कुछ देरतक केबिनमें गहरा मौन पसर गया। ड्राइवर बोला, 'तुम गाँवमें क्या करते हो?'

'मैं रहनेवाला इस गाँवका नहीं हूँ, मैं तो यहाँ आयुर्वेदिक डॉक्टर हूँ।' ड्राइवर अपने अन्दाजमें देरतक 'हूँ' पर अटका रहा, फिर बोला, 'लोगोंकी सेवा करते हो।' फिर लम्बी चुप्पी।

मैं और पत्नी दोनों ही चुप। मनमें एक बार फिरसे उस परम कृपालु, दयालु ठाकुरकी प्रार्थनापूर्वक गुहार लगने लगी। तबतक वह मोड़ (जहाँ हमें ट्रक छोड़कर कच्चे रास्तेसे २.५ किलोमीटर दूर गाँव पहुँचना था,) आ गया, जहाँ हमें उतरना था। ड्राइवरने पूछा, 'यहीं उतरना है?' मैंने हाँमें गर्दन हिलायी। ट्रककी गति धीमी हुई और अचानक ट्रक गाँवकी दिशामें, पक्की सड़क छोड़कर कच्चे मार्गपर उतर आया। 'बस, बस यहीं ठहरो भाई' मैं जोरसे बोल उठा, 'आगे रास्ता खराब है, बरसात हो रही है, ऊबड़-खाबड़ रास्तेपर गड्ढे भी बहुत हैं, ट्रक रोको।'

ड्राइवर कुछ नहीं बोला, किंतु हिचकोले खाता ट्रक धीरे-धीरे गाँवके कच्चे रास्तेपर बढ़ा चला जा रहा था, अबतक खलासी फाटक खोलकर ट्रकके आगे, ट्रककी रोशनीमें चलता हुआ हाथके इशारेसे 'आने दो उस्ताद, आने दो उस्ताद' कहता आगे-आगे बढ़ रहा था।

पहली बार पत्नीका स्वर सुनायी दिया, 'भाईजी, आपकी बड़ी कृपा हुई है कि हमें यहाँतक सकुशल ले आये, आप ये किराया लीजिये और बस, हमें यहीं छोड़ दीजिये, हम चले जायँगे।'

ट्रक बराबर कच्चे रास्तेपर धीरे-धीरे बढ़ा चला जा रहा था। खलासी वापस ट्रकमें बैठ गया था। हमलोग इस समयतक भी संकोच और डरसे सिमटे उन दोनोंके बीच ठिठके बैठे थे। वर्षा कम हो गयी थी। जरायमपेशा लोगोंकी बस्तीके सामने ४-५ लोग एक पेड़के नीचे हुल्लड़ मचाते हुए शराब पी रहे थे, शराबकी बोतलें सँभाले दो-तीन लोग फाटककी ओर बढ़ आये और दरवाजा खोलनेहेतु हाथ हिलाने लगे।

एक क्षणकी देरी किये बिना ड्राइवरने ट्रकको बीच रास्तेमें खड़ाकर अपनी सीटके पीछे रखी लोहेकी मजबूत रॉडको उठाकर, फाटक खोलते हुए हुंकार भरी, 'जिसको अपनी जान प्यारी न हो, वह ट्रकको हाथ लगाये, मैं इस बहनको गाँवतक छोड़कर वापस लौट रहा हूँ, फिर तुमको देखता हूँ, हट जाओ सामनेसे।' ट्रक ड्राइवरकी इस ललकारसे वे लोग ट्रकको छोड़कर दूर जा खड़े हुए, ट्रक फिरसे आगे बढ़ चला, नदीके उस किनारे गाँवकी टिमटिमाती रोशनी दिखायी दे रही थी, हमे वहाँ नीचे उतारकर ट्रक-ड्राइवरने पत्नीके सामने हाथ जोड़कर जो कहा, उसे सुनकर हम हतप्रभ रह गये! 'बहनजी, आपने मुझे भाई बोला है, तो मेरा भी फर्ज बनता है कि ऐसे समयमें बहनको उसके ठौर-ठिकानेतक सलामतीके साथ छोड़कर ही आगे बढ़ूँ। हाँ, आगेसे ऐसी नादानी मत करना बहन, ट्रक-ड्राइवर तो यूँ भी जमानेभरमें बदनाम हैं।' कहता हुआ गाड़ीमें बैठा, ट्रकको पीछे लिया, मोड़ा और उसी राहसे वापस लौट गया। पत्नीकी आँखोंसे अपने हाथमें अपने ड्राइवर भाईको किरायेके रूपमें देनेहेतु दस-दस रुपयोंके दो नोटोंपर टपाटप आँसुओंकी वर्षा हो रही थी।

आँखें तो मेरी भी सजल हो उठी थीं, परब्रह्म श्रीहरिकी अहैतुकी कृपा-अनुकम्पापर। वन्दनाकी मुद्रामें मैं पत्नीसहित नदीके उस नीरव तटपर अपने सामानकी गठरीको सँभालते भूयशः प्रणाम कर रहा था।'

'अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे।'

प्रभु! तुम कितने रूप धरकर अवतरित हो जाते हो, हम-जैसे आर्तजनोंके विपत्तिनिवारणार्थ।

वस्तुतः आजके समयमें नारियोंके प्रति अत्याचार, यौन-शोषण और हिंसाकी जो घटनाएँ घट रहीं हैं, ऐसेमें एक ट्रक-ड्राइवरका इस प्रकारका व्यवहार समाजके लिये प्रकाश-स्तम्भकी तरह है। दूसरोंकी बहन-बेटियोंको अपनी बहन-बेटी मानकर उनकी वैसी ही सहायता करना, आजकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऐसी घटनाएँ तपती मरुभूमिमें उद्यानकी शीतल छाया देने-जैसी हैं। यदि इस सोचके व्यक्तियोंकी संख्या बढ़ जाय तो यह धरती कितनी सुन्दर हो जाय!

[डॉ० श्रीकमलाकान्तजी शर्मा 'कमल']

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनन करने योग्य

हमें मृत्युका भय नहीं है

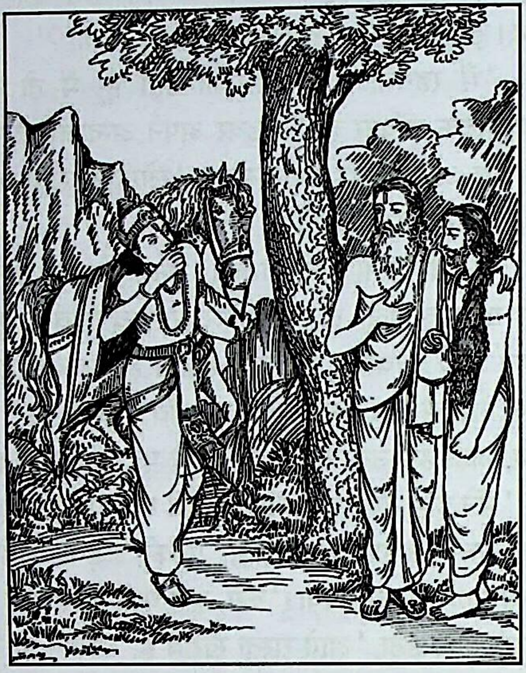

हैहय क्षत्रियोंके वंशमें एक परपुरंजय नामक राजकुमार हो गये हैं। एक बार वे वनमें आखेटके लिये गये। वृक्षोंकी आड़से उन्होंने दूरपर एक मृगका कुछ शरीर देखा और बाण छोड़ दिया। पास जानेपर उन्हें पता लगा कि मृगके धोखेमें उन्होंने मृगचर्म ओढ़े एक मुनिको मार डाला है। इस ब्रह्महत्याके कारण उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ। दुःखित होकर वे अपने नगरमें लौट आये और अपने नरेशसे सब बातें उन्होंने सच-सच कह दीं। हैहय-नरेश राजकुमारके साथ वनमें गये और वहाँ एक युवक मुनिको मरा हुआ देखकर बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने यह पता लगानेका प्रयत्न किया कि वे मुनि किसके पुत्र या शिष्य हैं।

ढूँढ़ते हुए हैहय-नरेश वनमें महर्षि अरिष्टनेमाके आश्रमपर पहुँचे। ऋषिको प्रणाम करके वे चुपचाप खड़े हो गये। जब ऋषि उनका सत्कार करने लगे, तब नरेशने कहा—'हमारे द्वारा ब्रह्महत्या हुई है, अतः हम आपसे सत्कार पानेयोग्य नहीं हैं।'

ऋषि अरिष्टनेमाने पूछा—'आपलोगोंने किस प्रकार ब्रह्महत्या की? उस मृत ब्राह्मणका शरीर कहाँ है?'

नरेशने ब्रह्महत्याकी घटना सुनायी और मृत ब्राह्मणका शरीर जहाँ छोड़ा था, वहाँ उसे लेने गये; किंतु उन्हें वहाँ शव मिला नहीं। अपनी असावधानीके लिये उन्हें और भी ग्लानि हुई।

उन दोनोंको अत्यन्त दुःखित एवं लज्जित देखकर ऋषिने अपनी कुटियासे बाहर अपने पुत्रको बुलाया और बोले—'तुमने जिसे मार डाला था, वह यही ब्राह्मण है। यह तपस्वी मेरा ही पुत्र है।'

नरेश आश्चर्यमें पड़ गये। उन्होंने पूछा—'भगवन्! यह क्या बात है? ये महात्मा फिर कैसे जीवित हो गये? यह आपके तपका प्रभाव है या इनमें ही कोई अद्भुत शक्ति है?' ऋषिने बताया—'राजन्! मृत्यु हमारा स्पर्श भी नहीं कर सकती। हम सदा सत्यका पालन करते हैं, मिथ्याकी ओर हमारा मन भूलकर भी नहीं जाता। हम सर्वदा अपने धर्मके अनुसार ही आचरण करते हैं, अतः मृत्युसे हमें कोई भय नहीं है। हम विद्वानों तथा ब्राह्मणोंके गुण ही प्रकट करते हैं, उनके अवगुणपर दृष्टि नहीं डालते; अतः मृत्युसे हमें डर नहीं है। हम भोजनकी सामग्रीसे यथाशक्ति पूरा अतिथि-सत्कार करते हैं और जिनके भरण-पोषणका भार हमपर है, उन्हें तृप्त करके ही अन्तमें भोजन करते हैं; इसीसे मृत्यु हमपर अपना बल नहीं दिखा सकती। हम शान्त, जितेन्द्रिय और क्षमाशील हैं। हम तीर्थयात्रा और दान करते हैं तथा पवित्र देशमें रहते हैं; इसलिये हमें मृत्युका भय नहीं है। हम सदा तेजस्वी सत्पुरुषोंका ही संग करते हैं, इसलिये हमें मृत्युका खटका नहीं है।'

इतना बताकर ऋषिने नरेशको आश्वासन देकर विदा किया। [महाभारत, वनपर्व अ० १८४]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गीताप्रेससे प्रकाशित — पंचदेवोपासनाके महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू० ₹
	भगवान् श्रीगणपति		1954	शिव-स्मरण	15	229	श्रीनारायणकवच	5
657	श्रीगणेश-अङ्क	250	563	शिवमहिम्नःस्तोत्र	8	1367	श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा	20
2024	श्रीगणेशस्तोत्ररत्नाकर	50	228	शिवचालीसा			**महाशक्ति भगवती**	
	भगवान् शिव			(लघु आकारमें भी)	5	1897	श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-	
2223	श्रीशिवमहापुराण-			**भगवान् विष्णु**		1898	सटीक दो खण्डोंमें सेट	600
2224	सटीक दो खण्डोंमें सेट	800	48	श्रीविष्णुपुराण (सटीक)	200	1133	सं० देवीभागवत	350
1468	सं० शिवपुराण (विशिष्ट सं०)	350	1364	श्रीविष्णुपुराण		41	शक्ति-अङ्क	300
789	सं० शिवपुराण	300		(केवल हिन्दी)	150	1774	श्रीदेवीस्तोत्ररत्नाकर	50
1985	लिंगमहापुराण-सटीक	300	819	श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्		2003	शक्तिपीठदर्शन	25
2020	शिवमहापुराणमूलमात्रम्	350		(शांकरभाष्य)	50		**भगवान् सूर्य**	
1417	शिवस्तोत्ररत्नाकर	50	1801	,, (हिन्दी-अनुवादसहित)	15	791	सूर्याङ्क	200
1427	रुद्राष्टाध्यायी (सानुवाद)	45	225	गजेन्द्रमोक्ष	5	211	आदित्यहृदयस्तोत्र	5

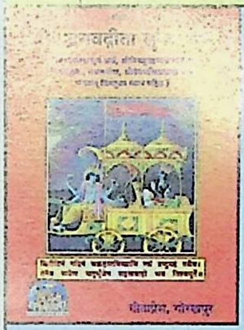

नवीन प्रकाशन — अब उपलब्ध

श्रीमद्भगवद्गीता सुगम पाठ (कोड 2340), सजिल्द, पुस्तकाकार

मूल श्लोक एवं अर्थ, विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्, नित्यस्तुति, गजलगीता तथा श्रीप्रेम-भक्ति-प्रकाशसहित

विश्व-साहित्यमें भगवद्गीताका अद्वितीय स्थान है। गीताजीका सही उच्चारण सीखनेवाले सामान्य पाठकोंकी सुविधाके लिये प्रत्येक चरणोंको अलग-अलग, विभिन्न रंगोंमें छापा गया है, जिससे पाठकोंको प्रत्येक चरणको समझनेमें सहायता मिलेगी। इस सुगम गीताका अर्थ (टीका) परम श्रद्धेय श्रीजयदयाल गोयन्दकाकी गीता-तत्त्व-विवेचनीके अनुसार है। मूल्य ₹70, डाकखर्च ₹50,

गीताप्रेससे प्रकाशित गो-साहित्य

[9 नवम्बर (दिन—शनिवार) को गोपाष्टमीव्रत है।]

गो-अङ्क (कोड 1773)—इस विशेषाङ्कमें सुप्रसिद्ध संत-महात्माओं एवं विद्वानोंके द्वारा प्रस्तुत गायकी महत्ता एवं उपयोगितापर उत्कृष्ट लेखोंके साथ-साथ गायके आर्थिक, वैज्ञानिक एवं धार्मिक महत्त्व तथा गोपालन एवं संरक्षणकी विधियोंका सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। मूल्य ₹ 280

गोसेवा-अङ्क (कोड 653)—इस विशेषाङ्कमें गौसे सम्बन्धित अनेक आध्यात्मिक और तात्त्विक निबन्धोंके साथ गौका विश्वरूप, गोसेवाका स्वरूप, गोपालन एवं गोसंवर्धनकी मुख्य विधाएँ तथा गोदान आदि उपयोगी विषयोंका संग्रह हुआ है। मूल्य ₹ 180

गोसेवाके चमत्कार (कोड 651)—गायोंकी महिमा अपार है। प्राचीनसे लेकर अर्वाचीन साहित्यतक गो-महिमासे भरे पड़े हैं। मूल्य ₹ 25 **(कोड 365)** तमिलमें भी उपलब्ध।

किसान और गाय (कोड 821)—प्रस्तुत पुस्तक स्वामी रामसुखदासजीद्वारा किसानोंके लिये व्यावहारिक शिक्षा और गोपालनकी महत्ताका एक सुन्दर विवेचन है। मूल्य ₹ 7 **(कोड 1547)** तेलुगुमें भी उपलब्ध।

गोरक्षा एवं गोसंवर्धन (कोड 1922)—प्रस्तुत पुस्तक श्रीराजेन्द्रदासजी महाराजद्वारा गोरक्षा एवं गोसंवर्धनके शास्त्रीय आलोकमें विलक्षण व्याख्या की गयी है। मूल्य ₹10

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्र० ति० 20-09-2024
रजि० समाचारपत्र—रजि०नं० 2308/57 पंजीकृत संख्या—NP/GR-13/2023-2025
LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT | LICENCE No. WPP/GR-03/2023-2025

श्रीमद्भागवतमहापुराण—अब उपलब्ध

श्रीमद्भागवतमहापुराण—बेड़िया, सटीक, सजिल्द, मोटा टाइप—श्रीमद्भागवत-महापुराण सटीकको पत्राकारकी तरह बेड़िया ग्रन्थाकार, मोटा टाइपमें प्रकाशित किया गया है, जिससे भागवतका पाठ करनेवालोंको सुविधा होगी एवं व्यास-पीठपर भी इसको प्रतिस्थापित किया जा सकता है। **(कोड 1951-1952)** दो खण्डोंमें सेट। दोनों खण्डोंका मूल्य ₹ 1200, डाकखर्च ₹ 180 अतिरिक्त।

गीता-दैनन्दिनी—गीता-प्रचारका एक साधन

(प्रकाशनका मुख्य उद्देश्य—नित्य गीता-पाठ एवं मनन करनेकी प्रेरणा देना।)

व्यापारिक संस्थान दीपावली/नववर्षमें इसे उपहारस्वरूप वितरित कर गीता-प्रचारमें सहयोग दे सकते हैं।

गीता-दैनन्दिनी (सन् 2025) अब उपलब्ध—मँगवानेमें शीघ्रता करें।

पूर्वकी भाँति सभी संस्करणोंमें सुन्दर बाइंडिंग तथा सम्पूर्ण गीताका मूल-पाठ, बहुरंगे उपासनायोग्य चित्र, प्रार्थना, कल्याणकारी लेख, वर्षभरके व्रत-त्योहार, विवाह-मुहूर्त, तिथि, वार, संक्षिप्त पञ्चाङ्ग, रूलदार पृष्ठ आदि।

पुस्तकाकार—विशिष्ट संस्करण (कोड 2278)—दैनिक पाठके लिये गीता-मूल, हिन्दी-अनुवाद मूल्य ₹ 125

पॉकेट साइज— **सजिल्द (कोड 2279)**— गीता-मूल श्लोक मूल्य ₹ 50

गीताप्रेससे प्रकाशित—भक्त-चरित

श्रीभक्तमाल (कोड 2066) ग्रन्थाकार—भक्तमाल परमभागवत श्रीनाभादासजी महाराजकी काव्यमयी रचना है। इसमें चारों युगों, विशेषकर कलियुगके भक्तोंका बड़े ही रोचक ढंगसे वर्णन हुआ है। सन् 2013 ई० में कल्याणके विशेषांकके रूपमें भक्तमाल-अंकका प्रकाशन हुआ। विशेषांककी पृष्ठ-संख्या सीमित होनेके कारण उसमें भक्तोंकी कथाको अत्यन्त संक्षेपमें ही देना पड़ा। अब भगवत्कृपासे यथासम्भव विस्तृत व्याख्याके साथ भक्तमालको ग्रन्थरूपमें पाठकोंके समक्ष प्रस्तुत किया गया है। मूल्य ₹300

चैतन्य-चरितावली (कोड 123) ग्रन्थाकार—परम संत श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीद्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ श्रीचैतन्यदेवके सम्पूर्ण जीवन-चरित्रकी सुन्दर वाङ्मयी परिक्रमा है। इसमें महाप्रभुकी लीलाएँ, अधमोंके उद्धारकी घटनाएँ, श्रीचैतन्यमें विभिन्न भगवद्भावोंका आवेश, यवनोंको भी पावन करनेकी कथा, श्रीवास, पुण्डरीक, हरिदास आदि भक्तोंके चरित्र, श्रीरघुनाथका गृह-त्याग आदि अलौकिक प्रेमपूर्ण घटनाओंका वर्णन है। मूल्य ₹280 (कोड 1662) बँगलामें भी।

गीताप्रेस, गोरखपुर—273005

✆ +91-9235400242 / 244 WhatsApp +91-9235400242

e-mail : booksales@gitapress.org—थोक पुस्तकोंसे सम्बन्धित सन्देश भेजें।
website : www.gitapress.org/gitapressbookshop.in—सूची-पत्र तथा पुस्तकोंका विवरण पढ़ें एवं गीताप्रेसकी खुदरा पुस्तकें Online डाकसे/कूरियरसे मँगवायें।

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

gitapress_since1923 gitapress_since1923 @GitaPress @gitapress1923